राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत युवा जागरण का अग्रदूत   RNI no. UPHIN45193/24/1/2014

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

जय विजय
मासिक

वेबसाइट : www.jayvijay.co, www.jayvijay.co.in, ई-मेल : jayvijaymail@gmail.com

वर्ष-२, अंक-२   लखनऊ   नवम्बर २०१५   विक्रमी सं. २०७२   युगाब्द ५११७   पृष्ठ-२४   रु. १०

छोटी नौकरियों के लिए नहीं देना होगा इंटरव्यू : प्रधानमंत्री मोदी

नई दिल्ली। अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने छोटी नौकरियों के लिए इंटरव्यू खत्म करने की घोषणा की है. केंद्र सरकार के ग्रुप बी, सी और डी की नौकरियों में यह अनिवार्यता खत्म की गई है. यह निर्णय १ जनवरी २०१६ से लागू होगा.

उन्होंने कहा कि मौजूदा भर्ती प्रक्रियाओं पर इसका असर नहीं पड़ेगा. मोदी ने कहा, 'मैंने १५ अगस्त को लाल किले से यह कहा था कि कुछ जगहें हैं जहां भ्रष्टाचार घर कर गया है. गरीब व्यक्ति जब छोटी छोटी नौकरी के लिए जाता है तब योग्यता होते हुए भी किसी की सिफारिश के लिए पता नहीं उसे क्या-क्या कष्ट झेलने पड़ते हैं और दलालों की टोली किस तरह से

उनसे रुपये हड़प लेती है. नौकरी मिले तो भी रुपये जाते हैं, नौकरी न मिले तो भी रुपये जाते हैं.

सारी खबरें हम सुनते थे और उसी में से मेरे मन में एक विचार आया था कि छोटी-छोटी नौकरियों के लिए साक्षात्कार की क्या जरूरत है.' उन्होंने कहा कि मैंने तो कभी सुना नहीं है कि दुनिया में कोई ऐसा मनोवैज्ञानिक है जो एक मिनट, दो मिनट के साक्षात्कार में किसी व्यक्ति को पूरी तरह जांच लेता है. इसी विचार से मैंने घोषणा की थी कि क्यों न हम ये छोटी नौकरियों में साक्षात्कार की परम्परा खत्म करें.

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार २५ अक्तूबर को १३वीं बार अपने मासिक कार्यक्रम में देश की जनता से रेडियो पर 'मन की बात' की. इसमें उन्होंने कई अहम घोषणायें कीं। ■

परेशान चीन का 'एक बच्चा नीति' बंद करने का निर्णय

बीजिंग। चीन ने अपनी कई साल पुरानी 'एक बच्चा नीति' को बंद करने का निर्णय लिया है। चीन की सरकारी न्यूज एजेंसी शिन्हुआ ने कम्युनिस्ट पार्टी के स्टेटमेंट के हवाले से यह जानकारी दी है। स्टेटमेंट के अनुसार, चीनी दंपतियों को अब दो बच्चों को जन्म देने की स्वीकृति दे दी गई है। चीन सरकार के इस निर्णय का कारण वहां बूढ़े लोगों की बढ़ती आबादी है। यद्यपि दम्पति दूसरा बच्चा कब जन्म दे सकेंगे, इसके लिए अभी कोई समयसीमा निर्धारित नहीं है।

संयुक्त राष्ट्र की हालिया रिपोर्ट के मुताबिक, चीन दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश है। अभी यहां की आबादी १.३७ अरब से ज्यादा है। वहीं, अन्य विकासशील देशों की तुलना में चीन की आबादी तेजी से बूढ़ी हो रही है। रिपोर्ट के अनुसार, २०५० तक चीन की लगभग ४४ करोड़ आबादी ६० की उम्र में होगी।

वहीं, जापान में बुजुर्गों की संख्या रिकार्ड स्तर पर है। अभी यहां की आबादी लगभग १२.७ करोड़ है। यहां ६५ या अधिक उम्र के लोगों की संख्या ३.३८ करोड़ (कुल आबादी का २६.७ प्रतिशत) पर पहुंच गई है। बुजुर्गों की आबादी में १,४६२ पुरुष और १,९२१ महिलाएं हैं। वहीं, ८० वर्ष या उससे ज्यादा उम्र के लोगों की संख्या भी १.००२ करोड़ हो गई है। ■

पांच साल में खाली हो सकता है सऊदी अरब का खजाना

दुबई। दुनिया के सर्वाधिक धनी देशों में गिने जाने वाले सऊदी अरब का खजाना आने वाले पांच सालों में खाली हो सकता है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के अनुसार, तेल के दाम गिरना अगर ऐसे ही जारी रहा और सरकार अपनी मौजूदा आर्थिक नीति से ही चिपकी रही, तो सऊदी अरब की आर्थिक संपदा जल्द ही समाप्त हो सकती है। आईएमएफ ने सऊदी अरब सरकार को बजट घाटे को नियंत्रित करने की सलाह दी है।

इस रिपोर्ट के अनुसार, यही हाल छह सदस्यीय खाड़ी सहयोग परिषद (जीसीसी) में शामिल ओमान और बहरीन का भी है। हालांकि कुवैत, कतर और यूएई जैसे देशों की हालत सऊदी अरब के मुकाबले बहुत बेहतर है, जो तेल की घटती कीमतों के बावजूद अगले २० वर्षों तक अपनी मजबूत आर्थिक स्थिति को बनाये रख सकते हैं। (शेष पृष्ठ २ पर)

भारतीय परिधानों में सजे अफ्रीकी राष्ट्राध्यक्ष

नई दिल्ली। भारत-अफ्रीका फोरम के चार दिवसीय सम्मेलन के दूसरे दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत-अफ्रीका सम्मेलन में आए अफ्रीकी देशों के प्रमुखों के सम्मान में रात्रि भोज दिया. इस भोज में लगभग सभी

अफ्रीकी देशों के राष्ट्राध्यक्ष पीएम मोदी की तरह ही भारतीय परिधान कुर्ते जैकेट और पगड़ी पहनकर सम्मिलित हुए। यहां तक कि उनकी पत्नियों ने भी भारतीय महिलाओं की तरह साड़ी पहनकर और श्रृंगार करके इस भोज में भाग लिया।

इस सम्मेलन में ५४ अफ्रीकी देशों के राष्ट्रप्रमुखों और प्रतिनिधियों ने भाग लिया। ■

कॉल ड्रॉप पर हर्जाने का नियम लागू होगा : ट्राई

नई दिल्ली। दूरसंचार नियामक ट्राई ने संचार कंपनियों के दबाव को नकारते हुए कहा है कि कॉल ड्रॉप पर ग्राहक को हर्जाना देने का घोषित नियम लागू होगा और उसने मोबाइल सेवा कंपनियों से हर्जाना देने की प्रणाली पहली जनवरी तक तैयार रखने को कहा है। साथ ही उसने दूरसंचार कंपनियों द्वारा उठाए गए मुद्दों पर गौर करने की भी बात कही है।

भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (ट्राई) के चेयरमैन आरएस शर्मा ने गुरुवार को संवाददाताओं से कहा- 'मैंने यह बहुत साफ कर दिया है। यह वैध नियमन है। सक्षम प्राधिकार द्वारा न तो इसे पलटा गया है, न ही संशोधित किया गया है या रद्द किया गया है। कंपनियों को इसे क्रियान्वित करने के लिए खुद को तैयार करने को लेकर निश्चित रूप से कदम उठाना चाहिए।'

दिशानिर्देश के अनुसार दूरसंचार कंपनियों को उनके नेटवर्क में समस्या से हरेक कॉल ड्राप के लिए एक रुपए का हर्जाना ग्राहकों को देना होगा। यह हर्जाना अधिकतम तीन रुपया प्रतिदिन प्रति ग्राहक होगा।

दूरसंचार कंपनियों ने इस प्रकार के नियम बनाने को लेकर ट्राई के अधिकार क्षेत्र और इसके क्रियान्वयन में तकनीकी व्यवहारिकता को लेकर सवाल उठाए हैं। शर्मा ने कहा- 'ऐसा माहौल बनाया जा रहा है कि प्राधिकरण ने तकनीकी व्यवहार्यता पर विचार किए बिना इस नियम को लागू कर दिया। नियमन जारी करने से पहले प्राधिकरण ने तकनीकी व्यवहार्यता समेत मामले से संबद्ध सभी पहलुओं पर गौर किया।' ■

आईएस ने मार गिराया रूसी विमान, २२४ मरे

काहिरा। मिस्र के शर्म-अल-शेख से रूस के सेंट पीट्सबर्ग के लिए ३१ अक्टूबर की सुबह उड़ा एयरबस ए ३२१ विमान सिनाई प्रायद्वीप (मिस्र) में क्रैश हो गया। विमान में १७ बच्चों सहित २२४ लोग सवार थे। सभी यात्री मारे गए। इस्लामिक स्टेट (आईएस) से संबद्ध मिस्र के एक आतंकवादी समूह ने ट्विटर पर बयान जारी कर इस विमान को मार गिराने का दावा किया है।

आईएस की आधिकारिक कही जाने वाली न्यूज एजेंसी आमक ने भी रूसी विमान को मार गिराने की जिम्मेदारी ली है। आईएस ने इसे सीरिया में रूस के हवाई हमले में हुई सैकड़ों मुस्लिमों की मौतों का बदला बताया है। मालूम हो कि सिनाई में आईएस को समर्थन देने वाले आतंकियों की बहुलता है। हालांकि आईएस के इस दावे की पुतिन सरकार की ओर से तत्काल कोई पुष्टि नहीं की गई है।

आईएस ने ट्विटर पर जारी बयान में कहा है, 'आईएस के लड़ाके सिनाई प्रांत में रूसी विमान को गिराने में सफल रहे हैं। इस विमान में २२० रूसी सवार थे। शुक्र है कि सब के सब मारे गए।' हालांकि बयान में यह नहीं बताया कि विमान को कैसे गिराया गया। वहीं, रूस के परिवहन मंत्री मैक्सिम सोकोलोव ने कथित तौर पर आतंकियों की ओर से विमान गिराए जाने की खबर को सही नहीं ठहराया है। उन्होंने कहा कि यह सूचना अपुष्ट है। मिस्र के सुरक्षा अधिकारियों के मुताबिक सिनाई के पहाड़ी इलाके हसाना में दुर्घटनाग्रस्त विमान के मलबे से १२० से अधिक शव निकाले जा चुके हैं जिनमें से ज्यादातर जले हुए हैं। ■

'विकल्प' देगा रेल में पक्का आरक्षण

नई दिल्ली। रेलवे ने रविवार से एक नई योजना 'विकल्प' शुरू करने की घोषणा की है जिसके अन्तर्गत प्रतीक्षा सूची के यात्रियों को अगली ही वैकल्पिक ट्रेन में आरक्षण की सुविधा मिल जाएगी, यदि उन्होंने ऑनलाइन टिकट बुक कराया है।

'विकल्प' एक वैकल्पिक रेल आरक्षण योजना है जो दिल्ली-लखनऊ और दिल्ली-जम्मू रूटों पर चलने वाली ट्रेनों में एक नवंबर से शुरू हो रही है। पहले यह योजना छह महीने के लिए इंटरनेट के जरिये बुक कराए गए टिकट पर ही उपलब्ध्ध थी। रेल मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि नई योजना दो चुनिंदा रूटों की सीमित मेल और एक्सप्रेस गाड़ियों के लिए लागू रहेंगी। बाद में यह योजना अन्य गाड़ियों और रूटों पर लागू की जाएगी। ■

(पृष्ठ १८ का शेष)

लेख : बदल रहे हैं विवाह के मायने

लोगों को इसकी सूचना देता है। विवाह में अब स्पेस, प्राइवेसी, सहूलियत जैसे शब्द घर करते जा रहे हैं। विवाह आज आपसी अंडरस्टैंडिंग पर टिका हुआ है, जैसे ही कुछ मन-मुताबिक नहीं हुआ, अलगाव के रास्ते खुले हैं। परिवार और समाज अब दोनों ही शादी के लिए कोई मायने नहीं रखता, बस पति-पत्नी ही साथ रहें वो भी इस शर्त पर कि दोनों में से कोई एक-दूसरे की स्वतंत्रता के आड़े नहीं आयेगा। यहाँ पति-पत्नी की सोच इतनी प्रैक्टिकल हो जाती है कि भावनाओं की कोई जगह ही नहीं बची।

अब विवाह के पूरे मायने ही बदल गए हैं, जहाँ पहले दो बेहतर इन्सान और परिवार एक बेहतर रिश्ते के जरिए बेहतर जिन्दगी की कल्पना को ही विवाह की सार्थकता मानते थे, अपने साथी के सुख-दुःख में अपना सुख-दुःख तलाशते थे, वहीं अब सब कुछ बदल गया है या यूँ कहें की उसका स्वरूप ही अलग हो गया है। आज लोग पैसे और स्टेटस में सुख खोजने लगे हैं और इसकी खातिर वे किसी भी चुनौतियों को स्वीकारने में पीछे नहीं हटते। आज सहनशीलता और त्याग जैसे शब्दों को बेवकूफी समझा जाने लगा है, जिसकी वजह से आय दिन रिश्ते टूट रहे हैं। तलाक के ट्रेंड में जो आज सबसे बड़ा बदलाव आया है वो यह है कि अब महिलाएं ज्यादा केस फाइल करती हैं, जो पहले न के बराबर था। हालाँकि इस बदलाव से जागरूकता तो जरूर बढ़ी, पर इन्हीं कानूनों का अब दुरुपयोग भी काफी बढ़ गया।

अब जैसे ही परिवार का कोई सदस्य उन्हें टोकता है या पसंद नहीं आता, तो उन्हें दहेज विरोधी कानून में फंसाने की धमकी दी जाती है। पति की भी कमोबेश वही स्थिति है वह भी हमेशा डरा-डरा रहता है। इसका नतीजा यह होता है कि जिस खुशी को वह पत्नी से पाना चाहता है अगर वह नहीं मिलती है तो वह दूसरी जगह अपने सुख को तलाशता है। आज जरूरत है शादी जैसे विषय पर गंभीरता से सोचने का एवं इस रस्म को सम्मान की नजरिये से देखने की, तभी कुछ बदलाव संभव होगा, नहीं तो नित शादियाँ टूटती रहेंगी और परिवार तथा बच्चे इसका भुगतान करते रहेंगे। ■

(पृष्ठ १ का शेष)

सऊदी अरब खजाना

आईएमएफ के मध्य पूर्व निदेशक मसूद अहमद ने दुबई में रिपोर्ट जारी करते हुए बताया, 'क्षेत्र के तेल निर्यातकों के लिए, गिरती कीमतों से राजस्व का नुकसान हो रहा है, जो कि अकेले इस साल ही करीब ३६० अरब डालर के करीब रहा है।'

सऊदी अरब ने स्थिति को समझते हुए खर्चों में कटौती की योजना बनानी शुरू कर दी है ताकि भविष्य के लिए सार्वजनिक संपदा को सहेज कर रखा सके। सऊदी अधिकारी बार-बार यह कहते रहे हैं कि तेल की कीमतों में लगातार गिरावट के बावजूद सऊदी अरब किसी भी संकट का सामना करने के लिए तैयार है। जैसा कि वह पहले भी कई बार मुश्किल परिस्थितियों का सामना कर चुका है। लेकिन आईएमएफ के अनुसार तेल आपूर्तिकर्ता देशों के पास पांच साल बाद संपदा का अभाव हो जाएगा, क्योंकि वित्तीय घाटा लगातार बढ़ता जा रहा है। ■

सुभाषित

सर्पदुर्जनयोर्मध्ये वरं सर्प न दुर्जनः।
सर्पो दशति कालेन दुर्जनस्तु पदे-पदे।। (चाणक्य नीति)

अर्थ- दुष्ट व्यक्ति और सर्प की तुलना की जाये तो दुष्ट व्यक्ति की अपेक्षा सांप को ही अच्छा मानना होगा क्योंकि सांप तो समय आने पर ही काटता है पर दुर्जन तो प्रत्येक पग पर हानि पहुंचाता है।

पद्यार्थ- तुलना खल की करना न कभी, इसकी समता न कहीं मिलती।
अति नाग भयंकर हो जग में, उससे क्षमता कम ही फलती।
जब काल परे तब नाग डसे, न डसे बिन नाग किये गलती।
पर दुर्जन का कहना न कछू, इसकी हर चाल चले छलती।।

(आचार्य स्वदेश)

सम्पादकीय

सहिष्णुता के उपदेशक

वाह क्या दृश्य है! अभी तक पूर्व सत्ताधारी पार्टी कांग्रेस के तलुवे चाटकर पुरस्कार बटोरने वाले वामपंथी कुबुद्धिजीवी खबरंडियों के स्वर में मिलकर हिन्दुओं को सहिष्णुता का उपदेश दे रहे हैं और अपने उन पुरस्कारों को जोर-शोर के साथ लौटा रहे हैं, जैसे इन पुरस्कारों को स्वीकार करके उन्होंने सरकार या समाज पर पहले कोई अहसान किया हो। हालांकि पुरस्कार लौटाने वाले इन लोगों की संख्या अभी भी उंगलियों पर गिने जाने लायक ही है, लेकिन खबरंडी मीडिया चैनल जिस तरह उनको बार-बार प्रकाश में ला रहे हैं, उससे ऐसा वातावरण बन गया है जैसे कोई भूचाल आने वाला है।

इसका प्रारम्भ मोहम्मद अखलाक नामक गौहत्यारे को हिन्दुओं की भीड़ द्वारा पीट-पीटकर मार दिये जाने से हुआ। अगर मरने वाला कोई हिन्दू यानी गैर-मुस्लिम होता तो इनके पेट में बिल्कुल दर्द न होता। अभी तक न जाने कितने हिन्दुओं की कितनी तरह से हत्याएं हुई हैं। १९८४ में हजारों सिख बंधुओं की हत्या कांग्रेसियों द्वारा उकसायी गयी भीड़ द्वारा कर दी गयी। परन्तु तब किसी ने सरकार का कोई विरोध नहीं किया, किसी ने पुरस्कार नहीं लौटाया। लाखों कश्मीरी हिन्दुओं को अपना पैतृक निवास छोड़कर भागना पड़ा और सैकड़ों की जान-माल तथा इज्जत लुटी, परन्तु तब किसी सेकूलर कुबुद्धिजीवी के पेट में दर्द नहीं हुआ।

इस बार मारा जाने वाला मुसलमान था, बस यही इनके दर्द का एकमात्र कारण है। वे हिन्दुओं को अनेक तरह के उपदेश पिला रहे हैं कि गौहत्या बंदी मत कराओ और गौहत्याओं को सहन करते रहो क्योंकि यह उनके जीभ के स्वाद के लिए है। इनके सहिष्णुता के उपदेश केवल हिन्दुओं के लिए हैं। एक बार भी इन्होंने गौहत्यारों से यह नहीं कहा कि हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं का आदर करो। एक बार भी इन्होंने कठमुल्लों से यह नहीं कहा कि सलमान रुशदी और तस्लीमा नसरीन की आलोचनाओं को सहन करो और उनकी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का आदर करो। उनके लिए केवल हिन्दू देवी देवताओं के नग्न चित्र बनाने वाले हुसैन की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जरूरी है।

इन अवांछित उपदेशकों को यह समझ लेना चाहिए कि कोई भी स्वाभिमानी हिन्दू न तो गौहत्या सहन कर सकता है और न किसी गौहत्यारे से प्रेम कर सकता है। जब तक देश में गौहत्या पूरी तरह बंद नहीं होगी, तब तक यहां साम्प्रदायिक सद्भाव की बातें निरर्थक हैं।

-- विजय कुमार सिंघल

आपके पत्र

मैं नहीं जानता कि मुझे आपका ईमेल कैसे आया। मैं सर्वप्रथम आपके हिंदी भाषा के उत्थान के क्षेत्र में आपके कार्य के लिए मैं आपको बधाई देता हूँ एवं हर्ष प्रकट करते हुए आपको भविष्य के लिए शुभकामनाएं देता हूँ।

जहाँ एक ओर मातृभाषा को पुनर्जीवित करना एवं उसका उत्थान करना अत्यंत आवश्यक है, दूसरी ओर भाषा की शुद्धता भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है। संभव है कि मैं इस विषय पर अति महत्वाकांक्षी हूँ परन्तु पिछली कुछ शताब्दियों में हिंदी जिस प्रकार प्रदूषित हो चुकी है एवं हमारे पाठ्यक्रम एवं विद्यालयों में जिस प्रकार आंग्ल भाषा का प्रसार हो रहा है, सम्भवतः आने वाले वर्षों में हिंदी केवल इतिहास बन कर रह जायेगी।

आपके प्रकाशन में मैंने कई स्थानों पर उर्दू भाषा का प्रयोग देखा। 'राह', 'सरोकार', 'आइना' जैसे शब्द हिन्दी के नहीं हैं। हमें स्मरण रखना चाहिए कि हिंदी के प्रदूषण का आरम्भ कहाँ से हुआ एवं उर्दू कहाँ से आई। उर्दू स्वयं हिंदी का प्रदूषित स्वरुप है तथा उसे हिंदी में मिलाकर हम उर्दू का प्रचार कर रहे हैं न कि हिंदी का। आप मेरी भावनाओं से सहमत भी हो सकते हैं एवं असहमत भी। मैं केवल भावनाएं व्यक्त करना चाहता था। धन्यवाद।

-- **कमल मल्होत्रा**

(हम आपसे सहमत हैं। हमारा प्रयास होता है कि शुद्ध हिन्दी का प्रयोग करें। परन्तु उर्दू के बहु प्रचलित शब्दों से भी परहेज नहीं है। - सम्पादक)

मैं हिन्दी को द्रुतगति में पढ़ नहीं पाऊँगा। स्थूलावलोकन से इतना बता पाऊँगा कि पन्नों की मात्रा ही बहुत कुछ बता सकती है आपकी पत्रिका के बारे में। और पंक्तियों का वैविध्य भी प्रशंसनीय है। इस पथ मे आप सदा यशस्वी रहे।

-- **प्रो. डा. जी जी गंगाधरन, आयुर्वेदाचार्य**

(आपके आशीर्वाद हमारे लिए बहुमूल्य हैं। - सम्पादक)

मेरी बालकहानी 'मित्रता में स्वार्थ कहाँ' को अपनी पत्रिका में स्थान देने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित कहानियाँ, गजलें, लघुकथाएँ एवं लेख काबिले तारीफ हैं, संपादक मंडल को मेरा आभार। -- **रोचिका शर्मा, चेन्नई**

अपनी व्यस्तता के चलते मैं वेबसाइट पर बहुत उपस्थिति दर्ज नहीं कर पा रहा हूँ, फिर भी आपको हमारा खयाल रहता है, इसके लिये आपका हृदय से आभार।

-- **मनोज पाण्डेय 'होश'**

बहुत बेहतरीन अंक है, हमेशा की तरह सार्थक...हार्दिक बधाई !

-- **प्रियंका गुप्ता**

अंक बहुत अच्छा बना है, सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई। खेद है इस बार हम शामिल नहीं हैं। -- **शशि पुरवार**

यही 'जय-विजय' दस्तूर, साहित्यिकता से भरपूर, रहता इसका हर इक अंक, हरदम उड़े लगाकर पंख, जग में फैले इसका नाम, 'विजय' यात्रा हो अविराम. सुन्दर अक्टूबर अंक के लिए बधाई। -- **डा. कमलेश द्विवेदी, कानपुर**

प्रिय विजय जी, अपनी पत्रिका भेजने का शुक्रिया। पसंद आई। मेरे संकलन की जो कहानियाँ किसी पत्रिका में नहीं गई हैं, उन्हें स्वीकार करेंगे क्या ?

-- **कादम्बरी मेहरा, लखनऊ**

(सभी प्रकाशित या अप्रकाशित रचनाओं का स्वागत है! - सम्पादक)

अक्टूबर अंक में मेरा लेख 'मौन' प्रकाशित करने के लिए आपका हार्दिक आभार। -- **नीरजा मेहता**

पत्रिका प्राप्त हुयी। अच्छी रचनायें पढ़ने का अवसर मिला। मेरी भी कविता को प्रकाशित करने के लिए आभार। -- **मंजु शर्मा, नवी मुंबई**

पत्रिका 'जय विजय' अक्तूबर २०१५ अंक का स्वागत है।

-- **जय प्रकाश भाटिया**

पत्रिका भेजने के लिए धन्यवाद। आप यूं ही अपनी लेखनी के जरिये समाज में चेतना का प्रकाश फैलाते रहें। -- **मनोज गौड़**

(सभी कृपालु पत्र-लेखकों का हार्दिक आभार! - सम्पादक)

विश्व भाषा का मिथक एवं लोकतंत्र?

अश्विनी कुमार 'सुकरात'

लोकतंत्र में शासन में जनता की सहभागिता तभी आ सकती है जब शासन व्यवस्था जन-भाषाओं में संचालित हो। इंग्लैड समेत सम्पूर्ण यूरोप में लोकतंत्र के विकास के साथ वहाँ की जनभाषाएं शासन प्रशासन और शिक्षा का हिस्सा बनी। यूरोप में भी जब आम जन ने प्रोटेस्टेंट मूवमेंट के द्वारा न केवल चर्च अपितु सत्ता के अन्य स्तंभों पर भी अपनी दावेदारी ठोकी, तब ही लेटिन के स्थान पर आम जन की भाषा चर्च के साथ साथ शासन-प्रशासन का भी हिस्सा बनी। जब जन साधारण ने ज्ञान की सत्ता पर अपनी दावेदारी ठोकी, तब ही आम जन की भाषा शिक्षा का माध्यम भी बन पायी। कभी स्वयं इंग्लेंड में कुलियों की भाषा समझी जाने वाली 'अंग्रेजी' जन आन्दोलनों के कारण ही मुख्य धारा में आयी। यूरोप के मध्य काल के अंध युग का अंत स्वभाषा पोषित ज्ञान के कारण ही संभव हो सका। या यूं कहें कि पुनर्जागरण काल जन भाषाओं में ज्ञान विज्ञान के प्रसार के कारण ही संभव हुआ। स्पष्ट है कि यूरोप की तमाम जन क्रांतियाँ तभी संभव हो पाईं जब ज्ञान-विज्ञान जन की भाषा में प्रतिस्फुटित हुआ।

भारत में कहने के लिए लोकतंत्र है। पर 'इंग्लिश मीडियम सिस्टम' की वजह से शासन-प्रशासन के स्तर पर क्या घोल-मेल होता है यह जनता की समझ के बाहर है। जनता न तो मूलतः अंग्रेजी में लिखे कानून को समझ पाती है, न ही उसके आधार पर चलने वाली प्रशासनिक प्रक्रिया को और न ही उसके क्लिष्ट हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं में हुए अनुवाद को ही। उच्च शिक्षा का ज्ञान उच्च वर्ग तक ही सिमट कर रह गया है। भगत सिंह ने कहा था कि क्रांति की तलवार विचारों की शान पर चलती है।

मौलिक विचार अपने परिवेश की बोली भाषा में ही प्रतिस्फुटित होते है। बच्चा हो या बड़ा, हर एक अपने परिवेश की बोली में ही अपने आप को सहजता से अभिव्यक्त कर पाता है। मातृभाषा परिवेश पर निर्भर करती है न कि मजहब, वंश, जाति आदि पर। अंग्रेजी जैसी गैर परिवेश की भाषा में तो बस हम रटी रटायी बात ही उगल सकते हैं, मौलिक चिंतन नहीं कर सकते। 'इंग्लिश मीडियम सिस्टम' ने के.जी. से पीएच.डी. तक की सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था को तोता तैयार करने की फैक्ट्री में बदल दिया है, जिससे निकला तथाकथित शिक्षित वर्ग रटी रटाई बातों को ही उगलता है।

भारत को आर्थिक एवं तकनीकी सहायता प्रदान करने वाले इस्राइल, जापान, डेनमार्क, स्वीडन, बेल्जियम जैसे छोटे-छोटे देशों का सम्पूर्ण शिक्षा तंत्र एवं राज व्यवस्था अपनी भाषाओं में ही संचालित होती है। बेल्जियम की सम्पूर्ण व्यवस्था का संचालन तीन भाषाओं में होता है। बेल्जियम में भाषायी भेदभाव को समाप्त करने हेतु सरकार का एक और स्तर बनाया गया है। वह है- सांस्कृतिक सरकार का। सांस्कृतिक सरकार यह सुनिश्चित करती है कि सभी भाषा-भाषियों को उनके उनकी सांस्कृतिक पृष्टभूमि के अनुरूप विकास के अवसर मिलें। बेल्जियम की इस प्रतिबद्धता को देखते हुए ही यूरोपीय यूनियन ने उसकी राजधानी बेरूसला को यूरोपीय यूनियन की राजधानी भी बनाया है। यूरोपीय यूनियन का लक्ष्य यूनाइटेड स्टेट आफ अमेरिका की तरह यूनाइटेड स्टेट आफ यूरोप को विकसित करना है। इसलिए यूरोपीय यूनियन यूरोप की सभी २४ भाषाओं में जनसंवाद करती है।

फ्रांस के तो कहने ही क्या? फ्रांसीसी क्रांति के बाद जो समता, समानता, भाईचारावाद, सम्प्रदाय निरपेक्षता, मानव अधिकारवाद की नींव वहाँ पर रखी गयी, वह भाषायी समता में भी देखने को मिलती है। फ्रांस में आंचलिक क्षेत्र की बोली-भाषा को भी उतना ही महत्व प्राप्त है जितना कि पेरिस में बोली जाने वाली फ्रेंच को। १९१७ की साम्यवादी क्रांति के बाद भी भूतपूर्व ५ करोड़ की आबादी वाले सोवियत संघ ने संघ की ५२ भाषाओं को शिक्षा और शासन-प्रशासन का माध्यम बनाया था।

जापान, जर्मनी, इस्रायल, स्वीडन में जब विज्ञान, मेडिकल, इंजीनियरिंग सभी विषयों की शिक्षा एवं प्रशासनिक सेवा उनके देश में बोली जाने वाली भाषाओं में उपलब्ध कराते हैं, तो भारत के साथ कठिनाई क्या है? जब ये देश दुनिया में किसी भी भाषा में छपे दस्तावेज का अनुवाद स्व भाषा में कर अपने देशवासियों को उपलब्ध करा सकते हैं, तो दुनिया के किसी भी हिस्से का ज्ञान अपने 'इंडिया दैट इज भारत' में वाया लंदन एवं वाशिंगटन ही क्यों आता है? कहीं ऐसा तो नहीं कि इस तथाकथित विश्वभाषा इंग्लिश ने हमें शेष विश्व से काट दिया हो? शेष विश्व का वही ज्ञान भारत आ सकता है जिसे ये दो मुख्य अंग्रेजी भाषी देश ज्ञान मानते हों। दूसरा मूल भाषा से अंग्रेजी में अनुवाद के दौरान यदि कोई त्रुटि हो जाए तो वह उससे क्लिष्ट रूप में आगे संचयी होगी। मतलब, वही ज्ञान भारत तक आ पाएगा, जिसे ये दो देश ज्ञान मानेंगे।

जब तक शासन प्रशासन और न्याय की भाषा सर्वहारा-गरीब-जन की भाषा नहीं होगी, तब तक यह व्यवस्था सर्वहारा-गरीब-जन का यूं ही दमन करती रहेगी। जब सर्वहारा (गरीब वर्ग) की भाषा ही नहीं रहेगी तो सर्वहारा के विचार भी नहीं रहेगे। अब जब कांग्रेसी एवं भाजपायी आदि ही नहीं सभी कामरेड (सर्वहारा वर्ग के तथाकथित नेता) जन भाषा (सर्वहारा-गरीब जन द्वारा बोले और समझे जाने वाली बोली-भाषा) के मुद्दे पर मौन ही नहीं, अपितु आम जन की समझ से परे की भाषा अंग्रेजी की पैरवी में ही लगे हैं, ऐसे में जन भाषाओं के प्रति हमारी प्रतिबद्धता भगत सिंह को फिर से जिन्दा करने की जिद्द है। ■

बॉडी सर्विसिंग

विजय कुमार सिंघल

जब हम कोई कार या अन्य वाहन खरीदते हैं तो उसमें बार-बार पेट्रोल आदि डालकर ही नहीं रह जाते, बल्कि उसकी अच्छी देखभाल और सफाई भी करते हैं। यहाँ तक कि हर साल एक या दो बार उसको विशेष सर्विसिंग के लिए भी देते हैं ताकि वह गाड़ी भली प्रकार चलती रहे और कभी अचानक धोखा न दे जाये। यह बात लगभग सभी प्रकार की मशीनों के लिए सत्य है।

हमारा शरीर भी एक मशीन है और यह कार आदि किसी भी अन्य मशीन से अधिक कीमती है। लेकिन खेद है कि हम इसकी देखभाल पर उतना ध्यान नहीं देते, जितना देना चाहिए। भोजन के रूप में दिन में तीन बार इसमें ईंधन डालकर ही हम अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि हमारा यह वेशकीमती शरीर बेडौल होने लगता है और अनेक बीमारियों का घर बन जाता है।

हमारा यह शरीर स्वस्थ रहकर जीवनभर हमारा साथ देता रहे, इसके लिए यह आवश्यक है कि हम इसका रखरखाव भी किसी कीमती मशीन या सम्पत्ति की तरह करें और समय-समय पर इसकी सर्विसिंग भी करायें ताकि यह अच्छी तरह चलता रहे। इसे बॉडी सर्विसिंग कहा जाता है।

बॉडी सर्विसिंग के लिए हम साल में कम से कम एक बार किसी प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र में जाकर हफ्ते-दस दिन रह सकते हैं जहाँ शुद्ध सात्विक स्वास्थ्यवर्धक आहार के साथ-साथ योग, प्राणायाम, जल चिकित्सा, मिट्टी चिकित्सा, भाप स्नान, मालिश आदि के द्वारा हमारे शरीर की सफाई की जाती है जिससे वह पूरी तरह नवीन हो जाता है।

यदि किसी कारणवश हम इतने समय तक अपने घर से या काम से दूर न रह सकें तो हम स्वयं भी कुछ दिन तक नियंत्रित आहार तथा सरल उपचारात्मक क्रियाओं का सहारा लेकर अपने शरीर की सर्विसिंग सफलता से कर सकते हैं। यदि शरीर की इस प्रकार उचित समय अंतरालों पर सर्विसिंग कर ली जाये, तो हम उन अनेक छोटी-बड़ी बीमारियों से बचे रह सकते हैं जिनके उपचार में न केवल हमारा बहुत सा कीमती समय और धन नष्ट होता है वरन् कई बार हमारा जीवन भी संकट में पड़ जाता है। ■

गोरक्षा-आन्दोलन और गोपालन का महत्व

मनमोहन कुमार आर्य

आर्य विद्वान और नेता लौह पुरुष पं. नरेन्द्र जी, हैदराबाद की आत्मकथा 'जीवन की धूप छांव' से गोरक्षा आन्दोलन विषयक उनका एक संस्मरण प्रस्तुत कर रहे हैं। वे लिखते हैं कि 'सन् १९६६ ईस्वी में पुरी के जगद्गुरु शंकराचार्य के नेतृत्व में गोरक्षा आन्दोलन चलाया गया था। पांच लाख हिन्दुओं का एक ऐतिहासिक जुलूस लोकसभा तक निकाला गया था। वहां पहुंचकर प्रधानमन्त्री, गृहमन्त्री श्री गुलजारी लाल नन्दा को गोरक्षा नियम बनाने के लिए ध्यानाकर्षण के निमित्त ज्ञापन दिया गया। भारत सरकार ने अपनी शक्ति के द्वारा इस आन्दोलन को समाप्त करने का प्रयत्न आरम्भ कर दिया। सत्याग्रह आन्दोलन उभरता ही गया। हजारों आर्य समाजियों ने सत्याग्रह में भाग लिया। हैदराबाद में पुरी के शंकराचार्य ने १९६८ ई. में गोरक्षा-सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए कहा था, 'गोरक्षा आन्दोलन में आर्यसमाज ने अपना जो योगदान दिया है, उसके लिए मैं आर्यसमाज का जन्म भर आभारी रहूंगा।'

इस आन्दोलन में २१ गोभक्त शहीद हुए। कांग्रेसी राज्य के अत्याचार अनाचार, मारपीट के बावजूद भारत के कोने-कोने से लगातार जत्थे देहली पहुंचकर अपने-आपको गिरफ्तार कराते रहे। ऐसे अवसर पर चुप्पी साधकर बैठना मेरी (पं. नरेन्द्र की) प्रकृति के विरुद्ध था। मैंने उस समय दिल्ली पहुंच कर ११२ सत्याग्रहियों के साथ चांदनी चौक, दिल्ली में हजारों हिन्दुओं और आर्यों की उपस्थिति में सत्याग्रह किया। हम सबको तिहाड़ जेल पहुंचा दिया गया, जहां मजिस्ट्रेट ने एक-एक मास की सजा सुनाई। हैदराबाद से श्री मुन्नालाल मिश्र, श्री गोपाल देवशास्त्री, श्री सोहनलाल वानप्रस्थी और श्री बंसीलाल जी के अतिरिक्त जालना, गुलबर्गा के आर्य समाजियों ने इसमें बढ़-चढ़ के भाग लिया था। श्री करपात्री जी के त्रुटिपूर्ण नेतृत्व के कारण यह आन्दोलन सफलता के द्वार तक पहुंचने से पूर्व ही सरकार की कूटनीति का शिकार हो गया।'

ईश्वरीय ज्ञान वेद में ईश्वर ने गोमाता को 'गो सारे संसार की मां है' कहकर सम्मान दिया है। यजुर्वेद के पहले ही मन्त्र में गो की रक्षा करने का निर्देश ईश्वर की ओर से दिया गया है। गोदुग्ध पूर्ण आहार है। जिस बच्चे व अति वृद्ध के मुंह में दांत नहीं होते उनका पालन पोषण भी गो दुग्ध के द्वारा होता है। हमने पढ़ा था कि भूदान यज्ञ के नेता विनोबा भावे जी को उदर रोग था जिस कारण अन्न का सेवन उनके लिए निषिद्ध था और वह गोदुग्ध पीकर ही जीवन निर्वाह करते थे।

पं. प्रकाशवीर शास्त्री ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'गोहत्या राष्ट्र हत्या' में लिखा है कि अनुसंधान में यह पाया गया है कि यदि गो को कई दिनों तक चारा न भी दिया जाये तब भी वह कई दिनों तक भूखी रहकर दूध देती रहती है। हमने स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी की पुस्तक 'गोदुग्ध अमृत है' में पढ़ा था कि एक निर्धन व असहाय किसान की आंखों की रोशनी चली गयी। उसके घर में एक गाय की बछिया थी जिसे उसका पुत्र पाल रहा था। कुछ महीनों बाद वह गाय बियाई तो घर में दुग्ध की प्रचुरता हो गई। कुछ ही दिनों में उस परिवार में चमत्कार हो गया। उस वृद्ध की आंखों की रोशनी गाय का दूध पीने से लौट आई। आज के समय का सबसे भयंकर रोग कैंसर है। इस रोग में भी गाय का मूत्र कारगर व लाभप्रद सिद्ध होता है। गोसदन में यदि क्षय रोगी को रखा जाये तो उसका रोग भी ठीक हो जाता है।

महर्षि दयानन्द ने अपनी विश्व प्रसिद्ध पुस्तक 'गोकरुणानिधि' में एक गाय की एक पीढ़ी से होने वाले दुग्ध और उसके बैलों से मिलने वाले अन्न की एक कुशल अर्थशास्त्री की भांति गणना की है और बताया है कि गाय की एक पीढ़ी से 'दूध और अन्न को मिला कर देखने से निश्चय है कि ४,१०,४४० चार लाख दश हजार चार सौ चालीस मनुष्यों का पालन एक बार के भोजन से होता है।' मांस से उनके अनुमान के अनुसार केवल अस्सी मांसाहारी मनुष्य एक बार तृप्त हो सकते हैं। वे लिखते हैं कि 'देखो, तुच्छ लाभ के लिए लाखों प्राणियों को मारकर असंख्य मनुष्यों की हानि करना महापाप क्यों नहीं?'

महर्षि दयानन्द ने अपने समय में गोरक्षा का आन्दोलन भी चलाया था। वे अनेक बड़े अंग्रेज राज्याधिकारियों से मिले थे और गोरक्षा के पक्ष में अपने तर्कों से उन्हें गोहत्या को बन्द करने के लिए सन्तुष्ट व सहमत किया था। उन्होंने करोड़ों लोगों के हस्ताक्षर कराकर महारानी विक्टोरिया को भेजने की योजना भी बनाई थी जो तेजी से आगे बढ़ रही थी परन्तु विष के द्वारा उनकी हत्या कर दिये जाने के कारण गोरक्षा का कार्य अपने अन्तिम परिणाम तक नहीं पहुंच सका।

ईश्वर से गोरक्षा की प्रार्थना करते हुए वह 'गोकरुणानिधि' पुस्तक की भूमिका में महर्षि दयानन्द कहते हैं कि 'ऐसा सृष्टि में कौन मनुष्य होगा जो सुख और दुःख को स्वयं न मानता हो? क्या ऐसा कोई भी मनुष्य है कि जिसके गले को काटे वा रक्षा करें, वह दुःख और सुख का अनुभव न करे? जब सब को लाभ और सुख ही में प्रसन्नता है, तो बिना अपराध किसी प्राणी का प्राण वियोग करके अपना पोषण करना यह सत्पुरुषों के सामने निन्दित कर्म क्यों न होवे? सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर इस सृष्टि में मनुष्यों के आत्माओं में अपनी दया और न्याय को प्रकाशित करे कि जिससे ये सब दया और न्याययुक्त होकर सर्वदा सर्वोपकारक काम करें और स्वार्थपन से पक्षपातयुक्त होकर कृपापात्र गाय आदि पशुओं का विनाश न करें कि जिससे दुग्ध आदि पदार्थों और खेती आदि क्रियाओं की सिद्धि से युक्त होकर सब मनुष्य आनंद में रहें।'

हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह गो का मांस खाने वाले मनुष्यों के हृदयों में सत्य ज्ञान का प्रकाश करे जिससे वह गोहत्या व गोमांस भक्षण का त्याग करके गो हत्या के महापाप और ईश्वर के दण्ड से बच सकें तथा उनका अगला जन्म, जो कि निःसन्देह होना ही है, उसमें उन्हें निम्न जीव योनियों में पड़कर दूसरों जीवों को दिए दुःख के समान स्वयं दुःख न भोग पड़े। ■

सामान्य ज्ञान

प्रश्न

१. कनाडा की राजधानी क्या है?
२. पुराणों में किन दो देवताओं का उल्लेख एक साथ किया जाता है?
३. बंगलादेश में कौन सी मुद्रा चलती है?
४. महाभारत में कर्ण के पालक माता-पिता कौन थे?
५. युरोपीय भाषाएं किस भाषा से निकली हैं?
६. रामायण में रावण के मामा का क्या नाम था?
७. संसार का सबसे बड़ा महासागर कौन सा है?
८. संसार का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन कौन सा है?
९. किस क्रांतिकारी को दो बार कालापानी का दंड दिया गया था?
१०. 'चिपको आन्दोलन' किसने चलाया था?

उत्तर

१. ओटावा; २. अश्विनी कुमार; ३. टका; ४. राधा और अधिरथ; ५. लैटिन; ६. मारीच; ७. अटलांटिक; ८. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ; ९. वीर सावरकर; १०. सुंदरलाल बहुगुणा

(पृष्ठ १७ का शेष) **गौमांस कुतर्क समीक्षा**

कल्याण का मार्ग है। इसी नियम से भोजन की स्वतंत्रता का अर्थ दूसरे व्यक्ति की मान्यताओं को समुचित सम्मान देते हुए भोजन ग्रहण करना है। जिस कार्य से समाज में दूरियां, मनमुटाव, तनाव आदि पैदा हों उस कार्य को समाज हित में कभी न करना चाहिये।

कुतर्क नं ११- महाराष्ट्र में गौ हत्या पर पाबन्दी लगा दी गई। इससे १.५ लाख व्यक्ति बेरोजगार हो जायेंगे जो मांस व्यापार से जुड़े हैं।

समीक्षा- गौ पालन भी अच्छा व्यवसाय हैं। इससे न केवल गौ का रक्षण होगा अपितु पीने के लिए जनता को लाभकारी दूध भी मिलेगा। ये व्यक्ति गौ पालन को अपना व्यवसाय बना सकते हैं। इससे न केवल धार्मिक सौहार्द बढ़ेगा अपितु सभी का कल्याण होगा।

इस समीक्षा से स्पष्ट है कि गौहत्या और गौमांस के समर्थन में दिये जा रहे कुतर्क गलत ही नहीं सरासर मूर्खतापूर्ण हैं। इन कुतर्कों का मुख्य उद्देश्य युवा मस्तिष्कों को भ्रमित करना है। ■

सुना है नदी के दो किनारे कभी नहीं मिलते
उसकी कामना भी नहीं मुझे
मैंने कभी मिलना चाहा भी नहीं शायद ...
किसी सेतु-बंध का बंधन भी नहीं चाहा
अपेक्षा बस इतनी थी कि
दूसरे किनारे की तरह
तुम मेरे साथ-साथ
टेढ़े-मेढ़े रास्ते पर पत्थरों पर
ख़ामोशी से चलते रहो

-- **अनिता अग्रवाल**

(कविता संग्रह '**अन्तर्मन के स्पन्दन**' से साभार)

सुनो, तुमने सिर्फ /उड़ते पक्षियों की बात की
उनकी उड़ान की/कभी विचार कर उनके प्रीत के क्षण
बोट के लिए तड़पता दिल/चोंच भर दानों के लिए
जद्दोजेहद फिर होगी/तुम्हारी कविता मुकम्मल!
सुनो, तुमने प्रीत की रीत को/लिख दिया शब्दों में
मुहब्बत के अफसाने
उतारे सुर्ख सफेद पन्नों पर
मिलन की डोर से करना
आलिंगन उनका
ऊर्जा से भरा चुम्बन
तब होगी तुम्हारी कविता मुकम्मल!!

-- **रितु शर्मा**

कोहरे मे लिपटे/वृक्ष पहाड़ कितने हसीं लगते हैं
जेसे प्रकृति ने चादर ओढ़ली हो/सुबह की ठण्ड से
इन पर पड़ी ओंस की बूंदों से/खुल जाती है इनकी नींद
साथ ही सूरज के उदय होते/ऐसा लगता है मानो
घर का कोई बड़ा बुजुर्ग
अपने बच्चों को जेसे उठा रहा हो
तब ऐसा महसूस होता है की
प्रकृति भी सिखाती है
सही तरीके से जीने के लिये
प्यार भरा अनुशासन

-- **संजय वर्मा 'दृष्टि'**

चींटी से सीखी हैं मैंने/निरन्तर बढ़ने की कला
गिर के संभलना/संभल कर फिर चढ़ना
धैर्य के साथ चलते रहना/और बार बार संभलने की कला
राह में अवरोध भले हो/चाहे हो डगर कांटों भरी
अपने लक्ष्य को पाने का/उसका दृढ़ संकल्प
चींटी से सीखी हैं मैंने/जीवन सफल बनाने की कला
एक जुट होकर चलना/अपनों को सहेजे रखना
मिलजुल सुदृढ़ समाज बनाने की कला
चींटी से सीखी हैं मैने/कर्तव्यनिष्ठ होने की कला
अपने कर्म को सर्वोपरि जानकार/नित जुटे रहने की कला
चींटी से सीखी हैं मैने
आत्मविश्वास की कला
हो भार चाहे दस गुना
प्रयत्नरत रहने की कला
चींटी से सीखी हैं मैने
निरन्तर बढ़ने की कला

-- **मधुर परिहार**

ढूंढ़े दिशा, पूछे निशा, क्यों है होड़, अंधी दौड़
दिन न ढलता, रात न घटती/मंजिल कहां है मालूम नहीं
खूब सूरत राहें चले जा रहे हैं/अति प्रियता ढूंढ़ते रहे
उजास की चाह में बहे जा रहे हैं
केवल ही तो रह गया है
धरा से थोड़ा ऊपर उठ गया है
जो बहती है वो रहती है,
जो मिल जाये वह लुप्त हो जाये
मिलो तो ऐसे मिलो कि प्रेम मिलन में
दुबारा मिलने की चाहत लुप्त में भी न रह जाये
पता ही न चले और जीवन की सुबह हो जाए
क्योंकि हम ो मोह माया ने जकड़ा, मोह माया ने मारा
मोह माया के मोह में बंधकर अकड़ गयी ये काया

-- **संगीता कुमारी**

(कविता संग्रह '**हृदय के झरोखे**' से साभार)

शीश महलों के नीचे
प्रश्न चिह्नों से अंकित
मासूम चेहरे और खामोश आंखें
बेध देती हैं अंतरात्मा
और कह देती हैं कहानी
शीश महलों के निर्माण की !

-- **डा. रचना शर्मा**

(कविता संग्रह '**अन्तर-पथ**' से साभार)

आसमान से तारे तोड़ लाने की/जिद पाले हुए
सुनहरे भविष्य के गर्त में/बैठा हूँ मैं कचरे के ढेर पर
कभी न कभी/पूरे होंगे सपने मेरे
जो मैं देखता हूँ/इन खुली आंखों से
किताबें गर बदल न सके हालात मेरे
ख्यालात बदलेंगे जरूर
और मैं देख पाउंगा
दुनिया को अपनी ही नजरों से
धनी होंगे गगनचुंबी इमारतों वाले
पर मेरे जैसा विचारों का धनी
कोई न होगा मुन्नी

-- **सीमा संगसार**

दोस्ती अनमोल है/दोस्त अनमोल होते हैं
दोस्त यादों में, सम्वादों में होते हैं/दोस्त गीत गजल होते हैं
दोस्त न हो जिंदगी सूनी है/सारे रंग फीके हैं
न होली न दिवाली अच्छी लगती है
दोस्त महफिलों में संगीत की मधुर धुन की तरह होते हैं
हर दर्द में दोस्त साथ होते हैं
दोस्त रूठे तो जग रूठ जाता है
दोस्त से बढ़कर कोई नहीं होता है
सर्द रातों में चाय की चुस्कियों में
दोस्त ही साथ होते हैं
दोस्त सच्चे हों तो जिंदगी हसीं है
सच्चे दोस्त बहुत मुश्किल से मिलते हैं
दोस्त कमजोर धागो से नहीं बंधे होते/जो टूट जाये
दोस्त कभी न छूटे क्योंकि/दोस्त अनमोल होते हैं

-- **गरिमा पांडेय**

आज की नारी,/न जाने कितनी विपत्तियों से गुजरी,
न जाने कितनी/आलोचनाओं को बर्दाश्त किया,
न जाने कितने दुर्व्यवहार का शिकार हुई,
न जाने कितने संबंधों से बहिष्कृत हुई,
किन्तु साहस न छोड़ा/हिम्मत न हारी
आज घर के चूल्हे चौके, घर गृहस्थी,
झाड़ू बुहारी, साज सफाई/की बेड़ियों को काटकर
परम्पराओं व रिवाजों की/बेजान रस्में तोड़कर
स्वच्छ, शीतल, कंचन सी दमकती,
रुपहली धूप सी खिली,
न सिर्फ घर की दहलीज की शोभा बनी
अपितु चुनौतियों से जूझती
जीत की खुशी लिए
विषम परिस्थितियों में
अपनी पहचान बनाने में
कामयाब हुई और बनी
एक सफल, सशक्त नारी !

-- **नीरजा मेहता**

वो सदा कहते थे/दिल में रखेंगे तुमको
तुम भूलना भी चाहो/तो भी न जुदा करेंगे तुमको
आज भी सिर्फ तुम्हें चाहते हैं/कल भी चाहते रहेंगे तुमको
न छाने देंगे अंधेरा कभी/जिंदगी में तुम्हारी
दिन का उजाला ही/बने रहने देंगे तुमको
वो यह भी कहते थे/चले आँधियाँ कितनी भी वक्त की
रखेंगे थामकर बाहों में/न कहीं और जाने देंगे तुमको
उड़ जाए चाहे ख्वाब सारे/पंछी बन कर
पर जो अहसास पिरोये थें/यादों के भँवर में
न टूटने देंगे उनको
वो यह भी कहते थे/वो वो भी कहते थे
जो हम कहते थे/वो हस कर सहते थे
फिर क्या हुआ/क्यों बदल गए वो इतना
हम न रहे जब/तो औरों में इतना खो गए
कि भूल गए वो सब कुछ
जो वो हमेशा/रो रो कर कहते थे
आज पता चला
वो दिल तो उनके पास था ही नही
जिसमें हम रहते थे

-- **महेश कुमार माटा**

भिखारिन/छुक छुक चलती रेल/जैसे जीवन रेल
चलती भिखारिन/दीन दशा ऐसी/कहती हो वैसी
अब मैं आम से आप कहलाऊगी
निर्भर दया पर/भाँति भाँति के मुसाफिर
जीवन की रेल जाती किस ओर
पग पग माँगती देखती ऐसे
जैसे हो चोर अभागिन भिखारिन
नहीं भिखारिन किसी की माँ भी/राजनीति की पहचान
सभ्यता का आयना देश की माँ आहत
उसकी क्या कहानी
रोयेगी जो आँखें उसकी क्या जवानी

-- **डॉ मधु त्रिवेदी**

(पहली किस्त)

जगमग दीप जले

सुरेखा शर्मा

दफ्तर से आते-आते रात के आठ बज गये थे। घर में घुसते ही प्रतिमा के बिगड़े तेवर देख श्रवण भांप गया कि जरूर आज घर में कुछ हुआ है, वरना मुस्करा कर स्वागत करने वाली का चेहरा उतरा न होता। सारे दिन मोहल्ले में होने वाली गतिविधियों की रिपोर्ट जब तक मुझे सुना न देती उसे चैन नहीं मिलता था। जलपान के साथ-साथ बतरस पान भी करना पड़ता था। पंजाब केसरी पढ़े बिना अड़ोस-पड़ोस के सुख-दुख के समाचार मिल जाते थे। शायद देरी से आने के कारण ही प्रतिमा का मूड बिगड़ा हुआ है।

प्रतिमा से माफी मांगते हुए बोला, 'सारी, मैं तुम्हें फोन नहीं कर पाया। महीने का अन्तिम दिन होने के कारण बैंक में ज्यादा कार्य था।'

'तुम्हारी देरी का कारण मैं समझ सकती हूं, पर मैं इस कारण दुखी नहीं हूं।' प्रतिमा बोली।

'फिर हमें भी तो बताओ इस चांद से मुखड़े पर चिन्ता की कालिमा क्यों?' श्रवण ने पूछा।

'दोपहर को अमेरिका से बड़ी भाभी (जेठानी) जी का फोन आया था कि कल माता जी हमारे पास पहुंच रही हैं।' प्रतिमा चिन्तित होते हुए बोली।

'इसमें इतना उदास व चिन्तित होने की क्या बात है? उनका अपना घर है वो जब चाहें आ सकती हैं।' श्रवण हैरान होते बोला।

'आप नहीं समझ रहे। अमेरिका में माँ जी का मन नहीं लगा अब वो हमारे ही साथ रहना चाहती हैं।' प्रतिमा ने कहा। 'अरे मेरी चन्द्रमुखी, अच्छा है ना, घर में रौनक बढ़ेगी, कथा कीर्तन सुनने को मिलेगा। बरतनों की उठा पटक रहेगी। एकता कपूर के सीरियलों की चर्चा तुम मुझसे न करके माँ से कर सकोगी। सास बहू मिलकर मोहल्ले की चर्चाओं में बढ़-चढ़ कर भाग लेना।' श्रवण चटखारे लेते हुए बोला।

'तुम्हें मजाक सूझ रहा है और मेरी जान सूख रही है।' प्रतिमा बोली। 'चिन्ता तो मुझे होनी चाहिये, तुम सास-बहू के शीत-युद्ध में मुझे शहीद होना पड़ता है। मेरी स्थिति चक्की के दो पाटों के बीच में पिसने वाली हो जाती है। ना माँ को कुछ कह सकता हूं, ना तुम्हें।' कुछ सोचते हुए श्रवण फिर बोला, 'मैं तुम्हें कुछ टिप्स बताना चाहता हूं, यदि तुम उन्हें अपनाओगी तो तुम्हारी सारी की सारी परेशानियां एक झटके में छूमन्तर हो जाएंगी।'

'यदि ऐसा है तो, आप जो कहेंगे मैं करूंगी। मैं चाहती हूं माँ जी खुश रहें। आपको याद है पिछली बार छोटी सी बात से माँ जी नाराज हो गयी थीं!'

'देखो प्रतिमा, जब तक पिताजी जीवित थे तो हमें उनकी कोई चिन्ता नहीं थी। जब से वे अकेली हो गयी हैं उनका स्वभाव बदल गया है। उनमें असुरक्षा की भावना ने घर कर लिया है। अब तुम ही बताओ, जिस घर में उनका एकछत्र राज था वो अब नहीं रहा। बेटों को तो बहुओं ने छीन लिया। जिस घर को तिनका-तिनका जोड़कर माँ ने अपने हाथों से संवारा, उसे पिताजी के जाने के बाद बन्द करना पड़ा। कभी अमेरिका कभी यहाँ हमारे पास आकर रहना पड़ता है, तो उन्हें अच्छा नहीं लगता। वे स्वयं को बन्धन में महसूस करती हैं, इसलिए हमें ऐसा कुछ करना चाहिये जिसमें उन्हें अपनापन लगे। उनको हमसे पैसा या जायदाद नहीं चाहिये। उनके लिए तो पिताजी की पेंशन ही बहुत है। उन्हें खुश रखने के लिए तुम्हें थोड़ी सी समझदारी दिखानी होगी, चाहे नाटकीयता से ही सही।'

'आप जैसा कहेंगे मैं वैसा ही करने को तैयार हूं।'

'तो सुनो प्रतिमा, हमारे बुजुर्गो में एक 'अहं' नाम का प्राणी होता है। यदि किसी वजह से उसे चोट पहुंचती है तो पारिवारिक वातावरण प्रदूषित हो जाता है, अर्थात् परिवार में क्लेश व तनाव अपना स्थान ले लेता है। इसलिए हमें ध्यान रखना होगा कि माँ के अहं को चोट न लगे। बस। फिर देखो।'

'इसका उपाय भी बता दीजिए आप!' प्रतिमा ने उत्सुकता से पूछा। 'हां...हां... क्यों नहीं, सबसे पहले तो जब माँ आए तो सर पर पल्लू रखकर चरण स्पर्श कर लेना। रात को सोते समय कुछ देर उनके पास बैठकर हाथ-पांव दबा देना। सुबह उठकर चरण स्पर्श के साथ प्रणाम कर देना।' श्रवण ने समझाया।

'यदि माँ जी इस तरह से प्रसन्न होती हैं तो यह कोई कठिन काम नहीं है।'

'एक बात और ! कोई भी काम करो माँ से एक बार पूछ लेना। होगा तो वही जो मैं चाहूंगा। जो बात मनवानी हो उस बात के विपरीत कहना, क्योंकि घर के बुजुर्ग लोग अपना महत्व जताने के लिए अपनी बात मनवाना चाहते हैं। हर बात में 'जी माँ जी' का मन्त्र जपती रहना। फिर देखना माँ की चहेती बहू बनते देर नहीं लगेगी।' श्रवण ने तर्कों से प्रतिमा को समझाया।

'आप देखना, इस बार मैं माँ को कोई शिकायत का मौका नहीं दूंगी।'

'बस..बस..., उनको ऐसा लगे जैसे घर में उनकी ही चलती है। तुम मेरा इशारा समझ जाना। आखिर माँ तो मेरी है, मैं जानता हूं उन्हें क्या चाहिये!'

प्रतिमा ने सुबह जल्दी उठ कर उनके कमरे की अच्छी तरह सफाई करवा दी। उसी कमरे के कोने में उनके लिए छोटा- सा मन्दिर रखकर उसमें ठाकुर जी की मूर्ति भी स्थापित कर दी साथ ही उनकी जरूरत की सभी चीजें वहाँ रख दी।

हम दोनों समय पर एयरपोर्ट पहुंच गये। हमें देखते ही मां जी की आंखें खुशी से चमक उठी। सिर ढक कर प्रतिमा ने माँ के चरण छुए तो माँ ने सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया। पोते को न देखकर माँ ने पूछा, 'अरे तुम मेरे गुड्डू को नहीं लाए?'

'माँ जी वह सो रहा था।' प्रतिमा बोली

'बहू आजकल बच्चों को नौकरों के भरोसे छोड़ने का समय नहीं है। आए दिन अखबारों में छपता रहता है।' माँ जी ने समझाते हुए कहा।

'जी माँ जी, आगे से ध्यान रखूंगी।' रास्ते भर भैया भाभी व बच्चों की बातें होती रही।

घर पहुंच कर माँ ने देखा जिस कमरे में उनका सामान रखा गया है उसमें उनके लिए पूजा करने का स्थान भी बना दिया गया है। वे खुश होते हुये बोली, 'प्रतिमा बहू, तुमने तो ठाकुर जी के दर्शन करवाकर मेरे मन की इच्छा पूरी कर दी। अमेरिका में तो विधिवत् पूजा पाठ करने को तरस ही गयी थी। तभी चार वर्षीय पोता गुड्डू दौड़ता हुआ आया और दादी के पांव छूकर गले लग गया। 'माँ जी, आप पहले फ्रैश हो लीजिए, तब तक मैं चाय बनाती हूं।'

रात के खाने में सब्जी माँ से पूछकर बनाई गयी। खाना खाते-खाते श्रवण बोला, 'प्रतिमा कल आलू के परांठे बनाना, पर माँ से सीख लेना तुम बहुत मोटे बनाती हो।' प्रतिमा की आंखों में आंखें डालकर श्रवण बोला। 'ठीक है, माँ जी से पूछकर ही बनाउंगी।' प्रतिमा बोली।

माँ जी के कमरे की सफाई भी प्रतिमा महरी से न करवाकर स्वयं करती थी, क्योंकि पिछली बार महरी से कोई चीज छू गयी थी तो माँ जी ने पूरा घर सर पर उठा लिया था। अगले दिन आफिस जाते समय श्रवण को एक फाइल ना मिलने के कारण वह बार-बार प्रतिमा को आवाज लगा रहा था। प्रतिमा थी कि सुनकर भी अनसुना कर माँ के कमरे में काम करती रही। तभी माँ जी बोली, "बहू तू जा, श्रवण क्या कह रहा है वह सुन ले।' 'जी माँ जी।'

दोपहर के समय माँ जी ने तेल मालिश के लिए शीशी खोली तो,प्रतिमा ने शीशी हाथ में लेते हुए कहा, 'लाओ माँ जी मैं लगाती हूं।'

'बहू रहने दे! तुझे घर के और भी बहुत काम हैं ,थक जाएगी।'

'नहीं माँ जी, काम तो बाद में भी होते रहेंगे। तेल लगाते-लगाते प्रतिमा बोली, माँ जी,आप अपने समय में कितनी सुन्दर लगती होंगी और आपके बाल तो और भी सुन्दर दिखते होंगे, जो अब भी कितने सुन्दर और मुलायम हैं।'

'अरे नहीं, ऐसी कोई बात नहीं, हां, तुम्हारे बाबू जी जरूर कभी-कभी छेड़ दिया करते थे। कहते थे कि यदि मैं तुम्हारे कालेज में होता तो तुम्हें भगा ले जाता। ' बात करते-करते उनके मुख की लालिमा बता रही थी जैसे वो अपने अतीत में पहुंच गयी हैं।

(शेष अगले अंक में)

लाख तुम हमको पुकारो, फिर नहीं आयेंगे हम
कल को जब सब छोड़कर जग से चले जायेंगे हम
याद जब आये हमारी आसमां में ढूंढना
आसमां में बन के इक तारा नजर आयेंगे हम
जिंदगी है गम का दफ्तर गम जहां खुशियां कहां
सांस जब तक थम न जाये चैन क्या पायेंगे हम
हम वफा की रह न छोड़ेंगे वफाई की कसम
है यकीं हमको कि इक दिन तो उन्हें भायेंगे हम
उम्र गुजरी जा रही है इंतिजारे यार में
देखिये कब उसकी 'नासिर' इक झलक पायेंगे हम

-- डा. मिर्ज़ा हसन नासिर

(ग़ज़ल संग्रह '**ग़ज़ल गुलज़ार**' से साभार)

हुआ इलाज भी मुश्किल, नहीं मिलती दवा असली
दुआओं का असर होता दुआ से काम लेता हूँ
मुझे फुर्सत नहीं यारो कि माथा टेकूं दर-दर पे
अगर कोई डगमगाता है उसे मैं थाम लेता हूँ
खुदा का नाम लेने में क्यों मुझसे देर हो जाती
खुदा का नाम से पहले, मैं उनका नाम लेता हूँ
मुझे इच्छा नहीं यारो कि मेरे पास दौलत हो
सुकून हो चैन हो दिल को इसी से काम लेता हूँ
सब कुछ तो बिका करता मजबूरी के आलम में
मैं सांसों के जनाजे को सुबह से शाम लेता हूँ
सांसे है तो जीवन है तभी है मूल्य मेहनत का
जितना हो जरुरी बस उसी का दाम लेता हूँ

-- मदन मोहन सक्सेना

जिंदगी की राह में यूँ तो कई हमदम लगे
एक तिनका भी न आया, डूबने जब हम लगे
लाख रूठे आदमी उसको मना सकते हैं हम
कोई कर सकता है क्या जब रूठने मौसम लगे
दूर है मंजिल मगर हम पा ही लेंगे एक दिन
दिल में हो विश्वास तो फिर फासला भी कम लगे
भूल मैं सकता नहीं हूँ पत्र उसका आखिरी
जब भी मैं उसको पढ़ूँ तो वह मुझे अलबम लगे
गाँव की मस्जिद बनाने में लगा है 'रामसुख'
गाँव का मंदिर बनाने में 'मियाँ असलम' लगे
भावना जैसी हो वैसी मूर्ति आयेगी नजर
दूध बच्चे को पिलाती माँ मुझे मरियम लगे

-- डा. कमलेश द्विवेदी

खुदा के वास्ते आँखों से पोंछ लो आँसू।
रहूँगा कैसे टपकते हुए मकानों में?

-- विजय कुमार सिंघल

जीवन की प्यास मौत का सहरा बुझाएगा
बुझने से इक चिराग को तूफां बचाएगा
घर के ही लोग उसका उड़ाने लगे मजाक
सूरज ये कह के ढल गया शब भर न आएगा
खुद को संभाल प्यार से आवाज दे उसे
होते ही भोर वक्त नए गुल खिलाएगा
ताकत पे और उड़ान पे इतना गुमां न कर
आकाश तेरी गोद में आकर समाएगा
कर ले यकीन खुद पे तू सजदे में सिर झुका
ए 'शान्त' अपने-आप से क्या क्या छिपाएगा

-- देवकी नन्दन 'शान्त'

(हिन्दी ग़ज़ल संग्रह '**तलाश**' से साभार)

शाम तनहा है और सहर तनहा
उम्र अपनी गई गुजर तनहा
छुप गए साये भी अँधेरों में
रात को हो गया शहर तनहा
कोई दस्तक ना कोई आहट है
किसको ढूँढे मेरी नजर तनहा
मंजिलों पर पहुंच गए राही
रह गई पीछे रहगुजर तनहा
कभी रहते थे बादशाह जिसमें
आज रोता है वो खंडहर तनहा
माल-ओ-दौलत यहीं रह जाती है
देखो सोया है सिकंदर तनहा
साथ अपने तू ले गया सबकुछ
रह गया मैं अपने अंदर तनहा

-- भरत मल्होत्रा

कर सोलह श्रृंगार, सखी री दीप जला
पावन है त्यौहार, सखी री दीप जला
तम-विभावरी, झिलमिला रही, पूनम सी
ज्योतित है संसार, सखी री दीप जला
भाव-भावना पूर्ण अल्पना, शोभित हो
बाँधो वंदनवार, सखी री दीप जला
रिद्धि-सिद्धि के सुख-समृद्धि के द्वार खुलें
घर-घर पनपे प्यार, सखी री दीप जला
पद्मवासिनी, वरदा लक्ष्मी, द्वार खड़ी
कर स्वागत सत्कार, सखी री दीप जला
धैर्य-ध्यान से, विधि विधान से, कर पूजन
मंगल मंत्र उचार, सखी री दीप जला सतत
साल भर, हों प्रकाशमय, जन-जन के
आँगन, देहरी, द्वार, सखी री दीप जला
कर्म-ज्ञान के, धर्म-दान के, रोशन हों
हर मन में सुविचार, सखी री दीप जला
चिर उजियाली, शुभ दीवाली, फिर लाए
अपनों के उपहार, सखी री दीप जला

-- कल्पना रामानी

तुम्हारे घर की तरह मेरा कोई घर होता
कोई तो यारब मेरा भी हमसफर होता
कभी तुम्हारी बेरुखी पे नहीं होता यकीं
पलट के देखा अगर तुमको एक नजर होता
कोई न कोई किनारा तो हाथ आ जाता
तुम्हारे हाथ से छूटा न हाथ गर होता
आज ठहरा नहीं होता मैं समंदर की तरह
न ही भटकती हुई कोई मैं लहर होता
तमाम उम्र न कटती विरह के साए में
न ही अंधेरों से लड़ता मैं इस कदर होता
चाहता था कि तुम्हारी खुशी में हँसता मैं
और गम में तुम्हारे सर पे मेरा सर होता
फिर नहीं गिनता यों इंतजार की घड़ियां
न ही यादों के बियाबान में सफर होता
एक तमन्ना थी महज हम-करीब होने की
भले ही तुम्हारे बगीचे का गुलमोहर होता

-- डा. ओम निश्चल

तुम जब से मिल गये हो, दिल में करार सा है
सब कुछ बदल गया है, हर और प्यार सा है
खुशबू अलग सी है कुछ, बदले से हैं नजारे
मौसम पे भी अलग सा, छाया खुमार सा है
चाहत की फुहारों से, हर आरजू मगन है
खुशियों ने जैसे खोला, चाहत का द्वार सा है
मुस्कान ओढ़ ली है, हर गम ने रंग बदलकर
मायूसियों ने ओढ़ा, नवरंग निखार सा है
हर बेकरार धड़कन, पानें लगी है नव स्वर
तेरा साथ मेरे हमदम, जीवन का सार सा है
तुम जब से मिल गये हो, दिल में करार सा है
सब कुछ बदल गया है, हर ओर प्यार सा है

-- सतीश बंसल

कभी मिलने न आते हैं, बड़ी तकलीफ होती है
वो वादा भूल जाते हैं, बड़ी तकलीफ होती है
लिये रहते हैं सदा जो गर्द-आलूद चेहरे पर
वही बातें बनाते हैं, बड़ी तकलीफ होती है
जिन्हें अमृत परोसा है, मुहब्बत का सदा हमने
हमें विष वो पिलाते हैं, बड़ी तकलीफ होती है
खुशी के वास्ते जिनकी, सदा हम धूप ढोते हैं
वही हमको रुलाते हैं, बड़ी तकलीफ होती है
जिनको इश्क की कीमत नहीं मालूम 'शुभदा' वो
यहां बातें बनाते हैं, बड़ी तकलीफ होती है

-- शुभदा बाजपेयी

अबला कौन?

सुबह सुबह माया कामवाली बाई ने समाचार दिया कि कमलाकर की पत्नी चल बसी, पड़ोस का मामला है, बैठने जाना होगा। सरिता ने सवेरे खाने के साथ ही शाम के लिए बच्चों का नाश्ता बना दिया और बेटी को बता दिया कि मुझे आने में देर होगी शाम को, क्योंकि आफिस के बाद कमलाकर जी के यहाँ बैठक में जाना है तो भाई का ध्यान रखे। दादी को भी नाश्ता करा समय पर दवा दे देना।

बैठक में पंडित गीता पाठ कर रहा था वो भी बैठ गई, पर पंडित के पाठ से ज्यादा औरतों की कनफुसियां ज्यादा सुनाई दे रही थी कि बेचारा कमलाकर दो बच्चों की जिम्मेदारी कैसे संभालेगा! आफिस और घर, बच्चे, अकेला क्या-क्या देखेगा, शादी कर देनी चाहिए।

अभी बेचारी को गए दो दिन हुवे और शादी! खैर छोड़ो उसको घर की चिंता थी बैठक खत्म हो तो घर जाये बच्चे अकेले हैं। पति के जाने बाद सास ने गम में बिस्तर पकड़ लिया, दो बच्चों के साथ उनकी भी पूरी जिम्मेदारी और आफिस भी फूल टाइम मेड रखने की हैसियत नहीं, माया से सफाई-बर्तन के काम करवाने में भी कितनी कतरब्योंत खर्चे में करनी पड़ती है।

माया की काम के साथ जबान भी फुर्ती से चलती है। आते ही मौहल्ले के समाचार सुननी शुरू हो जाती है, आज उसी ने बताया कमलाकर ने अपनी साली से शादी कर ली। मैं चौंक गई अभी तो पंद्रह दिन ही हुए हैं। हां मेम साब वो तो सही हे पर बेचारे अकेले क्या क्या देखते घर आफिस और बच्चे?

फिर खुद ही चुप हो गयी क्योंकि वो खुद भी तो दोहरी जिम्मेदारी निभा रही हैं। में सोचने को मजबूर हो गयी कि बेचारा कौन अबला कौन ?

-- गीता पुरोहित

उस का दर्द

'डॉक्टर साहब! होश में आते ही वह फिर तड़फने लगेगी। उस का कोई उपाय बताइए।'

'वह अपने बच्चे से बहुत प्यार करती थी। फिर उस के छाती दूध से भर जाती है। इससे आप की पत्नी को ज्यादा तकलीफ होती है।' डॉक्टर ने कहा, 'आप उसे समझाए। किसी दूसरे के बच्चे को दूध पिला दिया करे।'

यह सुन कर पति की आँख में आंसू आ गए, 'वह एक कट्टर धार्मिक महिला है। वह नहीं मानेगी डॉक्टर साहब।'

तभी बच्चा का रोना सुन कर डॉक्टर ने आवाज दी, 'नर्स! बच्चे को ले जाओ।'

'जी!' नर्स ने कहा और वह सावित्री के पास पहुँच गई। जैसे ही उसकी आँखे खुलीं, वैसे ही वह चहक उठी, 'मेरा बच्चा!'

'हाँ सावित्री! यह तेरा बच्चा है जो कृष्ण के रूप में रोड़ी (गोबर का ढेर) में पड़ा हुआ मिला था ताकि देवकी की तकलीफ दूर कर सके।' मगर सावित्री बिना सुने ही उसे दूध पिलाने में मशगूल थी और पास खड़ी नर्स, जो अनाथालय में पली-बड़ी थी बच्चे से अपने जीवन की तुलना कर पहली बार मुस्कराई थी।

-- ओम प्रकाश क्षत्रिय

बुढ़ापा

'भूल जाओ पुरानी बातें, माफ कर दो सबको। माफ करने वाला महान होता है। सबके झुके सर देखो।' बार-बार बड़े भैया बोले जा रहे थे। बड़े भैया की बातें जैसे पुष्पा के कान सुन ही नहीं रहे थे।

आयोजन था पुष्पा की शादी की २५वीं सालगिरह का। ससुराल की तरफ से सभी जुटे थे- सास-ससुर, देवर-देवरानी, ननद संग उनके बच्चे। मइके से आने वाले केवल उसके बड़े भैया-भाभी ही थे। बुलाना वो अपने पिता को भी चाहती थी लेकिन उसके पति ने बुलाने से इंकार कर दिया था क्योंकि नासूर बनी पुरानी बात, खुशी की हर नई बात पर भारी पड़ जाती है न।

सास को पुष्पा कभी पसंद नहीं आई। पसंद तो वो किसी को नहीं करती थी। उन्हें केवल खुद से प्यार था और बेटों को अपने वश में रखने के लिए बहुओं के खिलाफ साजिश रचा करती थी। बेटे भी कान के कच्चे, माँ पर आँख बन्द कर विश्वास करते थे। बिना सफाई का मौका दिए, बिना कोई जबाब मांगे अपनी पत्नियों की धुलाई करते।

पुष्पा तब तक सब सहती रही जब तक उसका बेटा समझने लायक नहीं हुआ। फिर धीरे-धीरे विरोध जताना शुरू किया, लेकिन शादी की सालगिरह क्यों मनाये खुद को समझा नहीं पा रही थी। घर छोड़ चली गई होती तब, जब बार-बार निकाली गई थी। तो बुजुर्ग से बदला कभी नहीं लिया लेकिन सोचती रही बुढ़ापा तब दिखलाई नहीं दिया था, क्यों?

-- विभा रानी श्रीवास्तव

नाकाम साजिश

'तुम अब तक कुछ नहीं किया, अब कैसे डिबेट में जाने की बात कर रही हो। नाम डुबो के आओगी स्कूल का।'

'सर मौका मिला ही नहीं, और न पूछा गया कभी क्लास में। अभी तक वही जा रहे थे जो जाते रहे थे।'

खूब लड़-झगड़ आखिरकार अपनी जगह डिबेट में पक्की कर ली हिमा ने। 'जाओ मना नहीं करूँगा, पर कुछ कर नहीं पाओगी।' टीचर अपनी चहेती के ना जा पाने पर क्रोध से बोले।

सुनते ही आग बबूला हो उठी हिमा, पर चुप्पी साध ली। माँ की बातें याद आ गयी बड़ों की बात यदि बुरी लगे यदि कभी, तो मुँह से नहीं अपने काम से जबाब देना। बीस दिनों बाद डिबेट में प्रथम आने का अवार्ड पूरे ऑडोटोरियम में प्रिंसिपल से लेते हुए उस टीचर को नजरों से ही जबाव दे रही थी हिमा।

टीचर यह कहकर मुँह लाल कर रहे थे कि 'तुम तो बड़ी प्रतिभाशाली हो, अब तक कहाँ छुपी थी ये तुम्हारी उड़ान। अगली उड़ान के लिए फिर तैयार रहना।' शाबाशी देते हुए बोले।

-- सविता मिश्रा

अभिमन्यु

अध्यापक अभिमन्यु के अंतिम वाक्य समाप्त होते ही सभागार में तालियाँ गूंज उठी। उस दिन से वे अध्यापक छात्र प्रिय बन गये। दिन-प्रतिदिन उनकी लोकप्रियता बढ़ती गई। कई अध्यापकों ने उनकी दिल से प्रशंसा की, तो कुछ ने दिमाग से प्रशंसा की। उस दिन से दिमाग से प्रशंसा करने वाले अध्यापकों के भीतर ईर्ष्या-द्वेष की अग्नि प्रज्वलित हो गई थी। उस अग्नि ने उनके दिन का चैन और रातों की निद्रा को खंडित कर दिया था। इसका परिणाम उस अध्यापक को भुगतना ही था।

एक रात्रि अग्नि से खंडित निद्रा वाले अध्यापकों ने मुर्गियों की टांग चबाते और दूसरे हाथ से शरीर और मस्तिष्क में उत्तेजना प्रदान करनेवाले आधुनिक सोमरस का पान करते हुए अत्याधुनिक एवं पारम्परिक मिश्र चक्रव्यूह के सन्दर्भ में 'अभिमन्यु को कैसे फांसा जाये?', इस विषय पर गम्भीर संगोष्ठी सम्पन्न की। संगोष्ठी उपसंहार में अध्यापक, खंडित अध्यापकों के प्रिय छात्र, संगठन एवं बाहर से कुछ गुंडों को सम्मिलित करना तय किया गया। बदले में छात्रों को परीक्षा में अंक, संगठना एवं गुंडों को रुपये और रात्रि संगोष्ठी में सहभागिता प्रदान करने का निर्णय लिया गया।

एक खंडित अध्यापक ने दूसरे खंडित अध्यापक को कहा, 'कल से अभिमन्यु को मनोरोगी बनाने की प्रक्रिया शुरू हो जायेगी। पहला दाव उसे चिल्लर करना और...।'

-- डा. सुनील जाधव

आस्था के नाम पर बिकने लगे हैं भ्रम
कथ्य को विस्तार दो यह आसमां है कम
लाल तागे में बंधी विश्वास की कौड़ी
अक्ल पर जमने लगी ज्यों धूल भी थोड़ी
नून राई मिर्ची निम्बू द्वार पर कायम
द्वेष संशय भय हृदय में जीत कर हारे
पत्थरों को पूजतें बस वह हमें तारे
तन भटकता दर-बदर
मन खो रहा संयम
मोक्ष दाता को मिली है दान में शैया
पेंट ढीली कर रहे कुछ
भाट के भैया वस्त्र भगवा बाँटते
गृह काल घटनाक्रम

-- शशि पुरवार

दौड़ रहा है वक्त और हम
हम भी तो दौड़ रहे हैं बेहताश होकर
कदम ताल मिलाने को/कहीं छूट न जायें पीछे हम !
पर इस भागम-भाग में/कितना कुछ पीछे छूट जाता है
जब तक हिसाब लगाते हैं/बहुत कुछ छूट चुका होता है!
और फिर समय का फेर समझ
या नियति मानकर बढ़ जाते हैं
दौड़ जारी कर देते हैं जीवन की
छूटने का मलाल दिल में लिये...
पर जब मंजिल मालूम है तो/इतनी भागम-भाग क्यूँ है?
मंजिल तो अटल है स्थिर है/फिर हम अस्थिर क्यों हैं
क्यूँ नहीं है संतोष, धैर्य, ठहराव
क्यूँ नहीं साथ लेकर चल पाते हैं
पीछे छूट जाने वाले रिश्तों को ..!
हर क्यूँ का जवाब मिलता है
पर वक्त की जरुरत के हिसाब से
रेस लगी है वक्त के साथ
जीतने की चाह में कितना कुछ हारकर
बढ़ते जा रहे हैं अनवरत...!
हम कहाँ चल रहे हैं ये तो वक्त चल रहा है
बस हम तो उसके साथ तालमेल
बिठाते-२ खर्च हो रहे हैं रफ्ता-रफ्ता!!

-- प्रवीन मलिक

दीप-मालाओ
तुम्हारी रोशनी की ही विजय हो
छा गया है जगत में तम
सघन होकर जी रहे हैं मनुज
जीवन-अर्थ खोकर कालिमा का
फैलता अस्तित्व क्षय हो
रात के काले अँधेरे छल लिये बस तुम्हीं
घिरती अमा का हल लिये जिंदगी हर पल
सरस सुखमय अभय हो दिनकरों सम
दर्प-खण्डित रात कर दो असत-रिपु को
किरण-पुंजों मात कर दो
फिर उषा का आगमन उल्लासमय हो
दीप-मालाओ तुम्हारी रोशनी की ही विजय हो

-- त्रिलोक सिंह ठकुरेला

मैं एक स्त्री हूँ/कोई आइना नहीं
कि मुझमें देख कर तुम/अपनी छवि निहारोगे
इतराओगे/और पलट कर चल दोगे
हिम्मत है तो देखो मेरी रूह के आर-पार
गुजरो मेरे अंतर्मन से भी कभी/समझो मुझे भी
यकीन जानो/थर्रा जाओगे भीतर तक दहल जाओगे
जब जानोगे कि क्या क्या छिपा रखा है मैंने अपने भीतर
कुछ दुःख कुछ तकलीफें
इच्छाओं के कुछ खिले-अधखिले फूल
कुछ सपने आधे-अधूरे से
कुंडली मारे बैठी कुछ लालसाएं
कुछ बेड़ियां रस्म-ओ-रिवाजों की
कुछ रंग-बिरंगे पंख तितलियों के
जिन्हें सजा मिली थी खूबसूरती की, उड़ान की
कुछ तीर अश्लील नजरों के ,फब्तियों के
जो भेद कर अस्मिता के झीने परदे को
कर गए थे लहु-लुहान मेरा मन
कुछ विवशताए भी मिलेंगी तुम्हें मेरे भीतर स्त्री होने की
जिन पर अब जंग लग चुका है
कहीं ना कहीं कुछ टुकड़े/संतोष के भी मिलेंगे तुम्हे
हाँ देखो/कुछ किरचें भी मिलेंगीं
इन किरचों से जरा बच कर निकलना
जो फैलीं हैं इधर उधर हर तरफ
बस कुछ नहीं/ये यादें हैं उन दिनों की
जब कभी मैंने/कुछ क्षण जिए थे तुम्हारे साथ
प्यार के,मनुहार के, विश्वास के !
देखो, पलट मत जाना
एक बार/मेरी रूह से गुजर कर देखो!!

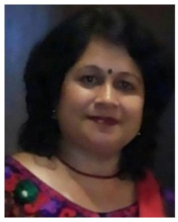

-- नमिता राकेश

पिघल उठता है हृदय/जब नजर जाती है फुटपाथ पर
कैसे बिताते हैं अपना जीवन/उस भयानक डगर पर
अपना बसेरा खुले आसमान में बनाये हैं
रुलाई गुप्त कमरे में/उनके हृदय में उमड़ती है।
सुसंस्कृत, बुद्धिमानों की श्रेणी में नहीं आते
इन सब चीजों से दूर/उसी परिवेश में जन्मे बालकों का
परिवरिश करती हैं/असंख्य स्त्री पुरुष भटकते
किसी वस्तु की खोज में/रूकना चाहते हैं कहीं
लेकिन मीलों दूरियां पैदल चले जाते हैं!
अंधेरी खांई रूपी जीवन को पार करते हुए!
जीवन कठिनाई से काटते हैं
गन्दी बस्तियों में नालों के पास/अपना आहार बनातें हैं
पत्थर और ईट के चूल्हों पर/सुलगाते हैं आग
पकाते हैं भोजन/वहीं फुदकते हैं दो चार
ठोस बनी स्त्री-पुरुष की आकृतियाँ
चिलचिलाती हुई धूप में!
मुझे होती है ग्लानि,
इस देश की असली तस्वीरें देखकर
आज भी लोग,
इस कदर जीवन जीने पर मजबूर हैं!

-- रमेश कुमार सिंह

ना जाने कितने खत लिखे तुम्हे
कितने तुमने पढ़े पता नहीं
हर एक नया खवाब लिखा तुम्हे
कितने तुमने पुरे किये पता नहीं
हर एक एहसास को लिखती रही में
तुम्हे खुद में - मैं लिखती रही
जज्बातों को तुम कहाँ समझ पाये
हर एहसास का कोरा सा जवाब आये
मेरे खतों की स्याही आंसू से बनी थी
जो तुम्हे नजर ही नहीं आई थी
कभी उन खतों को पढ़ा होता
कभी तो मुझे समझा होता/कोरे कागज सी जिन्दगी पर
कभी तो अपना हस्ताक्षर किया होता

-- डॉली अग्रवाल

अहिल्या की तरह शिला बनी जनता
सहती रही शीत, ताप, वर्षा,
कितने शासक आये/कितने गये
किसी ने सताया/किसी ने सहलाया
उसके मुख से निकली न आह न वाह
क्यों की वह थी एक शापित शिला,
उसे इंतजार था केवल एक राम का
जो उसको कर दे फिर से जीवंत.
द्रवित हो उसकी व्यथा से/कलियुग में भी आया एक राम
लेकिन उसका स्पर्श/धड़ तक ही दे पाया स्पंदन
पैर पाषाण ही रहे/जो उठ नहीं सकते.
वह चीखती है, चिल्लाती है/फिर चुप हो जाती है
और सूनी आँखों से देखती है राह
सतयुग के उस राम की/जो शायद फिर आजाये
और पूर्णतः जीवंत कर दे आज की अहिल्या को
जिससे वह अन्याय की मूक दर्शक न रहे
और कुचल सके उसे अपने पैरों तले.

-- कैलाश शर्मा

हे राम हमें वो रामराज्य लौटा दो
अहंकार को हमसे दूर भगा दो
सब सुखी और सब स्वस्थ्य रहे तेरे दर पे
बस हाथ आपका चाहते अपने सर पे
नित नया रूप रावण है धर लेता
यहाँ निस दिन सीता हरण दिखायी देता
आकर के सीता मात को आज बचालो
गौ माता की रक्षा का भार उठा लो
हे राम हमें वो रामराज्य लौटा दो
वैर भाव नहीं रहे किसी में कोई
यह विनती करता आज तुम्हे हर कोई
महलो में राज कर रहे कलयुगी राजा
हे राम निकल तिरपाल से बाहर आजा
दम नहीं किसी में मंदिर भव्य बना दे
हे समय अभी अपना प्रताप दिखा दे
इस जग से नफरत नाम मिटा दो
हे राम हमें वो रामराज्य लौटा दो

-- पुरुषोत्तम जाजू

थोड़ी सी समझदारी

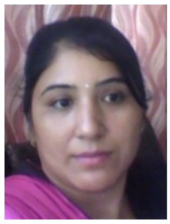

कामनी गुप्ता

कभी-कभी रिश्तों में अलगाव की वजह, इतनी छोटी सी बात से हो जाती है कि समय के साथ-साथ हमें रिश्तों में बेवजह आई दूरियां खुद ही अटपटी सी लगने लगती हैं। मगर स्वाभिमानवश हम खुद को गलत साबित होने नहीं देते और हमारा अहं हमें कभी-कभी जिंदगी के हसीन पलों से दूर कर कहीं बेरंग, बेरुखी सी जिंदगी जीने पर मजबूर कर देता है। कुछ ऐसे ही दौर से गुजर रही थी सुप्रिया! यूं तो कहने को सुप्रिया के ससुराल वाले अच्छे ही थे, मगर हर किसी को मुकम्मिल जहाँ नहीं मिलता! कहीं कुछ कमी तो होती है और सब कुछ पाने की चाह में जो हमारे पास है हम उसका भी सौन्दर्य खो देते हैं। जब तक हमें अपनी गलतियों का ऐहसास होता है तब तक देर हो जाती है। फिर भी दूसरों की भावनाओं को भी उनकी जगह खुद को रख कर देखा जाए तो थोड़ा बहुत एहसास तो हो ही जाता है।

सुप्रिया तो जैसे ससुराल में सबको अपनी ही तरह से बदलने को आतुर थी। वो यह नहीं समझ पा रही थी कि सभी का स्वभाव अलग-अलग होता है और हम चाहकर भी सभी को अपनी तरह से बदल नहीं सकते, ना ही जीने पर मजबूर कर सकते हैं। सुप्रिया की सास सुप्रिया को पसंद तो करती थी मगर उसे कहीं आना जाना या ज्यादा खर्चा कर देना किसी चीज पर पसंद नहीं था। कभी तो इसी बात पर ही सुप्रिया की अपने पति के साथ भी अनबन हो जाती थी। जैसे ही सुप्रिया और उसके पति कहीं घूमने जाने का प्रोग्राम बनाते तो उसकी सास नाराज हो जाती थी और गुस्से में कुछ बातें भी सुना देती थी। उनको घर पर रहना पसंद था और उनका मानना था कि महंगाई है फिजूलखर्च मत करो।

सुप्रिया को इसी बात पर गुस्सा आ जाता था, कुछ शब्द तो बर्दाश्त के बाहर हो जाते थे उसको! यूं तानो बानों में वो अकसर उलझ कर रह जाती, वहीं उसके पति भी थोड़े गुस्से वाले थे। सुप्रिया समझदार तो थी पर कभी-कभी जल्दबाजी में गलत सोच कर फैसले पर भी पहुंच जाती थी और सोचती कि मेरी किस्मत कैसी है क्या मैं अपनी मनमानी भी नहीं कर सकती। सुप्रिया की सास भी कुछ बातों में अच्छी भी थी यह भी नहीं कि उसे बिल्कुल ही कहीं आने जाने नहीं देती थी मगर थोड़ी सख्ती तो थी। गुस्से में क्या कह दिया और सुनने वाले को कितना बुरा लगा यह ध्यान नहीं रहता था।

एक दिन तो ऐसे ही कहीं जाने की बात को लेकर बात बढ़ गई सुप्रिया ने भी गुस्से में अपने कपड़े पैक किए और बिना अपने पति को बताए अपने मायके के लिए निकल पड़ी। सास भी घबरा कर कहने लगी ‘सुप्रिया ऐसा मत करो। मैने गुस्से में जाने क्या कह दिया, मेरी बात को ऐसे मत लो, पता नहीं मुझे क्या हो जाता है जब गुस्सा आ जाता है। इस तरह अपना घर छोड़ कर कोई जाता है बेटा मैं तुम्हारे भले के लिए ही कहती हूँ’, पर सुप्रिया को कोई बात इतनी चुभ गई कि अब उसका दिमाग ही काम नहीं कर रहा था कि सही क्या है और वो छोड़ कर अपने मायके आ गई।

जब उसके पति को पता चला तो वो भी जिद्द पर अड़ गए कि उसने इतना बड़ा कदम कैसे उठाया। इसमें उसके घर की बेइज्जती थी। वो मुझसे बात तो कर सकती थी। सुप्रिया जब घर पहुंची तो उसके ममी पापा समझ गए कि कुछ बड़ी बात हो गई है। सुप्रिया ने जैसे ही सारी बात समझाई, तो उसके मम्मी पापा ने सुप्रिया को डांटा कि जल्दबाजी में इस तरह फैसले नहीं लेते शान्ति और समझदारी से काम लेते हैं। थोड़ा सा खुद को माहौल के मुताबिक भी ढालते हैं। शादी के बाद कुछ फर्क तो पड़ता है जिंदगी में। कुछ तुम्हें समझना होगा कुछ उन्हें! सास और ससुर जी के लाख कहने पर भी सुप्रिया के पति ने भी जिद्द पकड़ी थी खुद गई है तो खुद ही आएगी।

कुछ दिन मायके में रहने के बाद सुप्रिया को अपना ही फैसला खलने लगा और वो पछताने लगी कि यहाँ मुझे इतना कुछ मिला है अच्छा घर, समझदार ससुर जी और पति। सास भी दिल की बुरी नहीं थी, उसे बात को इतना नहीं बढ़ाना चाहिए था। आहिस्ता -आहिस्ता प्यार से वो अपनी मर्जी भी कर सकती थी पर उसके लिए उनके दिल में जगह बनानी होगी और छोटी-छोटी बातों को अनदेखा भी करना पड़ता है। जैसे वो मायके रहती थी कहीं किसी बात पर अपने मम्मी पापा भी तो विरोध करते थे और डाँटते थे। हर बात हमारी ही मर्जी के मुताबिक मिले या हो ऐसा कम ही हो पाता है। फिर एक दिन उसकी सहेली घर आई उसकी भी शादी हो चुकी थी उसकी भी लगभग यही कहानी थी। वो इन सब बातों को समझती थी उसने भी सुप्रिया को घर वापिस लौटने की सलाह दी।

घर तो सुप्रिया भी लौटना चाहती थी पर

(शेष पृष्ठ २३ पर)

एक भूल

वैभव दुबे ‘विशेष’

कभी किसी को छोटा समझकर उसकी अवहेलना करना कितनी बड़ी भूल हो सकती है इसका एहसास मुझे मेरे साथ हुई एक घटना ने दिलाया। एक सुबह मैं अपने आफिस के लिये निकला मुझे देर हो गई थी। तेज गति से बढ़ते हुए कदम अचानक एक करुण आवाज सुनकर ठिठक गए। मैंने मुड़कर देखा एक गन्दे कपड़े में लिपटा हुआ भिखारी लगभग रुआंसे चेहरे से मेरे आगे हाथ फैलाये खड़ा था।’ साहब मैंने दो दिन से कुछ नहीं खाया है। भूख से मेरा दम निकला जा रहा है, कुछ रूपये दे दो तो मैं खाना खा लूँ।’ भिखारी मेरे पैरों में गिरकर बोला। मैंने उसे झिड़क दिया ’दूर रहो मुझसे तुम्हारे गन्दे हाथ मेरे कपड़े गन्दे कर देंगे, मुझे आफिस जाना है और ये तुम लोगों का रोज का काम है। मेहनत करो और कमाओ।’

भिखारी मेरे बहुत पास आ गया था। मुझे गुस्सा आ गया मैंने उसका हाथ पकड़कर दूर धक्का दे दिया वो लड़खड़ाता हुआ सड़क पर गिर गया। मगर मुझे एहसास हो गया था, उसका बदन तीव्र बुखार से तप रहा है, तभी तो उसकी जुबान उसका साथ नहीं दे रही थी। फिर भी मैं पत्थर दिल उसे ऐसी हालत में छोड़ कर चल पड़ा आफिस के लिए। सारा दिन उसके साथ किये व्यवहार को मैं सोचता रहा। शाम को उसी रास्ते से लौटा मगर वो भिखारी मुझे नहीं दिखाई दिया। बाद में पता चला वो बुखार और भूख के कारण दुनिया से विदा हो गया है। ‘अच्छा है मर गया, ऐसी जिन्दगी से मुक्ति तो मिल गई।’ मैं मन ही मन बड़बड़ाया।

कुछ दिन गुजर गए मैं उस भिखारी को भूल चुका था। एक शाम मैं टहलने निकला। सड़क पार कर ही रहा था कि सामने से आती हुई एक गाड़ी दिखाई दी मैं खुद को बचाने के लिए पीछे लौटा मगर तब तक देर हो चुकी थी मेरा दायां पैर गाड़ी की चपेट में आ गया था। मैं गिर पड़ा दर्द से चिल्लाने लगा मदद की गुहार लगा रहा था। आस-पास से गुजरती तेज गाड़ियों की गति कम नहीं हुई। कोई भी नहीं आया मेरी मदद को। लगा कि अब मेरी ये आखिरी शाम है और मैं बेहोश हो गया।

जब आँख खुली तो खुद को अस्पताल के बेड पर पाया। सामने डॉक्टर साहब खड़े थे। मैंने पूछा- ‘मुझे यहाँ कौन लाया है? डॉक्टर ने कहा एक भिखारी तुम्हें यहाँ लेकर आया और तुम्हें खून भी दिया है। तुम्हारा खून अधिक बह गया था अगर आने में थोड़ी देर और हो जाती तो तुम्हारा पैर काटना पड़ता। तभी मुझे उस भिखारी के साथ किये गए दुर्व्यवहार का स्मरण हो आया मेरी आँखों से आंसू बहने लगे। काश मैं उसकी मदद करता तो शायद आज वो भिखारी भी जिन्दा होता। अपनी करनी पर पछतावा हो रहा था। आज मेरी नसों में एक भिखारी का रक्त बह रहा था जिसने मेरी जान बचाई जिसे मैंने गन्दा और तुच्छ प्राणी कहा था। भविष्य में असहाय लोगों की मदद करने का दृढ़ संकल्प करके मैंने अपनी आँखे बन्द कर लीं। अभी भी उस भिखारी का दयनीय चेहरा मेरे चारों ओर मंडरा रहा था। ■

गजलें

चाँद को पहलू में लेके चाँद से चाँद का दीदार कर लें
फलक से बातें करें पुरअसर दिल पे एतबार कर लें
कभी तो रुक के देखूँ कुछ वक्त को गुलजार कर लें
बेकरार वक्त के चिलमन को हटा दें दीदार कर लें
लम्हे लम्हे मंजर बदला कैसे बैठ फिर से एतबार कर लें
जुस्तजू दिल की भी है कुछ बात आज दो चार कर लें
छुपाये बैठे हैं जो राज ए दिल आज उनका दीदार कर लें
वो शख्स तुम हो या कि मैं
खुद पे ही दिल निसार कर लें
शामो-सहर सजदा किया
किसे और क्यों हिसाब कर लें
तकल्लुफ में रहें क्यों वफा है
तो क्यों न इजहार कर लें

-- अंशु प्रधान

शाद आँखों में हमेशा अश्क का चेहरा मिला
धूप की दीवार में भी दर्द का साया मिला
कौन है शामिल मुझी में हू-ब-हू मेरी तरह
सो गया मैं रात में तो शख्स वो जगता मिला
चाँद बे-शक खूब लगता है मगर जब रात में
पानियों पर आ गया तो अक्स पर धब्बा मिला
प्यास की जिद थी कि लेकर पास दरिया के चलो
पास दरिया के मगर प्यासा पड़ा सहरा मिला
दे रहे थे आप धोखा तो हुए नाराज क्यूं
जब किसी भी और से भी आपको धोखा मिला
है अभी जिन्दा हमारे गाँव में तहजीब सब
पर शहर में आपके बस झूठ का दावा मिला

-- दिलीप विश्वकर्मा

अपराधी के संग तू घूमे, और हमें गरियाता है
कल तक जिससे लड़ता था तू, आज मित्र का नाता है
जो बाइज्जत बरी हुए हैं, फिर भी तेरे दुश्मन हैं
वो कानून से सजायाफ्ता, लेकिन तुझको भाता है
खाऊँगा न खाने दूँगा, बोला तो तुम चिढ़ बैठे
गलबहियां तुम उसके डालो, जो चारा खा जाता है
मन में जो आए बकता वो, तुझको भी न छोड़ा है
बाद में कहता कोई शैतान,
मुझसे ये कहलाता है
खैर नतीजा कुछ भी आए,
लेकिन यूं ना जहर उगल
उसका क्या है वो तो अक्सर,
ज्यादा ही गिर जाता है

-- मनोज डागा 'मोजू'

मुक्तक

आज बैठी हूँ तुम्हारे पहलू में मैं पल दो पल
भूलकर सब मुहब्बत अब कर लूँ मैं पल दो पल
लम्हे फुरसत के मिले हैं चंद ही सुनो साहिब
जी भरके तुम्हें ही बस देखूं मैं पल दो पल

-- चन्द्र कांता सिवाल 'चन्द्रेश'

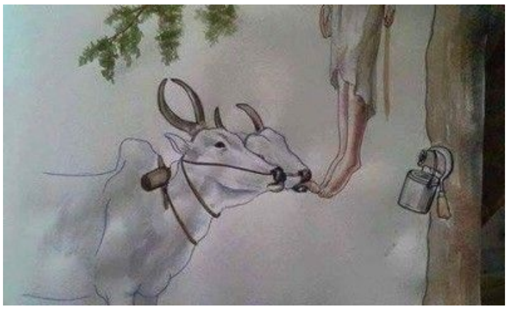

किसान की आत्महत्या पर बैलों का विलाप

सजल नयनों से वृषभ कहें, स्वामी तुम क्यों मुख मोड़ चले
संग रहना था आजीवन तो, क्यों बीच राह में छोड़ चले
माना परिस्थितियां कठिन थीं पर, पहले भी दिन ये आए थे
तेज बाढ़, भीषण अकाल, मिलजुलकर साथ बिताए थे
खेत की नीरवता में हमको, दिल का हाल सुनाया था
स्वयं भी रोए थे कितना और, कितना हमें रूलाया था
कहा था तुमसे साहूकार से, बिल्कुल कर्ज ना लेना तुम
उस निर्दयी के हाथ में अपने, हाथ ना काट के देना तुम
सूखा चारा खाकर भी हम, पूरा जोर लगा देंगे
हम और तुम मेहनत करके, फिर से फसल उगा लेंगे
मगर भाग्य से लड़ ना पाए, क्यों जीवन से हार गए
अपने बीवी-बच्चों को भी, तुम जीते जी मार गए
क्यों दें दोष प्रेंति को हम, प्रेंति तो सबकी माता है
तेरी इस अकाल मृत्यु पर, रोया स्वयं भाग्य विधाता है
आत्महत्या नहीं है कोई, हत्या है सीधी सादी ये
मारा है तुमको लोगों ने, मिलकर बड़ी चालाकी से,
तुमको मारा है देश के, पाखंडी नेताओं ने
तुमको मारा है मानव की, बढ़ती हुई इच्छाओं ने
तुमको मारा सूदखोरों ने, साहूकार की चालों ने
तुमको मारा मंडी वाले, सचिवों और दलालों ने
अगर हमारे बस में होता, इनको मजा चखा देते
एक-एक कातिल को, चुन-चुनकर कड़ी सजा देते
लेकिन ये ना हो पाएगा, निर्बल हैं बेकार हैं हम
इन रक्तपिपासु भेड़ियों के, सम्मुख कितने लाचार हैं हम,
पशु हैं हम लेकिन मानव की, पशुता पर शर्मिंदा हैं,
आहत मानवता अब शायद,पशुओं में ही जिंदा है

-- भरत मल्होत्रा

दोस्त तुम भी कमाल करते हो, बेसबब क्यूँ मलाल करते हो
भान खुद चाँद से जुदा कब है, दोस्ती पर सवाल करते हो ?
दौलते-हुस्नो-नूर से शब को, दोस्त तुम मालामाल करते हो
दीद देकर सभी को मुखड़े का, ईद का तुम धमाल करते हो
काम वैसे बुरा नहीं कोई, दोस्त तुम बहरहाल करते हो
नाम रुसवा मेरा भी होता है
जब कभी तुम बवाल करते हो
'भान' की पीठ थपथपा करके
यार खुद को विशाल करते हो
मूक गुमनाम दुआओं की तरह
'भान' की देख-भाल करते हो

-- उदय भान पाण्डेय 'भान'

गीत-गंगा

हैं साहित्य मनीषी या फिर अपने हित के आदी हैं
राजघरानों के चमचे हैं, वैचारिक उन्मादी हैं
दिल्ली दानव सी लगती है, जन्नत लगे कराची है
जिनकी कलम तवायफ बनकर दरबारों में नाची है
डेढ़ साल में जिनको लगने लगा देश दंगाई है
पहली बार देश के अंदर नफरत दी दिखलायी है
पहली बार दिखी हैं लाशें पहली बार बवाल हुए
पहली बार मरा है मोमिन पहली बार सवाल हुए
नेहरू से नरसिम्हा तक भारत में शांति अनूठी थी
पहली बार खुली हैं आँखें, अब तक शायद फूटी थीं
एक नयनतारा है जिसके नैना आज उदास हुए
जिसके मामा लाल जवाहर, जिसके रुतबे खघस हुए
पच्चासी में पुरस्कार मिलते ही अम्बर झूल गयी
रकम दबा सरकारी, चौरासी के दंगे भूल गयी
भुल्लर बड़े भुलक्कड़ निकले, व्यस्त रहे रंगरलियों में
मरते पंडित नजर न आये, काश्मीर की गलियों में
अब अशोक जी शोक करे हैं, बिसहाडा के पंगों पर
आँखे इनकी नहीं खुली थी भागलपुर के दंगों पर
आज दादरी की घटना पर सब के सब ही रोये हैं
जली गोधरा ट्रेन मगर तब चादर ताने सोये हैं
छाती सारे पीट रहे हैं अखलाकों की चोटों पर
कायर बनकर मौन रहे जो दाऊद के विस्फोटों पर
ना तो कवि, ना कथाकार, ना कोई शायर लगते हैं
मुझको ये आनंद भवन के,नौकर चाकर लगते हैं
दिनकर, प्रेमचंद, भूषण की जो चरणों की धूल नहीं
इनको कह दूं कलमकार,
कर सकता ऐसी भूल नहीं
चाटुकार, मौका परस्त हैं,
कलम गहे खलनायक हैं
सरस्वती के पुत्र नहीं हैं,
साहित्यिक नालायक हैं

-- गौरव चौहान

बस तुम्हारा नाम ले हद से गुजर जायेंगे हम
इश्क के किस्से सुनायेंगे जिधर जायेंगे हम
प्यार की टेढ़ी सड़क पर कौन सीधे चल सका
मुश्किलें होंगी मगर उस राह पर जायेंगे हम
इस जहाँ में बस तुम्हीं से, हाँ तुम्हीं से इश्क है
तुमको पाने के लिये क्यों दर-ब-दर जायेंगे हम
जब तुम्हारे हाथ हमने सौंप दी है जिन्दगी
मौत भी चाहोगे तो पल
भर में मर जायेंगे हम
हम तुम्हारी चाहतों से
फूल बनकर खिल गये
गर मिटें तो खुशबुओं से
जग को भर जायेंगे हम

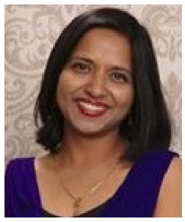

-- अर्चना पांडा

(पहली किस्त)

मेरी लाइफ लाइन

नीलिमा शर्मा (निविया)

झुंझुलाते हुए निमिषा ने फोन बिस्तर पर पटक दिया और बुदबुदाने लगी- 'कितना बिजी रहते हैं आप? मेरे लिए तो फुर्सत ही नहीं आपको। बात मुझसे करते हुए भी आँखे कंप्यूटर स्क्रीन पर अटकी रहती होंगी आफिस में। मेरी बातें सुने बिना ही हाँ-न का जवाब आता रहता हैं।'

सुनील एक मल्टीनेशनल कम्पनी में मैनेजर हैं एक तो प्राइवेट नौकरी उस पर मिलने वाले इतने टार्गेट। अब वो कैसे समझाए निम्मी को। ये पत्नियां भी कई बार सिर्फ अपने लिए सोचती हैं। घर की परेशानियां इनको अजगर सी लगती और ऑफिस की दिक्कतें अनाकोंडा सी होते हुए भी हमारे जहन में छुपी रहती थी।

शादी के १७ साल बीत गये थे। परिवार की जिम्मेदारियां पूरी करते-करते कनपटी पर सफेद बालों की चांदनी बिखरने लगी थी एक छोटी-सी कंपनी में क्लर्क की नौकरी से सुनील आज इतने बड़े ओहदे पर पहुँच गया था, तो सिर्फ और सिर्फ अपनी मेहनत और इमानदारी से काम करने के बलबूते पर।

१६ साल का किट्टू और १४ साल का बिट्टू अपनी अपनी कक्षा में अच्छे स्थान प्राप्त करते थे, माँ-बाबा सुख से अपना बुढ़ापा बिता रहे थे। निम्मी को अब फुर्सत के कुछ पल मिलने लगे थे, तो उसके अरमानों ने भी उड़ान भरनी शुरू कर दी थी। उसने घर पर खाली समय में पेंटिंग्स बनानी शुरू कर दी थी।

पर कितनी पेंटिंग बनाती? कुछ ही दिनों में उसकी बोरियत फिर से शुरू हो गयी। अब उसका पूरा ध्यान घर-भर पर लगा रहता। कौन क्या कर रहा हैं, कहाँ हैं? बस सारा दिन यही उधेड़बुन में लगी रहती। बच्चों को जरा देर हो जाए ट्युशन से आने में, तो घर आँगन में चक्कर लगाने शुरू कर देती। माँ अगर दो से तीन बार किसी बात को पूछ ले, तो हमेशा से हँसने वाली निम्मी अब चिडचिड़ा जाती। बच्चे भी परेशान हो जाते कि माँ को हुआ क्या है? अब स्कूल से आकर बच्चे छोटी-छोटी बातें भी माँ को नहीं बताते। क्या पता माँ किस बात पर कैसा रियेक्ट करे।

उम्र और व्यस्तता एक नारी को इतना नही तोड़ते जितना एकाकीपन और एकरसता। सारा दिन घर भर के लिए मरने-खपने वाली नारी एकाकी हो जाती हैं उम्र के चौथे पड़ाव पर, जहाँ बच्चों को माँ की जरूरत परोक्ष रूप से होती हैं प्रत्यक्ष रूप से नहीं। उनकी अपनी एक दुनिया बसने लगती हैं। पति अपनी दुनिया में बिजी हो जाते हैं और एक गृहिणी घर के अलावा कुछ सोच नहीं पाती। होती होंगी और महिलायें जो घर के साथ बाहर भी खुश रहती होंगी, पर निम्मी की दुनिया सिर्फ उसके बच्चे और सुनील के माँ-बाबा थे। सुनील का प्यार उसके लिए सब कुछ था। और इस तरह की समर्पित-सी लडकियां कुछ अपने लिए सोच भी नहीं पाती। ऐसे में कुछ आत्ममुग्ध लडकियां शादी के बाद नून-तेल-लकड़ी (कार, घर, बैंक बैलेंस, जिम्मेदारियां, बच्चे) के चक्कर में फंसकर रह जाती हैं और तब प्रेम का कोना उनका सूना सा होने लगता है। रूटीन से पति पत्नी का मिलना एकरसता सा भर जाता है।

निमिषा बहुत ही शोख चंचल परन्तु समझदार लड़की थी। सुनील को याद है कि शादी के शुरू के दिनों में कैसे उसको रोजाना नए-नए रूप में मिलती थी। जब कहीं घूमने जाते तो अच्छे से तैयार होकर निकलती थी। उसका सादापन इक सौंधापन लिए होता था। कपड़े बहुत ज्यादा नहीं थे परन्तु उनको इस सलीके से पहनती थी तब लगता ही नहीं था कि पहले भी कितनी बार उस लिबास को पहन चुकी हैं। रहती अभी भी साफ सुथरी हैं। परन्तु अब उसको कहीं बाहर जाने के लिए तैयार होना मुसीबत लगता है। घर घुस्सू होकर रह गयी है।

सुनील ऑफिस में परेशान हो गया निम्मी उसकी लाइफ लाइन है। अगर वोह इस तरह उदास और निराश होने लगेगी तो कैसे चलेगी जिन्दगी? अगर आज वोह दिन रात मेहनत करता है ऑफिस में, तो अपने घर परिवार के लिए ही न। उसका भी मन करता हैं कि कभी अपने लिए जिये, कभी खो जाये अपने भीतर।

लोग हमेशा नारी मन की कोमल भावनाओं का बखान करते हैं। एक पुरुष भी भीतर से कोमल होता हैं उसका मन भी चाहता है कि उसके किये का उसको क्रेडिट मिले। उसकी मेहनत को समझा जाये। पर होता क्या है। पुरुष को एक बरगद का पेड़ जैसा समझ लिया जाता है। जो सब सुरक्षा दे आश्रय दे सहारा दे, परन्तु खुद हर मौसम में अडिग सा खड़ा रहे। जबकि हर पुरुष भी कोमल भावनाएं रखता है। परेशानियों में उसके माथे पर भी बल पड़ते हैं। वोह भी रोता है जब उसका दिल टूटता है। परन्तु उसके आंसू कभी कोई देख नहीं पाता। दर्द अपनों का उसकी आँखें भी पढ़ लेती हैं परन्तु एक नारी जैसा बयां नहीं कर पाती उसकी जुबान।

मन उदास हो गया सुनील का। जरा भी नही समझती निम्मी कि काम का कितना दबाव रहता है ऑफिस में और ऐसे दबाव में काम करने पर अगर जरा भी त्रुटि हुई तो नौकरी में कितनी परेशानियां खड़ी हो सकती हैं। पर क्या करे काम तो करना ही होगा न। सोचते हुए उसने अगली फाइल उठाई और पढ़ने लगा।

उधर निम्मी ने भिगोने में चावल डालकर गैस पर चढा दिए। चावल के हर दाने के साथ-साथ उसका कच्चा मन भी पकने लगा उम्र बढ़ रही हैं। परन्तु जरा भी परिपक्वता नहीं आ रही उस में। क्यों कई बार बच्चो सी बिफर जाती हैं वो? क्यों आज भी उसका मन पहले की तरह चाहता है कि सुनील शाम को घर आये। आते ही उसे अटेंड करे। उसकी दिन भर की बातें सुने, माने और रात भर उसकी तारीफ करता रहे। प्यार करता रहे। मन है न कितना कमीना हो जाता है कभी कभी सिर्फ अपने लिए सोचने लगता है। दूसरे पर क्या बीत रही हैं जानकर भी अनजान बने रहना चाहता है। चलो रात को सुनील से इस पर अच्छे से बात करूंगी। सोचते सोचते निम्मी ने रसोई का सारा काम खत्म किया और गुलाबी सूट पहन कर सुनील के आने की बाट जोहने लगी।

ऑफिस का फोन बज रहा था। सुनील आँखों से फाइल पढ़ रहा था और मन ना जाने कितनी उधेड़ बुन में व्यस्त था। फोन कानों में लगाकर जैसे उसने हेल्लो कहा। उधर से बॉस का कॉल था कि उसको उत्तराखंड के एक शहर में एक महीने की स्पेशल ड्यूटी पर जाना होगा तनख्वाह डबल मिलेगी। वहाँ कम्पनी को नया ऑफिस खोलना है तो सुनील को वहां के कर्मचारियों को काम कैसे करना है ट्रेनिंग देना होगा। सुबह १० से ८ बजे तक ड्यूटी होगी सुनील ने मरे हुए मन से जैसे हाँ कहा। उसे पता था निम्मी और गुस्सा हो जाएगी एक तो वोह पहले ही नाराज रहती है कि आप वक्त नहीं देते उस पर एक महीना तो क्या?

ऊहापोह में फंसा सुनील घर के लिए उठ खड़ा हुआ। आज थोड़ा जल्दी जाया जाए मैडम जी नाराज हैं आज। सोचते-सोचते उसने चपरासी को अपनी कार निकालने को कहा। रास्ते में रेड लाइट पर एक लड़की गजरे बेच रही थी। कितना पसंद था न निम्मी को मोगरे का गजरा उसने १० का नोट देते हुए गजरा ले लिया था जिसे अपने लैपटॉप बैग में छिपाकर रख भी लिया।

घर में घुसते ही उसे अपने पसंदीदा मसाले वाले बैंगन की खुशबू आई। हम्म! तो निम्मी को भी अफसोस हैं आज दिन में मुझे गुस्सा करने का। निम्मी की आदत थी जब भी नाराज होती तो उसके बाद सॉरी कहने का उसका अलग ही अंदाज होता। उस दिन उसकी बिंदिया का साइज थोडा बड़ा होता और घर में रसोई से उसकी मनपसंद खाने की खुशबू आती। शब्दों से नहीं अपनी भाव भंगिमाओ से सॉरी कहती थी। उसके बाद का सारा काम सुनील का होता था। उसके प्यार का प्रति उत्तर उसे उसी सकारात्मकता से देना होता था। बस बिना सॉरी शब्द का प्रयोग किये वोह एक-दूसरे के और करीब हो जाते। सब गुस्सा गिले-शिकवे भूलकर सुनील आज हाथ मुंह धोकर जैसे ही टेबल पर खाने के लिए बैठा तो माँ ने कहा- 'सुनील, इस बार छुट्टियों में बच्चों को लेकर गाँव जाने की सोच रही हूँ। बच्चों में गांव के संस्कार भी होने चाहिए न। उनको भी अपनी मिट्टी से जुड़े रहना चाहिए और वहां के रिश्तेदारों से जुड़ाव भी महसूस करना चाहिए। ऐसे तो बच्चे भी पत्थर की इमारत बनकर रह जायेंगे, अगर उनमें प्यार का, अपनेपन की भावनाओं का सागर नहीं बहेगा तो।'

(शेष अगले अंक में)

मुखौटा इस जमाने में कभी अच्छा नहीं लगता
हकीकत हो फसाने में कभी अच्छा नहीं लगता
छोड़ घर को गया था जो गुलामी दे दिया उसको
मुहाजिर हो निशाने में कभी अच्छा नहीं लगता
शरीफों के लहू से हाथ हों जिसके सने अक्सर
वो जाए फिर मदीने में कभी अच्छा नहीं लगता
शरीयत से तुम्हारा वास्ता मुमकिन नहीं शायद
तू अपने कत्लखाने में कभी अच्छा नहीं लगता
दुश्मनी पर वजूदे शाख जिन्दा हो यहां जिसकी
दोस्त कहकर बुलाने में कभी अच्छा नहीं लगता
बहुत नापाक होगा ये जो तुझको पाक मैं कह दूं
राज दिल का छुपाने में कभी अच्छा नहीं लगता
सपोले पालने वालों से दुनिया हो चुकी वाकिफ
उसे फिर बरगलाने में कभी अच्छा नहीं लगता
शिकस्तों से मुहब्बत है तुम्हारे मुल्क को अच्छी
तुम्हें अब आजमाने में कभी अच्छा नहीं लगता

-- नवीन मणि त्रिपाठी

किस लिए आँसू बहाने हैं किसी के सामने,
हर उदासी टूट जाती इक खुशी के सामने
चंद सिक्कों से किसी का कद कभी बढ़ता नहीं
झुकती हैं सौ गलतियाँ भी इक सही के सामने
आदमी के हौसले मजबूत हों तो दोस्तो
हार जातीं मुश्किलें भी आदमी के सामने
ज्ञान का दीपक जलाना सीख जाए आदमी
टिक नहीं पाते हैं तम फिर रौशनी के सामने
बोलता है आदमी का काम ही संसार में
मार ही खाता है छल, जिंदादिली के सामने
दौर कोई भी रहा हो, एक जैसे स्वाल थे
उस सदी के सामने या इस सदी के सामने

-- छाया शुक्ला 'छाया'

गला के हाड़ अपने खास कुछ सामान जोड़े हैं
हकीकत ने सदा ही खूबसूरत ख्वाब तोड़े हैं
खुला आकाश सर पे है तना धरती बिछौने सी
गरीबी नाम है जिसका वहाँ सौ रोग थोड़े हैं
सितारों की न पाली आरजू दिल में कभी हमने
उजाले राह से लेके अँधेरे आज मोड़े हैं
अँगूठा काट लेंगे ये तुम्हें अपना बतायेंगे
लुटेरे हैं सभी देखो भलों का भेष ओढ़े हैं
बना देंगे तुझे पत्थर खुदा खुद ही बनेंगे ये
लगेगी दाँव पर अस्मत तुम्हारी ये निगोड़े हैं

-- अनिता मण्डा

मुस्कुराते होंठ आँखों में नमी कैसे कहूँ
पास में दुनिया मगर, तेरी कमी कैसे कहूँ
आप को खोकर हमारी जिंदगी बेजार है
किस्मतों में स्याह रातें, चांदनी कैसे कहूँ
भूल बैठे हैं खुदा को आपको पाकर सनम
पूजते हैं आपको, पर बन्दगी कैसे कहूँ
आप से जिन्दा हमारी धड़कनों की चाल है
साँस चलती है मगर, अब जिंदगी कैसे कहूँ
'धर्म' तेवर तल्ख तेरा रास जग को है नहीं
चाटुकारी सीख ले, आदत भली कैसे कहूँ

-- धर्म पाण्डेय

चांदनी हमें जलाती रही रात भर
आपकी याद सताती रही रात भर दिल मैं
नाउम्मीदी सी जलती बुझती
यादों की शमां झिलमिलाती रही रात भर
तिरी खुशबु से महकता रहा जिस्म मेरा
तिरी तस्वीर को सुलाती रही रात भर
चाँद तारे छुप गए निशाँ के आँचल में
हवायें नगमे गुनगुनाती रहीं रात भर वो
आकर भी न आया पास मेरे कभी
दिल की सदायें बुलाती रहीं रात भर
जिसकी उम्मीद में जीते रहे 'आशा' हम
उसकी तड़प हमें जगाती रही रात भर

-- राधा श्रोत्रिय 'आशा'

आज मुझसे मेरा ही सामना है
इसलिए मन थोडा अनमना है
हर झगड़े की यही है एक जड़
सभी को एक दूसरे से घृणा है
इस हार को भी तुम जीत मानो
दुश्मनों से भला क्या हारना है
खुद की नजरों में जो उठ न सके
ऐसे इंसान को क्या मारना है
जान देकर डूब जाने को सतह तक
आज उसको लोग कहते साधना है

-- अखिलेश पाण्डेय

अनकहे अल्फाजों और झुकी पलकों में
छुपी हुई कहानी कुछ खास तो है
तकती हैं राहों को हर पल ये निगाहें
तुम्हारा इंतजार मिलन की आस तो है
गिला करो या शिकवा या फेर लो नजरें
इस बेरूखी में प्यार का एहसास तो है
तुम कर दो कतरा-कतरा इस दिल को
धड़कते हुए सीने में अंतिम साँस तो है
जुदाई गर बन गयी है नसीब अपना
गम नहीं यादों का समंदर पास तो है
मिल जाएँ आती-जाती लहरों की तरह
क्षितिज पर मिलन का आभास तो है
चटके शीशों को जोड़ आईना कर देना
हुनर यह आम नहीं कुछ खास तो है

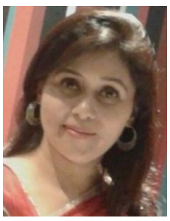

-- रोचिका शर्मा, चेन्नई

सोचते हैं बारहा क्यूँ हम सयाने हो गए
हो गए हैं हम नए रिश्ते पुराने हो गए
बात क्या है मिन्नतें रोती बहुत हैं आजकल
ख्वाहिशों को मुस्कुराए तो जमाने हो गए
बीनती कूड़ा जो बच्ची खेलने की उम्र में
सिर्फ इक सिक्के में उसके गुम खजाने हो गए
जब जवाँ बेटे की अर्थी को उठाना पड़ गया
तो अचानक बाप के कमजोर शाने हो गए
गुनगुनाते शहर में मनहूसियत रहने लगी
गूँजती है चीख हरसू चुप तराने हो गए
तीरगी हड़ताल पे बैठी फलक को छोड़कर
रोशनी के तेरे 'पूनम' कारखाने हो गए

-- पूनम पाण्डेय

अपने उजड़े हुए दयार की कहानी हूँ मैं
चीर दे दिल को उस गम की निशानी हूँ मैं
आरजू बन कर कभी दिल में निहाँ रहता था
खिजाँ ने लूट ली बहार, दास्ताँ-ऐ तबाही हूँ मैं
नजर के सामने कौंधी बिजली की लकीर हूँ मैं
कोई बता दे मेरे माजी को अब बेमानी हूँ मैं
साजे-जिन्दगी का इक शिकस्ता तार हूँ मैं
'नाज' नासूरे-गम छुपाए जीस्त की रवानी हूँ मैं

-- प्रीति दक्ष 'नाज'

भूख का भूगोल अब पढ़ना कठिन है
डूबना आसान पर तरना कठिन है
मूर्ति की पूजा करो या जाप भी
दुखी के संग चार पग चलना कठिन है
चीखती है भुखमरी मुख फाड़ कर यूँ
खेद उसका चाह कर हरना कठिन है
धूप भी करती नहीं है गरम तन को
ठूँठ में एहसास अब भरना कठिन है
क्लेश होंगे दूर, ऐसी जंग छिड़नी चाहिए
उपयोग करलो वक्त का, वरना कठिन है
'कल्प' ऐसे समय को क्या नाम दे दूँ ?
मन साध के भी कर्म अब करना कठिन है

-- कल्पना मिश्रा बाजपेई

गीत बन गुनगुनाती रही जिंदगी
प्रीति सी लहलहाती रही जिंदगी
देखि किसलय भ्रमर गीत गाने लगे
चाह बन के सजाती रही जिंदगी
भावना आरजू की सजाये रहे
मीत बन प्रीति लाती रही जिंदगी
राज भी देखता है अजब चाँदनी
दीप बन कर दिखाती रही जिंदगी
ठंड लगती रही दिल तड़पते रहे
साज बन गुनगुनाती रही जिंदगी

-- राजकिशोर मिश्र 'राज'

कौन सा घर अपना

किरण सिंह

काफी देर से मोबाइल रिंग कर रहा था जल्दी से काम छोड़कर मैंने जैसे ही मोवाइल उठाया उधर से नेहा की कुछ घबराई हुई आवाज आई- 'किरण तुम फ्री हो?' मेरे 'हाँ' कहने पर कुछ देर सोचकर कहती है- 'क्या करें किरण देखो ना मेघा का हसबैंड आया हुआ है। (मेघा नेहा की बहन जिसका विवाह हुए करीब छः महीने हुआ था।) मैं सोंच में पड़ गई कि आखिर अपने बहनोई के आने से नेहा खुश होने के बजाय परेशान क्यों है? वो बोल रही थी, 'यशस्वी (मेघा का पति) कह रहे हैं कि अपने माँ-पापा को समझाकर मेघा को मायके में बुलवा लीजिए। बहुत जिद्दी है मेघा। मेरे परिवार में किसी के साथ नहीं बनता है उसकी। छोटी छोटी चीजों के लिए भी सभी से झगड़ा करती रहती है। सबसे इतना व्यवहार खराब कर ली है कि कोई उसे पानी देने वाला भी नहीं है आदि आदि। कई तरह की उलाहने दे रहा था।'

मैंने कहा कि 'फिर बोल दो अपने माँ पापा से बुलाने के लिए, क्या दिक्कत है बुलाने में?'

नेहा कहने लगी कि मेघा मायके में आना ही नहीं चाहती है! यशस्वी तो बोल रहे थे कि मेघा को कुछ नहीं बताइयेगा नहीं तो वो आत्महत्या कर लेगी। कई बार जलने की कोशिश कर चुकी है। चूंकि प्रेग्नेंट है तो उसे परेशानी नहीं हो। इसलिए मैं डाक्टर से बेडरेस्ट के लिए लिखवा लूंगा और पूरा खर्च भी मैं ही दूंगा। प्लीज उसे कुछ भी नहीं बताइयेगा कैसे भी करके बुलवा लीजियेगा!

मैं सोच में पड़ गई कि आखिर ऐसा कैसे हो सकता है। चूंकि नेहा मेरी सहेली के साथ-साथ मायके की सबसे करीबी पड़ोसी की बेटी भी थी। इसलिए मैं नेहा के पूरे परिवार से अच्छी तरह से परिचित थी! विश्वास ही नहीं हो रहा था कि मेघा ऐसा कर भी सकती है। आखिर विश्वास भी कैसे करती? अभी कुछ ही दिन पहले मैं जब बलिया (मायके) गई थी। मेघा पहली बार ससुराल से आई थी। उसके साथ साथ उसकी जेठानी की बेटियां भी अपना बैग तथा स्कूल बैग लेकर आई थीं। कह रही थी कि 'मैं चाची के साथ ही रहूँगी, नहीं जाऊँगी मम्मी के पास। चाची बहुत अच्छी है।'

ये बात मुझे यह सोचने पर विवश कर रही थी कि जब मेघा इतनी बुरी होती तो जेठानी की बेटियां उसके साथ रहना क्यों चाहती? दूसरी बात कि जब मेघा मायके में रहती थी तो उसके ससुराल वाले हमेशा ही मिलने आते थे। उसे तरह-तरह का उपहार लाते थे। कभी महंगे कपड़े तो कभी गहने आदि आदि! मैंने नेहा से कहा कि अभी तुम आराम करो। यशस्वी को भी समझाओ और तुम्हारी बहन से भी तुम्हारा खून का रिश्ता है। आखिर कितनी गलत हो सकती है वह? कम से कम अपने खून पर तो विश्वास करो! तब नेहा ने 'ठीक ही कह रही हो' ऐसा कहकर मोबाइल काट दिया।

करीब एक महीने बाद मैं भी होली में बलिया गई हुई थी। संयोग से होली मिलने यशस्वी और मेघा भी आए हुए थे। मैं भी उनसे मिलने उनके घर गई। मेघा अन्दर थी और यशस्वी नेहा और मेघा के मम्मी पापा के साथ बैठकर धीरे-धीरे कुछ बातें कर रहे थे। इस प्रकार जैसे कि कोई चोर चोरी करने का योजना बना रहा हो। मैने थोड़ा ध्यान दिया तो सिर्फ यशस्वी के मुंह से मेघा की शिकायत सुनी! सुनकर मुझसे रहा नहीं गया और मैं पूछ ही बैठी- 'आखिर मेघा ऐसा करती ही क्यों है कोई तो वजह होगी?'

तब यशस्वी अपने चेहरे से कुछ नाराजगी का भाव छुपाते हुवे बोले- 'ये सब मेरी भाभी और मेघा के बीच का मामला है। इन दोनो लोगों की आपस में नहीं बनती इसलिए मैं चाहता हूँ कि मेघा यहीं रहे फिर गर्मी की छुट्टियों में जब भाभी अपने मायके जाएंगी तो मैं मेघा को फिर बुला लूंगा! फिर तो मुझे और भी शक होने लगा कि आखिर ऐसे कैसे चलेगा और सिर्फ इसलिए कोई अपनी पत्नी को मायके क्यों भेजना चाहेगा! तभी मेघा के कमरे में प्रवेश होता है और पूरा वातावरण शान्त जैसे चोरी करते समय पुलिस अचानक पहुंच गई हो।

यशस्वी मेघा को छोड़कर चले गए यह कहकर कि कुछ देर में आता हूँ। मेघा परेशान हो गई, जो उसके चेहरे पर स्पष्ट दिखाई दे रहा था। फिर भी मुस्कुराने का अभिनय कर रही थी। रात करीब दस बज गया और उसका पति नहीं आया, तो वह अपने पति के मोबाइल फोन पर कॉल करने लगी किन्तु यशस्वी का मोबाइल स्विचऑफ था। फिर तो मेघा और भी परेशान हो गई। मेघा का ससुराल भी उसके मायके से करीब दो किलोमीटर दूरी पर ही था। मेघा ने मुझसे छोड़ने के लिए आग्रह किया। मैंने भी उसे परेशान देखकर अपने ड्राइवर को उसके ससुराल में छोड़ने के लिए बोलकर अपने घर वापस चली आई।

रात करीब १२ बजे अचानक हल्ला सुनकर मैं भी बाहर निकली, तो मेघा को देखकर मेरे होशोहवास उड़ गए! चेहरे पर थप्पड़ के कई निशान, आँखों के नीचे से खून टपक रहा था। खुदा का खैर था कि आँखें बच गई थी। जगह जगह पर कपड़े फटे हुए और धूल से सने हुए थे जिससे सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि उसे बेरहमी से पिटाई कर के घसीटा गया था! डर और शर्म से उसके होठ सिल गए थे। सिर्फ उसकी आँखें उसका हाल बयां कर रही थीं! और मैं मन ही मन दुखी मन से उस पहेली को सुलझाने में लग गई थी।

उस रात मैं भी नेहा के घर पर ही रुक गई। मेघा से सच उगलवाने में कामयाब हो रही थी। उसके एक एक शब्द के साथ साथ पिघलती वेदना आँखों के रास्ते अश्रु बनकर निकल रही थी।

मेरे पूछने पर मेघा कहने लगी जब मैं ससुराल पहुंची, तो सभी की निगाहें मुझे ही घूर रही थी। मैं सीधे अपने बेडरूम में पहुंची जो अंदर से दरवाजा बंद था। मेरे पास दूसरी चाबी थी और मैंने दरवाजा खोलकर अंदर प्रवेश किया, तो अंदर यशस्वी और उसकी भाभी को एक साथ...' कहते कहते वो रुक गई, किन्तु उसकी भाव भंगिमाओं से मैं समझ गई जो वो कहना चाहती थी। उसके चेहरे पर यशस्वी और उसकी भाभी के लिए घृणा का भाव स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

वो अपना आँसू पोछते हुए फिर कहने लगी- 'मेरे जोर से चिल्लाने पर मुझे यशस्वी बेरहमी से पीटने लगे और बोलने लगे कि यदि तुम अपनी जुबान खोलोगी तो मैं तुम्हारे साथ-साथ तुम्हारे पूरे परिवार को जान से मार दूंगा! तुम्हें और तुम्हारे बहन को बदनाम कर दूंगा जिससे उसकी शादी नहीं हो पाएगी आदि और उनकी भाभी ने बगल में रखे हुए ताले से मेरी आँखों पर जोर से प्रहार किया कि तुम्हारी आँखों को ही मैं फोड़ दूंगी। फिर दोनों ने मिलकर मुझे घसीटते हुए घर से बाहर कर दिया! मुहल्ले में सभी से कह दिया था उन लोगों ने कि मुझे पागलपन का दौरा पड़ता है! साबित करने के लिए कभी ऊपर से गमला फेंककर तो कभी बर्तन फेंककर कह दिया जाता था कि मैंने ही फेंका है!

अब मुझे यशस्वी का सारा फरेब समझ में आने लगा था कि क्यों वो मेघा को मायके में भेजने के लिए इतना फरेब कर रहा था। सबसे गुस्सा तो नेहा और उसके मम्मी-पापा पर आ रहा था कि एक फरेबी के कहने पर अपनी बहन बेटी पर अविश्वास कैसे कर लिया? क्यों नहीं पढ़ पाई वो अपनी बहन बेटी के आँखों में छुपे दर्द को? क्यों बेटी विदा करते समय दे दिया उसे दीक्षा कि दोंनो घर का इज्जत तुम्हारे हाथ में है! चाहे उस खोखली इज्जत के लिए कितना ही कष्ट झेलना क्यों न पड़े बेटियों को!

शायद इसी झूठी इज्जत बचाने के चक्कर में पिस रही थी मेघा, घुट रही थी अपने आप में। बेचारी कहती भी किससे? बेटियों को तो शुरू से ही पराया धन कहकर उसे दान कर दिया जाता है और दान दी हुई वस्तु का अधिकार ही कहां होता है? कौन सा घर अपना है बेटियों का बेचारी समझ ही कहां पाती हैं! ■

ग़ज़ल

यूँ अहले-यकीं के भरम देखते हैं
तमाशा-ए-दैरो-हरम देखते हैं
ख्वाबो-खयालों में, बुत में, हरम में
तुम्हारी ही सूरत, सनम देखते हैं
समंदर में कश्ती को करने से पहले
मुखातिब हवाओं का दम देखते हैं
यूँ क्या देखते हो, जो पूछा तो बोले
'तुम्हें न दिखेगा जो हम देखते हैं'
चढ़ाए हुए हैं गरज के जो चश्मे
वो,तय है, निगाहों से कम देखते हैं
'होश' मोहब्बत में दिल देने से पहले
तरीका-ए-अहले-सितम देखते हैं

-- मनोज पाण्डेय 'होश'

कहानी

मकसद

शांति पुरोहित

स्लेटी रंग की सूती बारीक प्रिंट की साड़ी, आकर्षक नैन-नक्श, कलाई पर सुनहरे रंग की घड़ी में मिस रूपा का व्यक्तित्व अत्यंत सुंदर लग रहा था। फैशन डिजायनर रूपा का अपने बुटिक में आते ही काम में व्यस्त हो जाना, अपने स्टाफ को काम समझाना, ये उनका डेली का रूटीन था। 'मिस डिसूजा, मिस रूबी का आर्डर रेडी हुआ कि नहीं?'

डिसूजा कुछ जवाब देती, उससे पहले ही रमेंद्र से पूछ बैठी 'आस्था मेम की ड्रेस के लिए कल जो डिजायन आपको दिया था, वो ड्रेस रेडी हुई की नहीं?'

'अरे! जल्दी-जल्दी सबके आर्डर तैयार करो! दीपावली का त्यौहार है सबको समय पर अपना आर्डर चाहिए होता है। पर आज रूपा का मन कहीं और है वो आफिस में आराम कुर्सी पर बैठ गयी। त्यौहारी सीजन के चलते साँस लेने भर की भी फुर्सत नहीं है। थकान सी हो रही थी। उठकर आफिस की खिड़की खोली तो हल्की सुनहरी धूप आफिस में प्रवेश कर गयी। दिसंबर माह में धूप सुहानी लगती है। धूप में बैठना रूपा को बचपन से ही अच्छा लगता था। रूपा धूप का आनंद लेने लगी।

दिमाग को एकांत मिलते ही मन गुजरे वक्त की खट्ठी-मीठी यादो में गोते लगाने लगा। भारतीय स्त्री का जीवन एक ऐसी महागाथा है जो सदियों से विचारकों के लिए 'विमर्श' का केंद्र-बिन्दु रहा है आज भी स्त्री की स्थिति वह नहीं बन पाई जिसकी वह सदियों से अपेक्षा करती आई है। बचपन, बुढ़ापा, युवावस्था, वैवाहिक जीवन हो या सामाजिक जीवन, स्त्री को हर कदम पर संघर्ष ही करना पड़ता है। 'इकलौती संतान थी, पापा मुझे डाक्टर बनाना चाहते थे वो खुद भी डाक्टर थे। वो अपना क्लिनिक मुझे सौंप कर खुद लोगों की फ्री सेवा करना चाहते थे। मेरी रूचि फैशन डिजायनर बनने में थी। अपना खुद का बुटिक खोलना चाहती थी। मम्मी हमेशा मेरा ही साथ देती थी। पापा को समझाती 'आप क्यों अपनी मर्जी बच्ची पर थोप रहे हो, उसे जो करना है करने दो? पापा को मम्मी की बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता था। वो अपनी जिद पर अड़े थे और मै अपनी।

आखिर मेरा सीनियर का रिजल्ट आने के बाद मम्मी ने पापा को समझा-बुझाकर मेरा एडमिशन फैशन डिजाइनर के कोर्स के लिए करवा दिया था। मैं बहुत खुश थी। अभी मेरा डिप्लोमा पूरा हुए एक माह ही बीता था कि पापा-मम्मी ने मेरा रिश्ता एक इंजिनियर लड़के निलेश से पक्का कर दिया था। बहुत कोशिश की, अभी शादी ना हो, मैं पहले अपना बुटिक खोलना चाहती थी। पापा ने मेरी एक न सुनी और कुछ समय बाद शादी हो गयी। मेरी इच्छा मेरे मन के किसी कोने में दबकर रह गयी। ससुराल में पति निलेश के पापा-मम्मी एक बहन और दादी थे। नई बहु से सबको बहुत सी अपेक्षाए होती है यहाँ भी थी। सब की इच्छा पूरा करने मे अपना सपना याद ही नई रहा।

निलेश की नौकरी अभी लगी ही थी तो वो मुझे बहुत कम समय दे पाते थे। अक्सर टूर पर जाना होता था। समय अपनी गति से चलता रहा। एक साल बीत गया। आखिर आज निलेश के जन्मदिन के अवसर पर अपनी बात कहने का मौका मिला 'मुझे बुटिक खोलना है प्लीज मेरी मदद कीजिये न आप।' मैंने बहुत ही प्यार से कहा। 'अरे ! इसमें प्लीज बोलने की क्या जरूरत है? तुममें योग्यता है, काम करना चाहती हो। मैं कल ही लोकेशन देख कर बताता हूँ। तम्हारा साथ देना मेरा फर्ज है।' मै आज बहुत खुश थी। पर जैसे ही सासु माँ को पता चला उन्होंने तुरंत आदेश दे दिया 'पहले हम घर में अपने पोते-पोती को देखना चाहते हैं बुटिक बाद में खोलना।'

इंसान यदि गृहस्थ धर्म में प्रवेश करता है तो प्रथम उसे अपनी घर की जिम्मेदारी उठाना पड़ता है। गृहस्थ धर्म को सर्वश्रेष्ठ धर्म का दर्जा दिया गया है। माँ जी का आदेश था तो निलेश भी चुप रह गया। मैं एक बार फिर मन मसोस के रह गयी। दिन, महीने, साल निकलते रहे, इसी दौरान मैं एक बेटी और एक बेटे की माँ बन गयी थी। अब तो मेरा एक ही काम रह गया था बच्चों, निलेश और ससुराल वालों की सेवा करना। इन सबके बीच मेरी कला अपना दम तोड़ रही थी। कभी नहीं सोचा था कि मेरी पढ़ाई और हुनर का यह हाल होगा। निराशा मेरे अन्दर घर कर गयी। समय बीतता रहा अब मेरी बेटी नीता कालेज जाने लगी और बेटा निर्भय भी अगले साल कालेज जाने लगेगा।

अगले सप्ताह नीता के क लेज मे वार्षिक उत्सव होने वाला था। नीता ने फैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता में भाग लिया था। उसने टेलर से जो ड्रेस बनवाई वो उसे बिलकुल भी पसंद नहीं आयी। नीता उदास हो गयी। आज फिर किसी अन्य टेलर के पास गयी। बेटी की उदासी मुझसे देखी नहीं गयी। तभी मुझे अपनी कला का ख्याल आया। मैंने आज अपनी कला का उपयोग करके बड़े ही मनोयोग से बेटी के लिए ड्रेस तैयार कर ली।

शाम को जब नीता उदास चेहरा लेकर घर वापस आयी। 'कुछ काम नहीं बना क्या?' मैंने पूछा। 'नहीं माँ!' तभी उसके हाथ में वो ड्रेस रखी मैंने। नीता खुशी से उछल पड़ी, 'वाह माँ, आपने कहाँ से बनवाई ड्रेस? बहुत अच्छी है मुझे एसी ही ड्रेस चाहिए थी।' तभी मेरी सासु माँ ने उसे कहा, 'तेरी माँ रूपा ने ही बनाई है। आज हमें अपनी गलती का एहसास हो रहा है।' 'किस गलती का दादी?', नीता ने कहा। रूपा बहू इतनी टेलेंटेड है, पर हमने इसे घर के कामों में लगाकर रखा, इसकी कला का कभी सम्मान नहीं किया।' सासु माँ ने कहा, तो नीता बोली, 'अब भी मम्मी अपना बुटिक खोल सकती हैं, अब तो हम भी अपना काम खुद कर सकते हैं।'

शाम को निलेश आया सासु माँ और नीता ने उन्हें सब बताया। नीता ने पापा से कहा, मम्मी इतनी योग्य थी, अपना बुटिक खोलना चाहती थी, तो आपने मम्मी को सपोर्ट क्यों नहीं किया? एक पति को तो अपनी पत्नी की योग्यता की कद्र करनी चाहिए थी।' निलेश को सच मे अपनी गलती का एहसास हुआ और निलेश ने अगले ही दिन अति व्यस्त बाजार मे एक दुकान देख ली और जोरों से तैयारियां चलने लगीं।

प्रतियोगिता में नीता का पहला स्थान आया। नीता भी मेरी मदद करने में लग गयी। आखिर पांच माह के बाद आज मेरे बुटिक का उद्घाटन था। जो मैंने अपनी सासु माँ और ससुर जी के हाथों कराया। बहुत सारे कपड़े लोगों ने खरीदे साथ ही इतने आर्डर आये मैं एक साल तक के लिए एक साथ व्यस्त हो गयी। आज तो मेरे बनाये कपड़े देश के अन्य भागों में भी जाने लगे हैं। यह सब मेरी बेटी और सासु माँ के कारण ही हुआ है।

'मेम साब, चाय!', मिस डिसूजा की आवाज से मेरा चिंतन खत्म हुआ। जब जागे तभी सवेरा वाली बात मुझ पर फिट बैठी है। आज मेरा वर्षों पहले देखा सपना साकार हुआ है या यूं सोच लीजिये कि मेरे जीने का मकसद अब मुझे मिला है। ■

कुंडलियां

घर घर बाजे बाजना, तोर मोर परिवार
मन की मन में रह गयी, कागा खाय विचार
कागा खाय विचार, भले बहि जाए माटी
खुन्नस की दीवार, बनाये कद अरु काठी
कह गौतम कविराय, नैन भरि आये झर झर
परबस है समुदाय, विरानी छायी घर घर

फुरसत में जीवन नहीं, जीवन बहुत महान
माया ममता मन धरी, जानत सकल जहान
जानत सकल जहान, जन्म यह कर्म भोग है
मन में कर संकल्प,
नत जीवन संयोग है
महिमा माँ की मान,
जग होय रही बरसात
करहु पाठ नवरात, लेहु
नवदिन महिं फुरसत

-- महातम मिश्र 'गौतम'

मुक्तक

मेरी बात अच्छी लगे तो जमाने को बता दो,
राष्ट्रविरोधी सत्ता के दलालों को समझा दो।
देश की अस्मिता पर जब भी सवाल उठे,
गद्दारों को तत्काल मौत की नींद सुला दो।।

-- डॉ अ. कीर्तिवर्धन

गौमांस खाने के समर्थन में दिए जा रहे कुतर्कों की समीक्षा

डा. विवेक आर्य

दादरी ग्रेटर नोएडा के गांव में हुई घटना निस्संदेह रूप से निंदाजनक है। अगर गोहत्या हुई थी तो उसे प्रशासन द्वारा गोहत्या, धार्मिक सौहार्द एवं हिन्दुओं की भावनाओं को भड़काने के आरोप में कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए थी। यह घटना एक और तथ्य को सिद्ध करती है। जिस प्रकार से १८५७ की प्रथम क्रान्ति गौहत्या के संवेदनशील मुद्दे से जुड़ी थी, उसी प्रकार से आज भी जुड़ी हैं। मगर इस देश का एक विशेष वर्ग हिन्दू समाज की इस भावना को न समझकर उलटे सीधे कुतर्क देकर उन्हें गलत सिद्ध करने का असफल प्रयास कर रहा हैं। एक अश्लील उपन्यास बेच कर पेट भरने वाली लेखिका शोभा डे हिन्दुओं को यह चुनौती दे रही है कि आज मैंने गौमांस खाया है। आओ मुझे मार कर दिखाओ। उन मोहतरमा ने यह नहीं पहचाना की हिन्दू समाज स्वाभाव से सहिष्णु है। इसीलिए उनका धंधा पानी यहाँ चल रहा है। अगर उनमें साहस है तो मुहम्मद का कार्टून बना कर दिखाए। इसी देश के मुसलमान ISIS के समान चौराहे पर खड़ा करके सरेआम फाँसी लगाकर आपकी सेकुलरता को सिद्ध कर देंगे।

आजकल कुक्कुरमुत्तों के समान गौमांस भक्षण के समर्थन में अनेक लेख अंग्रेजी मीडिया में प्रकाशित हो रहे हैं। जो अपने कुतर्कों से यह सिद्ध करना चाहते हैं की गौमांस खाना गलत नहीं हैं। इस लेख के माध्यम से हम तर्कपूर्वक इन कुतर्कों की समीक्षा करेंगे।

कुतर्क नं १- गौमांस प्राचीन काल से खाया जाता है। हमारे धार्मिक ग्रन्थ इसका समर्थन करते हैं।

समीक्षा- वेदों में मांस भक्षण का स्पष्ट निषेध किया गया हैं। अनेक वेद मन्त्रों में स्पष्ट रूप से किसी भी प्राणी को मारकर खाने का निषेध किया गया है। जैसे- 'हे मनुष्यो ! जो गौ आदि पशु हैं वे कभी भी हिंसा करने योग्य नहीं हैं।' (यजुर्वेद १/१)

'जो लोग परमात्मा के सहचरी प्राणी मात्र को अपनी आत्मा का तुल्य जानते हैं अर्थात जैसे अपना हित चाहते हैं वैसे ही अन्यों में भी वर्तते हैं। (यजुर्वेद ४०/७)

'हे दांतो! तुम चावल खाओ, जौ खाओ, उड़द खाओ और तिल खाओ। तुम्हारे लिए यही रमणीय भोज्य पदार्थों का भाग हैं। तुम किसी भी नर और मादा की कभी हिंसा मत करो।' (अथर्ववेद ६/१४०/२)

'वे लोग जो नर और मादा, भ्रूण और अंडों के नाश से उपलब्ध हुए मांस को कच्चा या पकाकर खातें हैं, उनका विरोध करना चाहिए।'(अथर्ववेद ८/६/२३)

'निर्दोषों को मारना निश्चित ही महापाप है, हमारे गाय, घोड़े और पुरुषों को मत मार। (अथर्ववेद १०/१/२९)

इस प्रकार से अनेक प्रमाण वेदों में मांसाहार के विरुद्ध मिलते हैं। कुछ लोग जो प्रमाण मांसाहार विशेष रूप से गौमांस के समर्थन में देते हैं, वे वेदों के मन्त्रों की गलत व्याख्या निकालने के कारण हैं।

कुतर्क नं २- गौ मांस गरीबों का प्रोटीन है। प्रतिबन्ध से उनके स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव होगा।

समीक्षा- एक किलो गौ मांस १५० से २०० रुपये में मिलता है, जबकि इतने रुपये में २ किलो दाल मिलती है। एक किलो गौमांस से केवल ४ व्यक्ति एक समय का भोजन कर सकते हैं जबकि २ किलो दाल में कम से कम १६-२० आदमी एक साथ भोजन कर सकते हैं। मांस से मिलने वाले प्रोटीन से पेट के कैंसर से लेकर अनेक बीमारियां होने का खतरा है, जबकि शाकाहारी भोजन प्राकृतिक होने के कारण स्वास्थ्य के अनुकूल है।

कुतर्क नं ३- गौमांस पर प्रतिबन्ध अल्पसंख्यकों पर अत्याचार हैं क्योंकि यह उनके भोजन का प्रमुख भाग है।

समीक्षा- मनुष्य स्वाभाव से मांसाहारी नहीं अपितु शाकाहारी हैं। वह मांस से अधिक गौ का दूध ग्रहण करता है। इसलिए यह कहना की गौमांस भोजन का प्रमुख भाग हैं एक कुतर्क है। एक गौ अपने जीवन में दूध द्वारा हजारों मनुष्यों की सेवा करती हैं जबकि मनुष्य इतना बड़ा कृतघ्न है कि उसे सम्मान देने के स्थान पर कसाइयों से कटवा डालता है।

कुतर्क नं ४- अगर गौ मांस पर प्रतिबन्ध लगाया गया तो बूढ़ी एवं दूध न देनी वाली गौ जमीन पर उगने वाली सारी घास को खा जाएगी जिससे लोगों को घास भी नसीब न होगी।

समीक्षा- गौ घास खाने के साथ साथ गोबर के रूप में प्राकृतिक खाद भी देती है। प्राकृतिक गोबर की खाद डालने से न केवल धन बचता है अपितु उससे जमीन की उर्वरा शक्ति भी बढ़ती है। ऐसी फसलों में कीड़ा भी कम लगता हैं जिनमें प्राकृतिक खाद का प्रयोग होता है। इस कारण से महंगे कीटनाशकों की भी बचत होती हैं। साथ में विदेश से महंगी रासायनिक खाद का आयात भी नहीं करना पड़ता। बूढ़ी एवं दूध न देनी वाली गौ को प्राकृतिक खाद के स्रोत के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

कुतर्क नं ५- गौहत्या पर प्रतिबन्ध अल्पसंख्यकों के अधिकारों का अतिक्रमण है।

समीक्षा- बहुसंख्यक के अधिकारों का भी कभी ख्याल रखा जाना चाहिए। इस देश में बहुसंख्यक भी रहते है। गौहत्यापर प्रतिबन्ध से अगर बहुसंख्यक समाज प्रसन्न होता हैं तो उसमें बुराई क्या है।

कुतर्क नं ६- गौहत्या करने वाले को १० वर्ष की सजा का प्रावधान हैं जबकि बलात्कारी को ७ वर्ष का दंड है। क्या गौ एक नारी के शील से अधिक महत्वपूर्ण है?

समाधान- हम तो बलात्कारी को उम्रकैद से लेकर फांसी की सजा देने की बात करते है। आप लोग ही कटोरा लेकर उनके लिए मानव अधिकार के नाम पर माफी देने की बात करते है। सबसे अधिक मानव अधिकार के नाम पर रोना एवं फांसी पर प्रतिबन्ध की मांग आप सेक्युलर लोगों का सबसे बड़ा ड्रामा है।

कुतर्क नं ७- गौमांस के व्यापार में हिन्दू भी शामिल हैं।

समाधान- गौहत्या करने वाला हत्यारा है। वह हिन्दू या मुसलमान नहीं है। पैसों के लालच में अपनी माँ को जो मार डाले वह हत्यारा या कातिल कहलाता हैं न कि हिन्दू या मुसलमान। सबसे अधिक गोमांस का निर्यात मुस्लिम देशों को होता हैं। इससे हमारे देश के बच्चे तो दूध के लिए तरस जाते हैं और हमारे यहाँ का प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता हैं।

कुतर्क नं ८- अगर गौ से इतना ही प्रेम है तो उसे सड़कों पर क्यों छोड़ देते है।

समाधान- प्राचीन काल में राजा लोग गौ को संरक्षण देने के लिए गौशाला आदि का प्रबंध करते थे जबकि आज की सरकारें सहयोग के स्थान पर गौ मांस के निर्यात पर सब्सिडी देती है। विडंबना देखिये मुर्दों के लिए बड़े-बड़े कब्रिस्तान बनाने एवं उनकी चारदीवारी करने के लिए सरकार अनुदान देती हैं जबकि जीवित गौ के लिए गौचर भूमि एवं चारा तक उपलब्ध नहीं कराती। अगर हर शहर के समीप गौचर की भूमि एवं चारा उपलब्ध करवाया जाये तो कोई भी गौ सड़कों पर न घूमे। खेद है कि हमारे देश में अल्पसंख्यकों को लुभाने के लिए मुर्दों की गौ माता से ज्यादा औकात बना दी गई है।

कुतर्क नं ९- गौ पालन से ग्रीन हाउस गैस निकलती है जिससे पर्यावरण की हानि होती हैं।

समाधान- यह वैज्ञानिक तथ्य है कि मांस भक्षण के लिए लाखों लीटर पानी बर्बाद होता हैं जिससे पर्यावरण की हानि होती है। साथ में पशुओं को मांस के लिए मोटा करने के चक्कर में बड़ी मात्र में तिलहन खिलाया जाता हैं जिससे खाद्य पदार्थों को अनुचित दोहन होता है। शाकाहार पर्यावरण के अनुकूल है और मांसाहार पर्यावरण के प्रतिकूल है।

कुतर्क नं १०- गौमांस पर प्रतिबन्ध भोजन की स्वतंत्रता पर आघात है।

समाधान- मनुष्य कर्म करने के लिए स्वतंत्रत हैं मगर सामाजिक नियम का पालन करने के लिए परतंत्र है। एक उदाहरण लीजिये- आप सड़क पर जब कार चलाते हैं तब आप यातायात के सभी नियमों का पालन करते हैं अन्यथा दुर्घटना हो जाएगी। आप कभी कार को उलटी दिशा में नहीं चलाते और न ही कहीं पर भी रोक देते हैं अन्यथा यातायात रुक जायेगा। यह नियम पालन मनुष्य की स्वतंत्रता पर आघात नहीं हैं अपितु समाज के

(शेष पृष्ठ ५ पर)

बिहार चुनावों में साजिशों पर साजिशें

मृत्युंजय दीक्षित

देश की राजनीति आज बहुत ही सुविधाजनक हो गयी है। किसी भी दल को अब देश के विकास की नहीं अपितु महज अपने वोटबैंक को दुरुस्त रखने की चिंता है। जब पूरे विश्व में भारत का नाम ऊंचा हो रहा है एवं भारत संयुक्त राष्ट्र महासभा में स्थायी सदस्यता प्राप्त करने की ओर बढ़ रहा है, तब देश के कुछ हिस्सों में कुछ ऐसी साजिशें रची जा रही हैं जिससे देश में सामाजिक समरसता का वातावरण खराब हो और ६० वर्षों से अधिक समय तक शासन करने वाले लोग जनता को यह कहकर बेवकूफ बना सकें कि सत्ता को चलाना केवल उन्हीं को आता है। आज देश में कुछ ऐसी सुनियोजित घटनाएं घट रही हैं कि देश के सभी तथाकथित सेकुलर नेता और मीडिया घटनाओं की तह तक जाये बगैर पीएम मोदी की सरकार को बदनाम करने के लिए और अपनी फोटो खिंचवाने के लिए यहां वहाँ पहुंचने लग जाते हैं।

अभी हाल ही में दादरी कांड हुआ जिसमें सभी दलों ने अभी तक हंगामा बरपा रखा है। दादरी कांड को ये सभी दल अभी तक भुनाने का प्रयास कर रहे हैं लेकिन ये दल अपने तथाकथित प्रयासों में सफल नहीं हो सके। जब दादरी कांड पर मोदी सरकार को बदनाम करने की साजिशें विफल होने लग गयी तब अरहर की दाल का मुददा आ गया। अरहर की दाल की बढ़ती कीमतों को लेकर भी राजनैतिक दलों की ओर से गलत प्रचार किया गया और जिसका लाभ जमाखोरों ने जमकर उठाना प्रारम्भ कर दिया। जब अरहर की दाल की बढ़ती कीमतों को लेकर केंद्र सरकार व पीएम का कड़ा रुख सामने आया और छापामारी शुरू कर दी गयी तो इसे विडम्बना ही कहा जायेगा कि छापेमारी में सबसे अधिक अरहर की दाल नागपुर में जब्त की गयी है तब बिहार में नीतिश के नये दोस्त लालू प्रसाद यादव ने कहना चालू कर दिया कि सबसे अधिक जमाखोर भाजपा और संघ के लोग हैं।

आजकल लालू प्रसाद यादव को हर चीज में मोदी संघ और भाजपा की साजिशें ही नजर में आ रही है। उनके मन में भय उत्पन्न हो गया है कि अगर विधान सभा चुनावों के बाद बिहार में भाजपा की पूर्ण बहुमत की सरकार आ गयी तो लालू यादव सहित उनके परिवार के अधिकांश सदस्यों को जेल की हवा आजीवन खानी पड़ सकती है और उनका राजनैतिक कैरियर पूरी तरह से समाप्त हो जायेगा। वे कभी संसद का मुंह नहीं देख सकेंगे।

अभी दादरी कांड पर मुस्लिमों के समक्ष अपनी राजनीति को तथाकथित धर्मनिरपेक्ष दलों के नेताओं को अवसर प्राप्त हुआ ही था कि हरियाणा फरीदाबाद के निकट सुनपेड़ा गांव में दो परिवारों की आपसी रंजिश में दलित परिवार के घर में आग लगाकर दो मासूमों की हत्या कर दी गयी। यह घटना जिस प्रकार से घटित हुई या फिर करवायी गयी उससे साफ पता चल रहा है कि यह एक आपराधिक वारदात है। लेकिन एक सुनियोजित चाल के तहत सभी दलों के नेता एक के बाद एक सुनपेड़ा गांव पहुँचने लग गये और एक और पर्यटक स्थल बन गया। सबसे पहले वामपंथी नेत्री वृंदा करात अपने घड़ियाली आंसू बहाने के लिए सुनपेड़ा गांव पहुच गयीं और फिर पीछे से राहुल गांधी भी पहुंच गये।

ये सभी लोग केवल अपनी राजनीति को चमकाने के लिए सुनपेड़ा गाँव पहुंचे हैं ताकि किसी न किसी प्रकार से पीएम मोदी और भारतीय जनता पार्टी को जनता के बीच पहले मुस्लिम और अब फिर दलित विरोधी साबित किया जा सके। अब ये सभी दल बिहार में दलितों के बीच ऐसी हर घटना का बहुत ही गलत ढंग से पेश करने जा रहे हैं। उधर विदेशराज्य मंत्री वी के सिंह के एक विवादित बयान के बाद सभी दल वी के सिंह को दलित विरोधी साबित करने पर तुल गये हैं तथा बिहार के एनडीए सहयोगियों ने भी उनका इस्तीफा मांग कर भाजपा को परेशानी में डाल दिया है। इसमें आम आदमी पार्टी और राष्ट्रीय अनसूचित जाति- जनजाति आयोग भी दिलचस्पी दिखा रहे हैं। विदेश राज्य मंत्री के खिलाफ एफआईआर दर्ज करायी जा रही हैं।

वहीं बिहार के भाजपा विरोधी दलों का कहना है कि भाजपा शासित हरियाणा राज्य में जंगलराज कायम हो गया है तथा दलितों पर अत्याचार हो रहा है। इस प्रकर की घटनाओं पर भाजपा ने भी अपना आक्रामक बचाव किया है। भाजपा का जोरदार ढंग से कहना है कि दलितों पर सर्वाधिक अत्याचार तो कांग्रेस के शासनकाल में हुआ था तब राहुल गांधी कहां चले गये थे। खबर है कि बसपा नेत्री मायावती, नीतिश-लालू गठबंधन और राहुल गांधी अपने आप को पाक साफ घोषित करने के लिए जोरदार अभियान चलाने वाली हैं जिसमें ये बातें जोर-शोर से उठायी जायेंगी और पीएम मोदी व केंद्र सरकार को मुस्लिम-दलित विरोधी सिद्ध किया जायेगा।

ये सभी दल इन घटनाओं का जिस प्रकार से राजनैतिक दोहन करते हैं व कर रहे हैं उससे साफ पता चल रहा है कि इनको पीड़ित परिवारों के साथ कोई सहानुभूति नहीं है। यह बात बिलकुल साफ हो गयी है कि हरियाणा सरकार ने दलित परिवार को जिंदा जलाने की घटना की सीबीआई जांच कराने का फैसला कर लिया है और जल्द ही सच्चाई सबके सामने आ जायेगी। इन घटनाओं व मोदी सरकार के खिलाफ अभियान का एक सच यह भी है कि यह सब कुछ एक सोची समझी साजिश के तहत हो रहा है।

भारत पहली बार संयुक्त राष्ट्र महासभा में पूरी ताकत के साथ स्थायी सदस्यता के लिए प्रयास कर रहा है जिसका उसे भारी समर्थन मिल रहा है तथा यह बात भारत विरोधी आंतरिक व बाह्य ताकतों को पसंद नहीं आ रही है। कुछ ताकतें भारत को मजबूत देश के रूप में नहीं उभरने देना चाहतीं। वही ताकतें कांग्रेस व सेकुलर दलों का सहारा लेकर इस प्रकार की साजिशें रच रही है। इसलिए बिहार की जनता को इस बार अब बचे हुए चरणों में बहुत अधिक सतर्क होकर मतदान करना है। यह सभी ताकतें यह प्रयास कर रही है कि भारत को सबसे अधिक असहिष्णुता वाला देश घोषित किया जा सके। वैसे भी इन घटनाओं को मीडिया के माध्यम से ऐसे पेश किया जा रहा है कि दलितों, मुस्लिमों, महिलाओं व किसानों पर अत्याचार आदि की घटनाएं अभी से घटनी शुरू हुई हैं जबकि इनसे भी खराब वातावरण तो इन्हीं दलों के शासन में रहा था। किसी को बदनाम करने वा साजिश करने से पहले इन दलों को अपने गिरेबान में झांक लेना चाहिये। ■

बदल रहे हैं विवाह के मायने

संगीता सिंह 'भावना'

शादियों का मौसम है, हर तरफ ढोल नगाड़े, शहनाइयों की धुन है। पर एक बात जो सबसे अहम् है। वो यह है कि अब शादी कोई सामाजिक परंपरा नहीं रही बल्कि एक साथी की तलाश बन गई है, जो भले ही हर क्षेत्र में परफेक्ट न हो, लेकिन खुली सोच जरूर रखता हो। शादी न सिर्फ सामाजिक प्रथा है, बल्कि व्यक्तिगत तौर पर भी एक जरूरत है। लेकिन इस बदलते दौर में जहाँ सब कुछ बड़ी तेजी से बदल रहा है तो उसका सबसे ज्यादा असर हमारे संबंधों पर ही पड़ा है और विवाह भी इससे अछूता नहीं है। अब शादी न सात जन्मों का साथ है, और न ही दो अंजान दिलों का मिलन। बल्कि आज विवाह दो अलग-अलग लोग किस तरह से और कब तक खुशी-खुशी साथ रह सकते हैं, इस बात पर टिका है। आज विवाह जिन्दगी की जरूरत या निर्णय नहीं रह गया है, बल्कि विवाह से कहीं ज्यादा जरूरी कैरियर और आर्थिक आत्मनिर्भरता हो गई है।

पहले जब घर में किसी की शादी आती थी तो करीब साल भर पहले से ही तैयारियां शुरू हो जाती थीं। घर के मुखिया के ऊपर ढेर सारी जिम्मेदारी लाद दी जाती थी, जिसे वह बड़े ही चाव से हंसी-खुशी स्वीकार कर अपने बड़े होने का अभिमान महसूस करता था। पर अब वो बात नहीं रही, अब जिसकी शादी होती है वो अपनी सारी जिम्मेदारी खुद उठाता है एवं सारे निर्णय खुद लेता है और सब हो जाने के बाद घर के

(शेष पृष्ठ २ पर)

साहित्यकार और सम्मान वापसी

श्याम स्नेही

किसी भी भाषा का साहित्य साहित्यकारों द्वारा ही रचित होता है और साहित्यकार निष्पक्षता के अभाव में किसी न किसी विचारधारा से सम्बद्ध भी होते हैं। जो मानवीय संवेदनाओं के तहत एक आवश्यक प्रक्रिया है।

बेशक, विचारधाराएँ वामपंथी हों या दक्षिणपंथी, या फिर शोषक या शोषितों के पक्षधर, पर रहे हमेशा अपने सृजनकाल से विभाजित ही। यही प्रमुख कारण रहा कि साहित्य का पलड़ा, निष्पक्षता के अभाव में, किसी न किसी ओर सदा से झुका रहा। एक कारण और भी स्पष्ट दिखाई दे रहा है और वह है सत्ता की राजनीति और स्वार्थान्ध सम्मान पाने की ललक में साहित्य का राजनीति से प्रभावित होना। ऐसे में साहित्य को निष्पक्ष कहना कहाँ तक न्यायसंगत होगा ?

राजकीय सत्ता भी इन्हीं वैचारिक विभाजन के अंतर्गत चलती चली आ रही है। सभी सत्ताधारियों द्वारा अपने विचारों को पुष्ट करते हुए शासन व्यवस्था चलाना अगर लाजमी है तो प्रतिरोध भी लाजमी है।

इसी प्रक्रिया के तहत आज देश में बड़े जोर-शोर से साहित्यकारों द्वारा सम्मान वापसी का मुद्दा उछाला जा रहा है। यहाँ एक विचारणीय प्रश्न उठ खड़ा होता है कि कोई भी कलमकार किसी जाति, धर्म और स्वार्थजन्य लेखन करे तो क्या उसे निष्पक्ष साहित्यकार का दर्जा दिया जा सकता है ? निष्पक्ष साहित्यकार या कलमकार को विरले ही राजकीय सम्मान प्राप्त होता है और न ही ऐसे कलमकार राजकीय सम्मान के मुंहताज होते हैं। उसे आमजनों से जो सम्मान प्राप्त होता है उसी से उन्हें वास्तविक आत्मसंतुष्टि प्राप्त हो जाती है। ऐसे कई उदाहरणों से भारत का साहित्यिक इतिहास पटा पड़ा है। मगर, वर्तमान सम्मान वापसी की श्रृंखलाओं में मात्र उन्हीं साहित्यकारों की आत्माएं उन्हें क्यों और आज कैसे झकझोरने लगीं जो राजकीय सम्मान पाने हेतु चरण चाटुकारिता तक से खुद को अलग नहीं कर पाए।

तथाकथित आजादी के बाद बीते अब तक के वर्षों में देश ने न जाने कितनी अमानवीय त्रासदी झेली। जिसमें साम्प्रदायिक असहिष्णुता के फलस्वरूप कश्मीरी पंडितों का अपने ही देश में शरणार्थी बनना, बिहार का भागलपुर दंगा, बिहार में ही अगड़े-पिछड़ों का वर्ग संघर्ष जो आज भी मुखर है और वर्तमान में सत्तालोलुपों के लिए चुनावी मुद्दा बना हुआ है और जिसे राजनीतिक परिवेश में हवा दिया जा रहा है। पर, किसी तथाकथित साहित्यकार की आत्मा चीत्कार करने की बात तो दूर फुफकार और संवेदना भी व्यक्त करने की हिमाकत तक नहीं जुटा पा रही। वहीं वे दादरी की घटना और प्रो. कुलबर्गी की हत्या पर घड़ियाली आंसू बहाने के लिए सम्मान लौटाने की बात कर रहे।

आज उनकी वही आत्मायें फटने लगीं। दूसरे शब्दों में, जो आत्माएं पद और प्रतिष्ठा के आलोक में मृतप्राय थीं वही आज अपने राजनैतिक आकाओं के इशारे पर मृत प्रेतात्मा के रूप में उभार पर हैं। क्या सच में सम्मान वापसी कर समाज में अपनी साहित्यकार के रूप में सहानुभूति प्राप्त करने की उनकी मंशा न्यायोचित कही जा सकती है ?

विगत कई दशकों से सम्मान, किसी न किसी जुगाड़ से सम्मानित होनेवाले या सत्ता की विरुदावली गानेवाले भाटों को ही प्राप्त होने का सिलसिला सा चलता रहा है। जिसका जुगाड़ बैठ गया वही प्रतिष्ठित साहित्यकार की श्रेणी में समाविष्ट हो गया। शासन-व्यवस्था तो आज भी वही अंग्रेजों वाली है मगर, शासक वर्ग की विचाधारा जरूर बदली हुई है, जो अंगरेजी व्यवस्था के चाटुकारों को या फिर सत्ता विमुखों को रास नहीं आ रही और जो साहित्यकारों को मोहरा बनाकर अपना राजनैतिक उल्लू सीधा करने की जुगत में हैं।

वर्तमान में सम्मान और सम्मान राशि वापस करनेवाले तथाकथित साहित्यकारों के बैंक खातों की भी निष्पक्ष जांच होनी चाहिए कि वापसी की राशि उनके खातों में कहां से आई या किसने डलवाई। इससे वाकई सच से पर्दा उठने की सम्भावना प्रबल हो जायगी।

व्यक्तिगत तौर पर मेरा मानना है कि साहित्य को समाज के दर्पण के रूप में ही परखा जाय तो उत्तम और साहित्यकारों को भी समसामयिक निर्लोभ साहित्य की रचना करनी चाहिए। इसके साथ ही उन्हें साहित्यिक धर्म का अनुपालन भी करना चाहिए। ■

गांधी, मालवीय एवं डा. हेडगेवार

बिपिन किशोर सिन्हा

गांधी न तो दयानन्द और अरविन्द के समान मेधावी पंडित एवं बहुपठित विद्वान् थे, न उनमें विवेकानन्द की तेजस्विता थी। सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय और अपरिग्रह- ये, जो हिन्दू संस्कृति के सदियों से आधार-स्तंभ थे, उन्होंने अपने जीवन में साकार किया। साधनापूर्वक उन्होंने प्राचीन सत्यों को अपने जीवन में उतारकर संसार के सामने यह उदाहरण प्रस्तुत किया कि जो उपदेश अनन्त काल से दिए जा रहे हैं, वे सचमुच ही जीवन में उतारे जाने योग्य हैं। उनके इन्हीं गुणों के कारण भारत का विशाल जनमानस उनका अनुयायी और परम भक्त बन गया, जिसका लाभ कांग्रेस और पूरे देश को आजादी प्राप्त करने में मिला।

उन्होंने कई बार स्वयं को सनातनी हिन्दू घोषित किया था, पर उनका हिन्दुत्व किसी धर्म का विरोधी नहीं था। वे 'ईश्वर अल्ला तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान' में हृदय से विश्वास करते थे और 'हिन्दू-मुस्लिम एकता' के प्रबल समर्थक थे। इसके लिए कई बार हिन्दुओं को रुष्ट करके भी उन्होंने मुसलमानों का समर्थन किया था, खिलाफत आन्दोलन का समर्थन और देश के विभाजन को स्वीकार कर लेना, उनके उदाहरण हैं। उन्हें अन्त तक यह विश्वास था कि वे मुसलमानों का हृदय परिवर्तन करने में सफल होंगे। लेकिन मुसलमानों ने जिन्ना के प्रचार पर अधिक विश्वास किया और कांग्रेस से अधिक मुस्लिम लीग का साथ दिया। गांधी राजनीति में भी शुचिता के प्रबल समर्थक थे लेकिन उनकी ही पार्टी कांग्रेस ने आजादी के बाद इससे किनारा कर लिया। आज की तिथि में बाहरी विश्व गांधीवाद से ज्यादा प्रभावित है, भारत कम।

महामना मालवीय गांधी के समकालीन थे। उनमें दयानन्द और अरविन्द का मेधावी पांडित्य तथा विवेकानन्द की तेजस्विता, एक साथ थी। वे एक बड़े ही ओजस्वी वक्ता थे। उनमें अद्भुत राजनीतिक सूझबूझ थी। अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वे चार बार अध्यक्ष रहे। वे भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रबल समर्थक थे। शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ रहे पश्चिमी प्रभाव से वे आहत थे। भारतीय मूल्यों के आधार पर आधुनिक और परंपरागत शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने राजनीति छोड़कर भविष्य-निर्माण का संकल्प लिया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना करके उन्होंने इसे साकार भी किया। वे एक कट्टर हिन्दू थे, लेकिन, उनका हिन्दुत्व सर्वधर्म समभाव, धार्मिक सहिष्णुता और शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व में विश्वास करता था। उन्होंने हिन्दू विश्वविद्यालय के माध्यम से हिन्दू जागरण का ऐसा केन्द्र खड़ा किया जो आनेवाली कई पीढ़ियों को नई दिशा प्रदान करता रहेगा।

डा. केशव बलिराम हेडगेवार महात्मा गांधी और महामना मदन मोहन मालवीय के समकालीन थे। आरंभ में वे कांग्रेस के कार्यकर्ता थे। बाद में उन्होंने महसूस किया कि हिन्दू अपने दुश्मन आप हैं। वे जातिवाद, छूआछूत, भाषा, प्रान्त और ऊँच-नीच की सीमा में इस तरह विभाजित हैं कि सिर्फ शव की अन्तिम यात्रा में ही वे एक दिशा में चलते हैं। बाकी समय कई पंथों और संप्रदायों में बँटे हिन्दू अपनी-अपनी डफली अलग बजाते हैं। इनकी बुराइयों को दूर करके इन्हें एक मजबूत संगठन की डोर से बांधने की आवश्यकता उन्हें महसूस हुई। देश की आजादी हो या भविष्य का निर्माण, इसके लिए जिस शक्तिशाली और चरित्रवान हिन्दू की कल्पना स्वामी विवेकानन्द ने की थी उसको मूर्त रूप देने के लिए डा. हेडगेवार ने सन् १९२५ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। भारत में जितने भी गैर

(शेष पृष्ठ २३ पर)

यौधेय गणराज्य : मुद्राशास्त्रीय अनुशीलन

वेद प्रताप सिंह

प्राचीन भारतीय राज्यों में प्रमुखतः दो प्रकार की शासन प्रणाली प्रचलित थी- राजतंत्रात्मक एवं गण-तंत्रात्मक. राजतंत्रात्मक शासन प्रणाली में शासन का प्रमुख राजा होता था, जबकि गणतंत्रात्मक शासन प्रणाली में संघ अथवा गण के प्रमुख व्यक्ति को शासक नियुक्त किया जाता था. लगभग ४०० ईसा पूर्व से लेकर ३०० ईसवी तक के दीर्घ समयांतराल में ऐसी गणतंत्रात्मक अथवा गणराज्य शासन व्यवस्था का अस्तित्व विद्यमान रहा है. पाणिनि ने ऐसे संघों का उल्लेख अपने 'अष्टाध्यायी' नामक ग्रन्थ में किया है जिनमें यौधेय गणराज्य अपनी वीरता एवं स्वाभिमान के कारण प्रख्यात रहा है. 'महाभारत' में यौधेयों को युधिष्ठिर का वंशज बतलाया गया है. शक क्षत्रप रुद्रदामन के 'जूनागढ़ अभिलेख' में यौधेयों का उल्लेख सबसे बड़े वीर योद्धाओं के रूप में हुआ है. समुद्रगुप्त की 'प्रयाग प्रशस्ति' में यौधेयों का उल्लेख सम्राट को संतुष्ट करने वाले गणों के साथ हुआ है.

यौधेय गणराज्य की चांदी, तांबे और पोटीन धातु की मुद्राएँ पूर्वी पंजाब में सतलज और यमुना नदियों के मध्यवर्ती भूभाग से प्राप्त हुई हैं. इसी प्रकार १९५६ ईसवी में देहरादून जनपद में चकराता तहसील के अंतर्गत पंज्या नामक ग्राम से यौधेयों की १६४ मुद्राओं की एक निखात निधि प्राप्त हुई है जिससे ज्ञात होता है कि इस क्षेत्र पर उनका निर्विवाद रूप से अधिकार था.

यौधेयों की मुद्राओं को कालक्रमानुसार मुख्यतः तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है- १. वृषभ तथा गज प्रकार की मुद्रा, २. कार्तिकेय के साथ ब्राह्मणस्य देवस्य अंकित मुद्रा, तथा ३. कुषाण अनुकरण पर निर्मित मुद्रा

प्रथम प्रकार की मुद्राएँ ताम्र निर्मित हैं जिनका निर्माण काल २०० ईसा पूर्व के लगभग माना जाता है. इस प्रकार की मुद्रा के अग्रभाग पर वृषभ की आकृति है और उसके सम्मुख स्तम्भ की आकृति है. साथ में ब्राह्मी लिपि में 'यौधेयानां बहुधान्यके' लेख अंकित है जो सूचित करता है कि यह गणराज्य आर्थिक दृष्टि से समृद्धिशाली था. मुद्रा के पृष्ठ भाग पर गज तथा नन्दि पद का चिह्न अंकित है. इसी वर्ग की अन्य प्रकार की मुद्रा पर ब्राह्मी लिपि में लेख अंकित है जिसके बीच के कुछ अक्षर अस्पष्ट हैं. सुप्रसिद्ध मुद्राविद रोजर्स ने उसे 'भूपधनुष' पढ़ा है. जॉन एलन ने इसे 'बहुधनके' पढ़कर इसका संस्कृत रूप 'बहुधान्यक' बतलाया है. महाभारत में पश्चिम की ओर नकुल की विजय के प्रसंग में पंजाब के उर्वर प्रदेश को मानना अत्यंत समीचीन है.

द्वितीय प्रकार की मुद्राएँ रजत निर्मित हैं. उक्त मुद्राएँ लगभग प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व में निर्मित हुईं. इनके अग्रभाग में षडानन (कार्तिकेय) को कमल पर खड़ा दिखाया गया है तथा ब्राह्मी लिपि में 'यौधेयानाम भगवत स्वामिनो ब्राह्मणस्य देवस्य' लिखा मिलता है. इसके पृष्ठ भाग में सुमेरु पर्वत, बोधि वृक्ष एवं नन्दिपद

चिह्न अंकित हैं.

अंतिम प्रकार की मुद्राएँ कुषाण शासकों के अनुकरण के आधार पर ताम्र निर्मित हैं. इनका समय तृतीय एवं चतुर्थ शताब्दी ईसवी है. मुद्रा के अग्रभाग पर युद्ध देवता कार्तिकेय की आकृति और बायीं ओर मयूर की आकृति है. ब्राह्मी लिपि में 'यौधेय गणस्य जयः' अथवा 'यौधेयानाम गणस्य जयः' लेख अंकित है. पृष्ठ भाग पर बिन्दुमाला के बीच वाममुखी कटि विन्यस्त देवसेना कार्तिकेय पत्नी का चित्रण हुआ है. यौधेयों की प्रारंभिक मुद्राओं से ज्ञात होता है कि द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व तक ये शासक स्वतंत्र गणराज्य के रूप में शासनरत थे. 'बहुधनके' लेख अंकित मुद्राएँ इस तथ्य को प्रकट करती हैं कि उन दिनों यह गणराज्य धनधान्य की दृष्टि से अत्यंत समृद्धिशाली था.

परवर्ती काल की मुद्राएँ कुषाण शासकों के अनुकरण के आधार पर निर्मित हुई थीं जिससे विदित होता है कि यौधेयों ने आर्जुनायनों और कुनिन्दों के साथ मिलकर कुषाणों का सामना करने के लिए अनेक राज्यों का संघ बनाया था. उल्लेखनीय है कि कुषाणों के विदेशी शासन की पराधीनता से भारत को मुक्त कराने में स्वाभिमानी एवं निर्भीक यौधेयों की महत्वपूर्ण भूमिका थी. कालान्तर में महान गुप्त सम्राटों की साम्राज्यवादी नीति के फलस्वरूप यह गणराज्य अपने अस्तित्व एवं प्रभुसत्ता को अक्षुण्ण रखने में असमर्थ सिद्ध हुआ. ■

समीक्षा

दो पठनीय एकल कविता संग्रह

इस बार समीक्षा के लिए दो एकल कविता संग्रह प्राप्त हुए हैं।

पहला कविता संग्रह 'अभिमन्यु बना गुलजार' एक नये रचनाकार अंकित रावत की डायरियों में लिखी कविताओं को एकत्र करके तैयार किया गया है और इसे लेखक ने अपने ही खर्च पर प्रकाशित किया है।

सभी कविताएं जमीन से जुड़ी हुई हैं और हमारे दैनिक जीवन से गहरे संबंधित हैं, जैसे- अदरक वाली चाय, बस्ता जिम्मेदारी का, एक्वेरियम की मछली आदि। इन साधारण उपमाओं के माध्यम से कवि ने अपनी भावनाओं को प्रकट करने की सफल कोशिश की है।

कविताओं में प्रूफ की गलतियां नहीं के बराबर हैं। पुस्तक की छपाई और कागज अच्छा है, मुखपृष्ठ आकर्षक है और पृष्ठ संख्या के अनुसार मूल्य भी उचित रखा गया है।

दूसरा कविता संग्रह 'कवि की राह' रचनाकार नितिन मेनारिया की एक सौ कविताओं को एकत्र करके छापा गया है।

कविताएं विविध विषयों पर केन्द्रित हैं, जिनमें अपने दैनिक जीवन से लेकर साहित्य और राजनीति तक सभी शामिल हैं। अधिकांश कवितायें तुकांत हैं हालांकि उनको गीत या किसी छंद में नहीं बांधा जा सकता। इनके माध्यम से कवि ने अपने विचारों को व्यक्त करने का सफल प्रयास किया है।

खटकने वाली बात यह है कि 'कवि के शब्द' से लेकर अंतिम कविता तक लगभग पूरी पुस्तक में वर्तनी की गलतियों की भरमार है। पुस्तक की छपाई अच्छी है, परंतु मुखपृष्ठ अधिक आकर्षक हो सकता था। कागज की गुणवत्ता की दृष्टि से मूल्य उचित रखा गया है।

-- विजय कुमार सिंघल

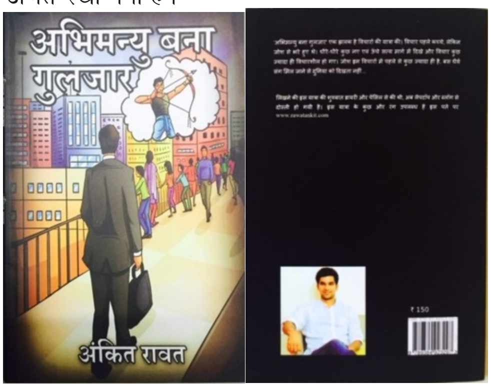

कविता संग्रह - अभिमन्यु बना गुलजार
रचनाकार- अंकित रावत
प्रकाशक- अंकित रावत
पृष्ठ संख्या- ६४, मूल्य- रु. १५०

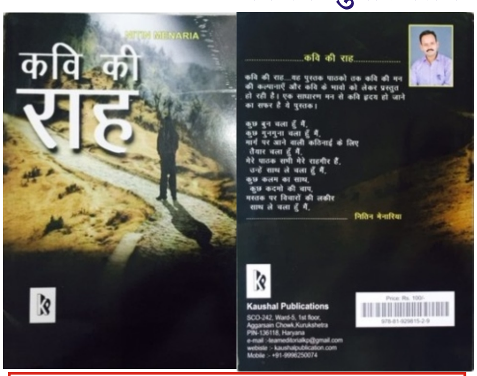

कविता संग्रह - कवि की राह
रचनाकार- नितिन मेनारिया
प्रकाशक- कौशल पब्लिकेशन, कुरुक्षेत्र
पृष्ठ संख्या-१२०, मूल्य-रु. १००

बाल कहानी

गंगा स्नान

दस वर्ष की मनु के पैर आज खुशी के मारे जमीन पर ही नहीं पड़ रहे थे। जैसे ही उसके पापा ने उसे बताया कि गाँव से उसकी दादी आने वाली है उसका गोलमटोल मुहँ खुशी के मारे दमक उठा था। उसे पता था कि दादी महाकुम्भ में गंगा स्नान के लिए आ रही है और साथ में वो अपने साथ ढेर सारे किस्से कहानियाँ भी लाएँगी जिन्हें सुनने के लिए उसके साथ-साथ उसकी सभी सहेलियाँ भी उनकी राह देखती रहती हैं।

आखिर दिन भर के लम्बे इंतजार के बाद शाम को उसकी दादी उसके मनपसंद बेसन के लड्डुओं के साथ आ ही पहुंची। बस फिर क्या था मनु ने उन पर सबसे पहले कब्जा जमा लिया। दादी भी उसे अपने साथ बैठाये आधी रात तक उसे पौराणिक कथाएं सुनाती रही जिसमें माँ गंगा को भागीरथी द्वारा स्वर्ग से उतार लाने वाली कथा उसके मन को छू गई और दादी ने जब उसे बताया कि वेदों के अनुसार गंगा देवनदी है और स्वर्ग में देवता इसे अमृत कहते थे, तो मनु की उत्सुकता भी गंगा माँ के दर्शन करने को और बढ़ गई। वो कब गंगा माँ की कथाएं सुनते हुए दादी की गोद में सो गई उसे पता ही नहीं चला। उसे सपने में भी स्वच्छ, निर्मल और कल कल करती गंगा दिखाई दी।

दूसरे दिन वो सुबह दादी के साथ ही सूरज की प्रथम किरण के साथ ही उठ खड़ी हुई। दादी ने जब उसे जन्मदिन की शुभकामनाएं देते हुए अपने हाथ का बुना स्वेटर पहनाया तो खुशी के मारे वो उनके गले लिपट गई। उसकी मम्मी ने भी उसे बहुत सारा प्यार करते हुए गुलाबी रंग की फ्रिल वाली फ्राक पहना दी और उसे जल्दी से कुम्भ के मेले में जाने के लिए तैयार होने को कहा। मनु जिद करके अपना कैमरा भी साथ ले गई थी आखिर उसे भी गंगा नदी में तैरती हुई हुई मछलियों की फोटो जो खींचनी थी।

वहाँ पहुँचकर तो मनु आश्चर्यचकित रह गई। इतने सारे लोग उसने एक साथ इससे पहले कभी नहीं देखे थे। बड़ी-बड़ी जटाओं वाले साधु-संतों को देखकर तो उसने दादी का पल्लू कस के पकड़ लिया। उसने अगल-बगल देखा तो पाया कि बाकी लोग भी एक दूसरे के कपड़े का किनारा पकड़ कर रेलगाड़ी के डिब्बों की तरह चल रहे थे। पर वो गंगा नदी के दर्शन करने को इतनी उत्सुक थी कि उसने एक बार भी दादी और मम्मी के सामने अपना डर जाहिर नहीं होने दिया। खुशी-खुशी वो एक हाथ से माँ गंगा के दूध से सफेद जल के दर्शन करने को बैचेन थी। पर जब वो दादी के साथ भीड़ को चीरती हुई जब वह तट पर पहुंची तो उसका घबराहट के कारण सर घूमने लगा। चारों तरफ वहाँ कीचड और बिलकुल काला पानी था। लोग साबुन से मल-मलकर नहा रहे थे और वही अपने साथ लाये ढेरों गंदे कपड़े धो रहे थे। वो कुछ समझ पाती इससे पहले ही दादी बोली- “अब हम जल्दी से गंगा स्नान कर लेते हैं।”

“पर दादी माँ, जिस देवनदी गंगा के बारे में आपने बताया था वो हैं कहाँ? ये तो बिलकुल गन्दा कीचड जैसा पानी है और लोग यहाँ पर बदबू से बचने के लिए मुँह पर रुमाल रखे हुए हैं।”

दादी के साथ साथ वहां खड़े लोग भी ये सुनकर सन्न रह गए। पर मनु को गंगा माँ की दुर्दशा देखकर बहुत रोना आ रहा था। वो बगल में ही ढेर सारे गंदे कपडे धोते हुए एक औरत से बोली- “मेरी दादी इस जल में स्नान करने और इसे पूजा में ले जाने के लिए गाँव से

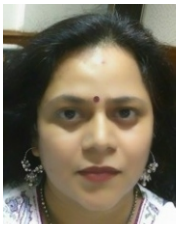

डा. मंजरी शुक्ला

आई है और आप लोग इसमें इतना साबुन डालोगे तो क्या ये शुद्ध रह पायेगा।” ये सुनकर उस औरत की आँखें शर्म से झुक गईं और उसने वापस उन कपड़ों की पोटली बनाकर एक ओर रख दी।

दादी आँखों में आँसू भरकर रुंधे गले से बोली- “वो देखो हजारों टन कूढ़ा करकट इस नदी में रोज बहाया जाता है। लोग कीचड़ में डुबकी लगा रहे हैं या गंगा में, इन्हें खुद ही नहीं पता है। सभी घरों के सड़े हुए फूल और पूजा की सामग्री इस पवित्र नदी में लाकर बहा देते समय उन्हें जरा सा भी इसके अपवित्र होने का दुःख नहीं होता।”

तब तक मनु के पैर से कुछ टकराया और वो डर के मारे चीख उठी। देखा तो एक मरा हुआ कुत्ता वहाँ बहते हुए आ गया था। मनु अब फूट फूट कर रोते हुए बोली- “दादी, क्या हम गंगा को फिर से देवनदी नहीं बना सकते?”

दादी उसे प्यार से चूमते हुए बोली- “तुम्हीं बच्चों को तो आगे बढ़कर इसे बचाना है। लोगों को बताना हैं कि फूल-पत्ती और बाकी पूजा की सामग्री कहीं गड्ढा खोदकर डालें और यहाँ कभी भी साबुन लेकर स्नान ना करें।”

मनु ये सुनकर आँसूं पोंछते हुए बोली- “दादी, मैं कल ही अपने स्कूल में प्रिंसिपल सर को यह बात बताउंगी ताकि ये बातें हर बच्चा जाने और हमारी गंगा माँ को कोई गन्दा ना करे।”

दादी की आँखों में खुशी के आँसूं मोती बनकर झिलमिला उठे और उन्होंने श्रद्धा से माँ गंगा के सामने आखें मूंदकर हाथ जोड़ लिए। तभी गंगा से एक लहर निकल तेजी से आई और मनु को सराबोर कर गई मानों उसके जन्मदिन पर उसे इस नेक काम के लिए आशीर्वाद दे रही हो। ■

शिशु गीत

१. चावल-दाल

टेस्टी-टेस्टी चावल-दाल, संग रायता करे कमाल
खा जाता मैं पूरा प्लेट, हँसता भरकर मेरा पेट

२. रोटी-सब्जी

रोटी-सब्जी अच्छी लगती, मम्मी रोज बनाती है
मैं तो एक न खा पाता, दीदी दो-दो खा जाती है

३ पूड़ी-सब्जी

पूडी-सब्जी यम्मी-यम्मी, गरम-गरम कुरमुर-कुरमुर
इसे देखते सारा गुस्सा, मेरा हो जाता झट फुर

४. लिट्टी-चोखा

बड़ा चटपटा लिट्टी-चोखा, मूली का है साथ सलाद
धनिये की चटनी भी आई, जिससे बढ़ जाता है स्वाद

५. समोसे

मोटू-पतलू का वो मोटू
बहुत समोसे खाता है
अच्छे तो मुझको भी लगते
रहा न बिल्कुल जाता है
जाओ जल्दी जाओ जी
गर्म समोसे लाओ जी

-- कुमार गौरव अजीतेन्दु

बाल कविता

फूलों से सीखा हमने मुस्कुराना
काँटो से सीखो साथ निभाना
नदियों से सीखो चलते जाना
झरनों से सीखो गुनगुनाना
चिड़िया से सीखो चहचहाना
कोयल से सीखो गीत गाना
लताओं से सीखो नत जाना
चट्टानों से सीखो डट जाना
दीपक से सीखो प्रकाश फैलाना
चींटी से सीखो कर्म करते जाना
प्रेंति के कण-कण से देखो
सीख हमें नित मिलती है
गति जीवन, जीवन गति है
अनवरत है बस चलते जाना

-- शशि शर्मा ‘खुशी’

बाल कविता

आपस में खेले आँख मिचौली, तारों के संग छुपा-छुपी
चांद के संग दौड़ा-दौड़ी, शोर मचाएँ होड मचाए
करते आपस में हाथापाई, गुड्डा गुड्डी खेल-खिलौने
सब उनके सगे संबंधी, साथ ही रोते साथ ही हँसते
साथ बैठ पढाई करतें
तू तू मैं मैं वाली बोली से
करते रहते अपनी मनमानी
सबसे प्यारा रहता बचपन
सबकी अपनी-अपनी दुनिय
बच्चो की प्यारी यह टोलिय

-- निवेदिता चतुर्वेदी

आईना बोलता है!

मनोज पाण्डेय 'होश'

'अखिलेश यादव ने बिहार को यू पी का विकास मॉडल दिखाया' एक समाचार ।

आशा करता हूँ कि सड़कों का हाल भी बताया होगा, जो कि हैं ही नहीं। ऊर्जा का हाल भी बताया होगा जो (सैफई को छोड़ कर) घंटों नहीं आती है। सिंचाई व्यवस्था का हाल बताया होगा जिसकी गवाही प्रदेश की फटी हुई धरती का सीना दे रहा है। पशुधन का हाल बताया होगा, जिनके गजरिया जैसे पशु फार्म बिल्डरों के हाथ औने-पौने में बेच दिये गये।

स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता बताते हुए अस्पतालों की सुविधाएँ बखानी होंगी, जहाँ डाक्टर नहीं, वार्ड बॉय इलाज करते हैं और डाक्टर पड़ोस के नर्सिंग होम में आपरेशन करते हैं। शहरों की साफ सफाई का हाल बताया होगा जो आँधी या बारिश से होती हैं, नगर निकायों द्वारा नहीं। शिक्षातंत्र का उल्लेख किया होगा जो पूरी तरह से नायाब है। अव्वल तो शिक्षक होंते ही नहीं और अगर हैं तो शिक्षेतर कार्यों में व्यस्त रहते हैं । बच्चे फेल न हों इसके लिए सामूहिक नकल की व्यवस्था है। व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा के लिये पेपर लीक कर दिये जाते हैं ।

बताया होगा कि किस प्रकार बेरोजगारी पर काबू पाया गया है। सरकारी नियुक्तियाँ पैसा और जाति देख कर की जाती हैं, और जो बच जाते हैं वे चोरी-चकारी, लूट-पाट और डकैती जैसे स्वरोजगार धन्दे अपना लेते हैं। सरकारी महकमों की कर्मठता और निपुणता बखानी होगी जो पैसे के आधार पर हर काम संभव करने में सक्षम हैं, वो चाहे निर्माण या खनन का टेंडर हो, या जाति प्रमाण पत्र। बड़े जतन से समझाया होगा कि किस प्रकार प्रदेश भर में निर्माण कार्यों के लिये खेती की जमीन खुर्दबुर्द की जा रही है । न रहेंगे किसान, न रहेंगी किसान संबंधित समस्याएँ ।

कानून और सुरक्षा व्यवस्था का गुणगान किया होगा जहाँ अपनी जान और माल की सुरक्षा के लोग खुद जिम्मेदार हैं, और जहाँ औसतन दो हत्याएँ और एक बलात्कार नित्य होते है पर पुलिस का क्राइम ग्राफ शून्य होता है क्योंकि शिकायतें दर्ज नहीं होतीं । नेता और जनता के परस्पर मधुर संबंधों के गुण गाए होंगे कि किस तरह जनता गाली देते नहीं थकती पर नेता के कान पर जूँ तक नहीं रेंगती। मैं जानता हूँ कि अपने विकास मॉडल को समझाने में माननीय को शब्द कम पड़ गए होंगे।

अब यदि मोदी जी पूरे देश को गुजरात बनाने में लगे हुए हैं तो अखिलेश जी भी दो चार प्रदेशों को यूपी तो बना ही सकते हैं। फिर, इसमें गलत भी क्या है ? ■

बाल कविता

नानाजी का तोहफा

पिछले रविवार को चुन्नु-मुन्नू बिट्टू के घर गए
बिट्टू की साइकिल को देख उनके सपने भर गए
चुन्नु मुन्नू से बोला, 'देखो बिट्टू की साइकिल
उस पर बैठा बिट्टू देखो लगता है एक एंजिल'
मुन्नू फट से बोला, 'बिट्टू हमको भी सैर कराओ
अपनी नई साइकिल पर बिठाकर थोड़ी दूर घुमाओ
मुझे और चुन्नु को थोड़ी देर चलाने दे दो'
बिट्टू बोला 'ना बाबा, मेरी साइकिल टूट गई तो?'
चुन्नु ने मुन्नू को एक इशारे से समझाया
'नानाजी ने देख लिया है' हौले-से बतलाया
नानाजी के साथ खेलते दोनों घर को आए
घर पर नानाजी ने उनके जन्मदिन बतलाए
नानाजी बोले, 'तुम्हारा जन्मदिवस कल ही है
और तुम्हारे जन्मदिवस का तोहफा उस पल ही है'
चुन्नु और मुन्नू खुशी से उछल कूद करने लगे
क्या होगा नानाजी का तोहफा इन्तजार करने लगे
आया जन्म दिन चुन्नु-मुन्नू ने केक काटा
सबसे पहले आकर केक नानाजी को बांटा
बचा केक चुन्नु-मुन्नू बिट्टू खाने लगे
इतनी देर में नानाजी उनका तोहफा लाने लगे
तोहफा बड़ा सा था, कुछ खड़ा-खड़ा सा था
नानाजी ने खींच के पन्नी फाड़ी एक ओर से
त्यों ही चुन्नु-मुन्नू
चिल्लाए बड़ी जोर से-
'देखो! बिट्टू लाए हैं
नानाजी हमारी साइकिल
प्यारे-प्यारे नानाजी
ही हैं हमारे एंजिल'

-- सूर्य नारायण प्रजापति

जनहित में जारी जाहिर सूचना

डा. मनोहर लाल भंडारी

(अवश्य पढ़ें, फिर न कहना कि हमें तो पता ही नहीं था।)

प्रत्येक सर्व साधारण हिन्दुस्तानी को सूचित किया जाता है कि चूंकि प्रधानमंत्री मोदी ने गुजरात में दस सालों तक मुख्यमंत्री रहते हुए तथा पिछले लगभग एक साल से भारत के प्रधानमंत्री पद पर रहते हुए कोई भी भ्रष्टाचार नहीं किया है और ईमानदारी को अपनाया है। उनकी ईमानदारी से हम सब हलाकान हैं, उस ईमानदारी के चलते कइयों के पुरस्कार खतरे में पड़ चुके हैं।

जैसा कि आप सब जानते हैं कि हम हर उस चीज से नफरत करते हैं, जिसे मोदी प्रेम करते हैं जैसे ईमानदारी, १८ घण्टों तक कामकाज, सरकारी दफ्तरों में कर्म संस्कृति, गाय, धार्मिक सद्भाव, स्वच्छता, शहीदों-सैनिकों का सम्मान, हिन्दू, सरहद की सुरक्षा, शत्रुओं के प्रति सख्त व्यवहार, मुसलमानों का वास्तविक उत्थान, भारतीय प्रतिभाओं का सम्मान और उत्थान, स्वदेशी चीजों का प्रचार-प्रसार, कुटीर उद्योग, योग, सूर्य नमस्कार, राष्ट्रभाषा हिन्दी, विदेशों में हिन्दी की प्रतिष्ठा, विदेशों में देश का सम्मान, भारत और आर.एस.एस. के प्रति विदेशियों का रुझान, आदि-अनादि-इत्यादि।

इसलिए हम सार्वजनिक तथा सार्वभौमिक रूप से यह बताए देते हैं कि इन और ऐसी तमाम बातों से हमें सख्त नफरत है और ऐसी हरकतों, बातों, वारदातों को हम सजा के काबिल मानते हैं। हम इनका विरोध करते हैं और करते रहेंगे।

हम इस सूचना के माध्यम से राष्ट्र में यत्र-तत्र रह रहे अपने समर्थकों को भी सचेत करना चाहते हैं कि इसके अलावा हमारा अब कोई भी कोई एजेण्डा नहीं है। यदि वे इनके अलावा किसी अन्य कारण या कारणों से हमसे जुड़े हुए हैं, तो वे हमारा साथ छोड़ सकते हैं। हमारे प्रति इन मुद्दों के अतिरिक्त कोई मुद्दा नहीं है, किसी तरह का मुगालता न पालें।

-- सूचना देने वाले हम सब

(अपने बारे में हम क्या बताएं? आप तो पहचान ही जाते हो।)

बाल कविता

सूरज

पूरब की खिड़की से झांका,
लाल लाल सूरज का गोला
हुआ सवेरा आंखें खोलो,
चिड़िया बोली मुर्गा बोला

सवेरा

सवेरा हुआ अब तुम जागो, बिस्तर छोडो आलस त्यागो
मुंह धोकर स्नान करो, भगवान का ध्यान करो
दूध पियो जलपान करो, शाला में मन खूब लगाना
गुरु जी से विद्या पाना, सही समय पर आना जाना
कभी न व्यर्थ समय गंवाना

-- अमृता शुक्ला

मुक्तक

प्यार तुमसे हुआ है, क्या वाकिफ नहीं हो तुम
दिल बेकरार हुआ है, क्या वाकिफ नहीं हो तुम
नींद नहीं आंखों में, रातों को भी चैन नहीं है
हमको प्यार हुआ है, क्या वाकिफ नहीं हो तुम

-- चन्द्र कांता सिवाल 'चन्द्रेश'

जय जवान-जय किसान!

शरद सुनेरी

जहाँ तक मेरी याददाश्त का प्रश्न है, शुरू से ही वह भारतीय नारी की तरह अबला रही है। किन्तु आज किसानों को सरेआम आत्महत्या करते देख मुझे अपने विद्यार्थी जीवन के कक्षा आठवीं की स्मृतियाँ गुदगुदा रही हैं जब 'भारतीय किसान' पर निबंध लिखकर मैंने अपनी कलम का लोहा मनवा लिया था और एक हजार रुपये का राज्यस्तरीय पुरस्कार जीत लिया था। उस समय इस गरीब देश के किसान की आर्थिक दशा का तो पता नहीं किन्तु किसानों के कारण मेरी अर्थ व्यवस्था में सुधार हो गया था। विद्यालय और मोहल्ले में मेरी प्रतिष्ठा में चार चाँद लग गए थे। 'आम के आम और गुठलियों के दाम' वाली कहावत पहली बार सूद समेत मेरी समझ में आयी थी।

माता-पिता को मुझमें देश के भावी कृषि मंत्री की झलक दिखाई देने लगी थी। पिता जी दिनभर में कम से कम दर्जन भर बार 'मेरे देश की धरती सोना उगले, उगले हीरे मोती' वाला गीत टेप रिकॉर्ड पर सुन लिया करते थे। मुझे याद है पुरस्कार जीतने के बाद लगातार चुनाव जीते हुए नेता की तरह मैंने पंद्रह दिनों तक लाल बहादुर शास्त्री जी की फोटो पर मालाएँ चढ़ाई थी। याने आलम ये था कि कोई मुझे नमस्कार भी करता तो मेरी बाल बुद्धि जवाब में 'जय जवान-जय किसान' कहलवा देती। समय के साथ मेरी शिक्षा और अनुभव बढ़ा। तब समझ में आया कि भारतीय अर्थ व्यवस्था भले ही कृषि पर आधारित हो किन्तु किसानों की अर्थ व्यवस्था यहां सदा डाँवाडोल रहती है। देश की अर्थ व्यवस्था की रीढ़ बनाने वाले किसान की सदा 'अरथी' ही उठती रही है।

साहित्य का छात्र और प्रेमचंद जी की कहानियों की दीवानगी से एक शिक्षा और मिली कि भविष्य में सब बनना लेकिन किसान नहीं बनेगें। वरना तुम्हारी दशा भी होरीराम, हलकू और गया जैसी हो जाएगी! 'पंच परमेश्वर' भी तुम्हारे भाग्य का फैसला नहीं कर पाएँगे! रही सही कसर उस समय 'मदर इंडिया' फिल्म के राजकुमार की दशा ने पूरी कर दी। (वैसे भी अपनी औकात नहीं थी। एक प्रायमरी मास्टर की किराये के मकान में रहने वाला भला ऐसी हिम्मत कहाँ कर सकता था। नंगा नहाये क्या और निचोड़े क्या?) एक बात मेरी समझ में नहीं आती कि किसान, कृषि का विषय है या अर्थशास्त्र का? आरंभ से ही पढ़ता-सुनता-कहता आया कि भारत कृषि प्रधान देश है क्योंकि हमारी अर्थ व्यवस्था का आधार कृषि है। आज मुझे लगता है कि सच में हमारी अर्थ व्यवस्था का आधार कृषि है क्योंकि भारत में किसान आत्महत्या करते हैं।

अब किसान राजनीति का विषय हो गए हैं। किसान भले ही भूख और कर्ज से दबकर मर जाता है किन्तु उसकी चिता से बने अंगारों पर देखिए कैसे राजनीति की रूमाली-तंदूरी रोटियाँ और नॉन सेंकी जा रही हैं। ऐसी रोटियाँ तो फाइव स्टार होटलों में दुर्लभ हैं साहब! कृषि के बारे में मेरी जानकारी भी एक आम भारतीय की तरह ही है। वर्ष में दो बार फसलें बोई जाती हैं। जिन्हें रबी और खरीफ की फसल कहा जाता है। खरीफ की फसल कभी अधिक बरसात तो कभी सूखे और कभी बाढ़ से नष्ट हो जाती हैं। रबी की फसल को ओले, पाला तथा बेमौसम की वर्षा बर्बाद कर देती है। इसके बाद किसानों की कमर टूट जाती है जिसे सरकार को मुआवजा देकर जोड़ने की कोशिश करती है।

मुआवजे से किसान को लगता है कि उसकी गर्दन ताकतवर हो गयी है इसलिए वह रस्सी के फंदे पर लटक कर देखता है कि गर्दन मजबूत या मुआवजे की रस्सी? उसका अनुमान गलत निकलता है। रस्सी अधिक मजबूत निकलती है। गर्दन फंदे में डालने के बाद किसान का भार सह लेती है। कमबख्त सरकारी वादों की तरह टूटती नहीं। बेचारा किसान! न वर्षा का सही अनुमान लगा पाता है और ना रस्सी का, लटका रह जाता है। सब कहते हैं एक और किसान ने आत्महत्या कर ली।

एक पुरानी कहावत है 'मरा हुआ हाथी सवा लाख का होता है।' मैंन उसी तर्ज पर एक आधुनिक कहावत गढ़ी- 'आत्महत्या करने वाला किसाना लाखों का होता है।' पसंद आए तो दाद दीजिएगा।

हमारे पूर्वज कहा करते थे- 'उत्तम खेती मध्यम बान, अधम चाकरी भीख निदान।' अब परिभाषा बदल गयी है- 'उत्तम भीख मध्यम बान अधम चाकरी कृषि निदान।' आज कृषि करनेवाला किसान सरेआम फाँसी झूल रहा है। व्यापारी लोग आयकर की चोरी कर अपनी तिजोरी और अधिकारियों की जेब भर रहे हैं। किसानों से वोटों की भीख माँगकर जीते हुए नेता हवाई यात्राएँ कर विदेशों के दौरे कर रहे हैं। सब 'अर्थ की माया है' या 'अर्थ ही माया है' कुछ समझ नहीं आता। कृषि कर्म सच में साहसिक काम है। शास्त्री जी ने क्या सोचकर यह नारा दिया था- 'जय जवान-जय किसान' यह तो वे ही जानते होंगे। किंतु आज हालात बदल गये हैं जवान देश की सीमाओं से ज्यादा देश के भीतर शहीद हो रहे हैं और किसान सरेआम फाँसी पर झूल रहा है!! ■

(पृष्ठ ११ का शेष)

कहानी : थोड़ी सी समझदारी

हिचकिचाहट हो रही थी अब इतने दिन हो गए थे। पति ने भी कोई बात नहीं की थी। अंजान डर भी था कि जाने सब कैसे पेश आएंगे, कैसे वापिस लौटूं! इसी कशमकश में कई दिन बीत गए। समय के साथ इन्सान में थोड़ा सा बदलाव आ जाता है, सुप्रिया की सास अपनी बातों से शर्मिंदा थी उन्हें भी लगा शायद मैने भी ज्यादा सख्ती कर दी। पर पहल कौन करे यही समस्या थी, पति भी गुस्से से जिद्द पर थे। सुप्रिया भी घर वापिस जाना चाहती थी पर खुलकर कह नहीं पा रही थी। पर सुप्रिया के मम्मी पापा ने थोड़ी-सी समझदारी दिखाते हुए ससुराल में जाकर बात करना उचित समझा।

वहाँ सास और ससुर जी भी सुप्रिया के बिना उदास हो गए थे, पर बेटे की जिद्द के आगे बेबस थे। उदास तो पति भी थे, पर झूठे अहम को छोड़ नहीं पा रहे थे। जैसे ही सुप्रिया अपने मम्मी पापा के साथ घर पहुंची तो सास-ससुर जी की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। सास ने तो सुप्रिया को गले से लगाकर बच्चों की तरह रोना शुरु कर दिया कि तुम्हें पता नहीं चला हम कितने उदास हो गए थे अपने घर आने में इतनी देर लगा दी। सुप्रिया भी उदास थी और माफी मांगने लगी कि मेरी वजह से आप का दिल दुखा। पर सास को तो सारी बातें, गलतियां बेमाने लग रही थीं। वो तो उसके आने की खुशी में खो सी गई थी। पति भी सुप्रिया को देखकर मंद-मंद मुस्का रहे थे और झूठी जिद्द उस पर हावी नहीं हो पा रही थी। सब अपने आप में इतने खुश हो गए थे कि सुप्रिया के मम्मी पापा को कुछ बोलने की जरूरत नहीं पड़ी। छोटे-छोटे गिले शिकवों के बाद सुप्रिया अपने ससुराल में अपनी जगह वापिस पा चुकी थी और घरवालों की छोटी सी समझदारी की वजह से दो घर बर्बाद होने से बच गए थे ! ■

(पृष्ठ १६ का शेष)

गांधी, मालवीय...

हिन्दू हैं, लगभग वे सभी (६८%) हिन्दू से ही धर्मान्तरित हैं। हिन्दुस्तान में रहनेवाले सभी लोगों के पुरखे एक ही थे और संस्कृति, सभ्यता भी एक ही थी। हालांकि इस तथ्य को गांधी, जिन्ना और इकबाल भी जानते थे, लेकिन सार्वजनिक रूप से इसे स्वीकार करने या उद्घोषणा करने से अपने को दूर रखते थे।

डा. हेडगेवार ने साहस और पूर्ण दृढ़ता से यह बात राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माध्यम से देश और विश्व के सामने रखी। उनके अनुसार भारत में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति हिन्दू है, जो इस देश को अपनी मातृभूमि, भारत माता को अपनी माता को मानता है तथा इस मातृभूमि को देवभूमि मानते हुए इसे परम वैभव के शिखर पर पहुंचाने के लिए तन, मन और धन से पूर्णरूपेण समर्पित हो। हिन्दुत्व में घुस आई जातिवाद, छूआछूत, भाषावाद, प्रान्तवाद, संप्रदायवाद आदि बुराइयों को दूर करते हुए एक शक्तिशाली हिन्दू संगठन ही उनका अभीष्ट था। उन्होंने जो बिरवा १९२५ में लगाया था, आज वटवृक्ष बनकर विश्व के सबसे बड़े स्वयंसेवी संगठन के रूप में खड़ा है। इस संगठन पर आजादी के पहले अंग्रेजों की और उसके बाद कांग्रेस की वक्रदृष्टि हमेशा रही। कांग्रेसी शासन ने तरह-तरह के भ्रामक आरोप लगाकर इसे तीन बार प्रतिबंधित किया, परन्तु, हर बार यह संगठन कुन्दन की भाँति पहले से ज्यादा निखरकर सामने आया। आज यह भारत ही नहीं विश्व के हिन्दुओं की आशाओं का एकमात्र केन्द्र बन गया है। देश को दो अतुलनीय प्रधान मंत्री प्रदान करने के कारण इसकी स्वीकार्यता विश्वव्यापी हो गई है। ■

यह भारत और अफ्रीका की शताब्दी है : प्रधानमंत्री मोदी

नई दिल्ली। भारत-अफ्रीका शिखर सम्मेलन में अफ्रीकी राष्ट्रध्यक्षों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि 'यह भारत और अफ्रीका की सदी है। भारत और अफ्रीका ने हमेशा एक दूसरे को आगे बढ़ाया है। दोनों देशों की संस्कृति सबसे पुरानी है। हमें अपने संबंधों को और मजबूत बनाने की जरूरत है।'

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत-अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि '१.२५ अरब भारतीयों और १.२५ अरब अफ्रीकियों के दिलों की धड़कन एक है। यह सिर्फ भारत और अफ्रीका की मुलाकात नहीं है। आज एक-तिहाई मानवजाति के सपने एक छत के नीचे इकट्ठा हुए हैं।'

प्रधानमंत्री ने कहा, 'भारत-अफ्रीका के बीच पुराने संबंध हैं। हमने साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ाई लड़ी है। भारत-अफ्रीका की दो तिहाई आबादी युवा है।' पीएम ने आगे कहा, 'सूरज डूबने के साथ भारत और अफ्रीका के करोड़ों घर अंधेरे में डूब जाते हैं, हमें उन्हें रोशन करना है।' पीएम ने अफ्रीकी राष्ट्राध्यक्षों से आपसी सहयोग और तकनीक एवं कृषि में सहयोग बढ़ाने पर बल दिया। सम्मेलन में ५४ अफ्रीकी देशों के राष्ट्राध्यक्ष शामिल हुए। प्रधानमंत्री मोदी ने १६ अफ्रीकी देशों के राष्ट्राध्यक्षों से द्विपक्षीय बातचीत भी की। इन बैठकों में अफ्रीकी नेताओं से ऊर्जा स्वास्थ्य और व्यापार से संबधित बात तो हुई ही, लेकिन सबसे अहम बात ये रही कि प्रधानमंत्री ने अफ्रीकी देशों के प्रमुखों से कहा कि संयुक्त राष्ट्र में बदलाव के लिए उनका समर्थन चाहिए। अफ्रीकी के आतंकवाद से पीड़ित देशों को भारत ने आश्वासन दिया है कि आतंकवाद के खात्मे के लिए भारत उनकी हर संभव सहायता करेगा। ■

'छविरत्न' की पुण्य स्मृति में बही काव्यधारा

आगरा। आलोक सभा एवं राष्ट्रीय कवि संगम के संयुक्त तत्वावधान में सत्य नारायण गोयल 'छविरत्न' की चतुर्थ पुण्य स्मृति को समर्पित कवि गोष्ठी का आयोजन २६ अक्तूबर को भगवान टॉकीज चौराहा स्थित होटल आशादीप में किया गया। छविरत्न के चित्र पर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के पूर्व कार्याकारी उपाध्यक्ष एवं विख्यात गीतकार सोम ठाकुर ने माल्यार्पण कर एवं समक्ष दीप जलाकर समारोह का विधिवत शुभारम्भ किया। राष्ट्रीय कवि संगम के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगदीश मित्तल (दिल्ली), विजय गोयल, डॉ मीनाक्षी कहकशां (गाजियाबाद), कवि सुशील सरित, आलोक सभा के सचिव संजय गोयल (स्पीड कलर) व संयोजक डॉ रवि अरोड़ा शुभारंभ के समय साथ रहे। गोष्ठी में आगरा एवं आगरा के बाहर से आये ३८ कवियों ने हास्य, वीर और श्रृंगार रस की त्रिवेणी प्रवाहित की। वाह-वाह एंव करतल ध्वनियों से सभागार रह-रहकर गूंजता रहा। संचालन गया प्रसाद मौर्य 'रजत' ने किया। अतिथियों का स्वागत सीए सत्य प्रकाश मंगल (दिल्ली), डॉ त्रिमोहन तरल, डॉ राजेन्द्र मिलन, पदम गौतम, डॉ यशोधरा, एवं श्रुति सिन्हा ने किया। डॉ डिम्पल शर्मा ने माँ शारदे की वन्दना की। ■

कार्टून -- काजल कुमार

'काव्या' की गोष्ठी सम्पन्न

लखनऊ। ४ अक्टूबर, दिन रविवार को मोती महल लान, लखनऊ पुस्तक मेला में लखनऊ के साहित्यिक 'काव्या' समूह की कवि गोष्ठी कैप्टेन राखी अग्रवाल ने सरस्वती वंदना से शुरू की। ब्रह्मा कुमारी स्नेह लता, प्रख्यात कवि ड सुरेश, एपवा की ताहिरा हसन, विख्यात कहानीकार रजनीगुप्त, काव्या समूह की संचालक निवेदिता श्रीवास्तव ने गोष्ठी को सम्बोधित किया।

इलाहाबाद से आयी कवियित्री सरस दरबारी ने 'एक अंतराल के बाद', नवगीत लेखिका संध्या सिंह ने 'दुविधाओं की पगडंडी पर', आभा खरे ने क्षणिकाएं, साजिदा सबा ने गजल 'कभी वक्त मिले तो', चुलबुली कवियित्री विजय पुष्पम ने बाल गीत 'हे बादल', निवेदिता श्रीवास्तव ने 'पैदा तो हो जाती हैं पर जिन्दा नहीं बचती लड़कियाँ' सुनाया। गोष्ठी में विजय राज, प्रदीप कुशवाहा, मनोज शुक्ल, कुंती मुखर्जी, ब्रजेश नीरज, मनोज श्रीवास्तव, अजीत शेखर, शैलेन्द्र शर्मा, योगेश पाण्डेय, अलका प्रमोद आदि ने भी काव्य पाठ किया। ■

जय विजय मासिक

कार्यालय– ४/३, अक्षय निवास, २, सरोजिनी नायडू मार्ग, लखनऊ - २२६००१ (उ प्र)

मो 09919997596, 08004664748, **ई-मेल :** jayvijaymail@gmail.com

वेबसाइट : www.jayvijay.co, www.jayvijay.co.in

सम्पादक- विजय कुमार सिंघल

सहसम्पादक- विभा रानी श्रीवास्तव, अरविंद कुमार साहू, रमा शर्मा (जापान)

'जय विजय' का नेट संस्करण ई-मेल से निःशुल्क भेजा जाता है। रचनाओं में व्यक्त किये गये विचार सम्बंधित रचनाकारों के हैं। उनसे सम्पादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।